





## जापान के कृषि मंत्री ने चुनावी हार के बाद की इस्तीफे की घोषणा

**एजेंसी टोक्यो।** जापान के कृषि, वानिकी और मत्स्य पालन मंत्री यासुहिरो ओजोता ने रविवार को निचले सदन के चुनावों में अपनी हार के बाद इस्तीफा देने की घोषणा की है। श्री ओजोता एकल-सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्र में विपक्षी प्रत्याशी से हार गए और पार्टी सुविधियों के माध्यम से पुनः चुनाव जीतने में भी विफल रहे। जापानी समाचार एजेंसी 'क्योदो' ने श्री ओजोता का हवाला देते हुए कहा, सांसदीय हार के बाद, मैं अपने मंत्री पद के कर्तव्यों का पालन नहीं कर पाऊंगा। उन्होंने अपने इस्तीफे की तिथि नहीं बतायी है। लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) ने चुनावों में 191 सीटें हासिल कीं, जबकि कोमिटो पार्टी ने 24 सीटें जीतीं। विपक्षी दलों और निर्दलीय प्रत्याशियों ने सामूहिक रूप से निचले सदन की आधी से ज्यादा सीटें हासिल कीं और कुल 465 में से 250 सीटों पर जीत हासिल की है। एलडीपी और कोमिटो के सत्तारूढ़ गठबंधन के पास अब 215 सीटें हैं, जो 233 सीटों वाले बहुमत से भी कम है। चुनावों से पहले गठबंधन के पास 279 सीटें थीं।

## गाजा में इजरायली हमलों में 43,000 हजार से ज्यादा लोगों की मौत, 1,01,110 घायल

**गाजा।** गाजा पट्टी पर जारी इजरायली हमलों में फिलिस्तीनीयों की मौत का आंकड़ा 43,000 से अधिक हो गया। वहीं 1,01,110 लोग इन हमलों की वजह से घायल हुए हैं। स्वास्थ्य अधिकारियों ने सोमवार को एक बयान में कहा कि पिछले 48 घंटों के दौरान, इजरायली सेना के हमलों में 96 लोग मारे गए और 277 अन्य घायल हो गए। बयान में कहा गया कि कई पीड़ित अभी भी मलबे के नीचे हैं और एम्बुलेंस तथा नागरिक सुरक्षा दल उन तक नहीं पहुंच पाए। समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, इजरायल रक्षा बलों (आईडीएफ) ने एक बयान में कहा कि उसके सैनिकों ने गाजा में टारगेटेड छापेमारी जारी रखी। इससे पहले, आईडीएफ ने दावा किया कि उसने गाजा के जवाबदारी में कमाल अदवान अस्पताल में एक ऑपरेशन के दौरान लगभग 100 आतंकवादियों को फरार कराया। आईडीएफ ने कहा कि यह ऑपरेशन खुफिया जानकारी के बाद किया गया, जिसमें संकेत था कि आतंकवादियों ने अस्पताल के अंदर खुद को छिपा लिया है। आईडीएफ के मुताबिक छापेमारी का उद्देश्य आतंकवादी गतिविधियों को नाकाम करना और आतंकवादियों को पकड़ना था। इस बीच, अस्पताल के निदेशक हुसाम अबू सफिया ने एक बयान में अस्पताल और उसके मरीजों, कर्मचारियों को आगे के इजरायली हमलों से बचाने के लिए अलर्ट किया। उन्होंने बताया कि अस्पताल के 31 कर्मचारियों को या तो पकड़ लिया गया या गिरफ्तार कर लिया गया।

## नेपाल के प्रधानमंत्री ओली दो दिसंबर से चीन के दौरे पर, बीआरआई समझौते पर हस्ताक्षर की तैयारी

**काठमांडू।** नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली 02 दिसंबर से चीन के दौरे पर जाएंगे। इस दौरान चीन की महत्वकांक्षी परियोजना बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) के कार्यान्वयन के समझौते पर होने की प्रबल संभावना है। नेपाल में चीन के राजदूत छन सांग ने आज प्रधानमंत्री ओली से उनके सरकारी आवास पर मुलाकात की और चीन की तरफ से उनके औपचारिक निमंत्रण दिया। प्रधानमंत्री के प्रमुख सलाहकार विष्णु रिमाल ने कहा कि 02 दिसंबर से चीन दौरे की तारीख तय हुई है, जो एक सप्ताह का होगा। इस दौरान प्रधानमंत्री ओली बीजिंग में चीन के राष्ट्रपति सी जिनपिंग से द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। इसके अलावा प्रधानमंत्री के कई और कार्यक्रम तय हैं। रिमाल ने बताया कि व्यापार, परिवहन और चीन के निवेश के अलावा इस बार बीआरआई के फ्रेमवर्क एग्रीमेंट पर भी हस्ताक्षर किया जाना है। इसके लिए इस समझौते के ड्राफ्ट पर अंतिम चरण में काम हो रहा है। चीन के करूंग से काठमांडू तक की रेललाइन निर्माण को लेकर भी महत्वपूर्ण फैसला होने की उम्मीद है। पोखरा अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट निर्माण के लिए चीन ने जो महंगी ब्याज दर पर 2.6 मिलियन डॉलर का ऋण दिया था उसको चीन सरकार अनुदान में बदलने को तैयार है।

## ब्राजील की चीन के बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव परियोजना से दूर रहने की घोषणा

**ब्रासीलिया।** ब्राजील के ताजा रुख से चीन को जोरदार झटका लगा है। ब्राजील ने आज चीन की महत्वपूर्ण बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव (बीआरआई) परियोजना में शामिल होने से इनकार कर दिया। राष्ट्रपति लूला डा सिल्वेरा के अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेष सलाहकार सेल्सो एमोरिम ने कहा कि ब्राजील ने बीजिंग को अर्बों डॉलर की इस पहल में शामिल नहीं होने का निर्णय लिया है। गौरतलब है कि भारत पहले से ही इस परियोजना से दूरी बनाए हुए है। अब ब्राजील यह घोषणा कर ब्रिक्स समूह में भारत के बाद दूसरा देश बन गया है। राष्ट्रपति लूला के सलाहकार एमोरिम ने ब्राजील के प्रमुख अखबार 'ओ ग्लोबो' से कहा कि ब्राजील सरकार इस परियोजना के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए बिना चीन के साथ संबंधों को नए स्तर पर ले जाना चाहती है। अखबार के अनुसार एमोरिम ने यह बयान तब दिया, जब उनसे पूछा गया कि क्या ब्राजील चीन की बीआरआई परियोजना में निवेश करेगा। उन्होंने कहा कि मुख्य मसला तालमेल का है। यह कोई बीमा पॉलिसी नहीं है, जिस पर नीचे हस्ताक्षर किया जाए।

## इजरायली संसद ने यूएनआरडब्ल्यू पर प्रतिबंध लगाने वाले विधेयकों को मंजूरी

**एजेंसी टोक्यो।** इजरायल की संसद ने अपने देश की सीमा फिलिस्तीन शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र राहत और पुनर्निर्माण एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यू) की गतिविधियों पर रोक लगाने संबंधी दो विधेयकों को मंजूरी पारित किये हैं। इजरायली संसद ने 191 सीटों वाले बहुमत से इजरायली संसद की विदेशी और रक्षा मामलों की समिति ने छह अक्टूबर को यूएनआरडब्ल्यू पर देश में काम करने से रोकने के प्रावधान वाले विधेयक के मसौदे को मंजूरी दी थी। इजरायल आरोप लगा रहा है कि यूएनआरडब्ल्यू उग्रवादी फिलिस्तीनियों के संगठन हमास की मदद कर रही है। 'द जेरुसलम पोस्ट' ने बताया, इजरायली संसद ने यूएनआरडब्ल्यू पर प्रतिबंध लगाने वाले विधेयकों को मंजूरी दे दी है, इसके पक्ष में 92 और विपक्ष में 10 वोट पड़े। इन विधेयकों



शामिल हैं। अक्टूबर के शुरूआत में संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने भी इजरायल के प्रधानमंत्री बेजामिन नेतन्याहू को एक नोट भेजकर यूएनआरडब्ल्यू के कार्य पर प्रतिबंध लगाने वाले विधेयक के बारे में गहरी चिंता व्यक्त की थी। यह

विधेयक यूएनआरडब्ल्यू की गतिविधियों और सेवाओं को इजरायली जमीन पर पूरी तरह से प्रतिबंधित कर देगा और इसके कर्मचारियों को कानूनी प्रतिरक्षा को समाप्त कर देगा। इसके परिणामस्वरूप, यूएनआरडब्ल्यू को इजरायल और फिलिस्तीनी क्षेत्रों में काम करने से रोका जा सकता है। इजरायल गाजा और वेस्ट बैंक दोनों की पहुंच को नियंत्रित करता है।

## गणभवन को हसीना के कुशासन का संग्रहालय बनाया जाएगा: यूनुस

**वांशिंगटन।** पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को सत्ता से बेदखल किये जाने के दो महीने से अधिक समय बाद मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली बंगलादेश की अंतरिम सरकार ने कहा है कि वह उनके पारिवारिक निवास, 'गणभवन' (पीपुल्स हाउस) को उनके 'कुशासन' का प्रतिनिधित्व करने वाले संग्रहालय में बदलने की योजना बना रही है। श्री यूनुस ने अपने कैबिनेट के सलाहकारों के साथ सोमवार को गणभवन का दौरा किया, और घोषणा की कि निवास को संग्रहालय में बदलना देश में अवांभी-लीग और सुश्री हसीना के 15 वर्षों के 'कुशासन' के लिए एक स्मारक के रूप में काम करेगा।

देश के दो सैन्य नेताओं राष्ट्रपति जियाउर रहमान और हुसैन मोहम्मद इरशाद ने कोर्ट मार्शल कार्यालय के



रूप में किया था। सुश्री हसीना ने 1996 में अपनी पहली सरकार के गठन के बाद से ही इस इमारत का इस्तेमाल अपने निवास के रूप में किया है और पांच अस्त को विद्यार्थियों के नेतृत्व में हुए विरोध प्रदर्शनों के बाद अजमाक सत्ता से बेदखल किये जाने तक वे इसी इमारत का इस्तेमाल करती रहीं। सुश्री हसीना के डटए जाने के बाद गणभवन वैश्विक समाचारों का केंद्र बन गया,

जब हजारों की संख्या में प्रदर्शनकारी परिसर में घुस आए। प्रदर्शनकारियों को उनके विस्तर और सोफे पर लेटे हुए, उनके किचन-गार्डन के तालाब से बतखें और मछलियाँ लेकर जाते हुए और यहाँ तक कि अपदस्थ प्रधानमंत्री के अंडरगार्मेंट्स को दिखाते हुए देखा गया था। सुश्री हसीना (77) थीं उनके निवास पर पहुंचने से पहले भारत आ गयी थी। सोमोयुज की रिपोर्ट के अनुसार, श्री यूनुस ने कहा, 'संग्रहालय में कुशासन और लोगों के गुस्से की यादें हनी चाहिए, जिसने सुश्री शेख हसीना को सत्ता से बाहर कर दिया।'

## ऑस्ट्रेलिया ने यूएनआरडब्ल्यू पर इजरायली प्रतिबंधों का विरोध किया

**एजेंसी कैनबरा।** ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने फिलिस्तीनी शरणार्थियों के लिए काम कर रही संयुक्त राष्ट्र राहत एजेंसी 'यूएनआरडब्ल्यू' के काम को प्रतिबंधित करने के इजरायल के कदम की निंदा की है। विदेश मंत्री पेनी वॉंग ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया इजरायल की संसद 'नेसेट' की ओर से पारित कानूनों का विरोध करता है, जिसमें यूएनआरडब्ल्यू को एक आतंकवादी संगठन के रूप में नामित किया है और इसे 90 दिनों के अंदर देश से प्रतिबंधित कर दिया गया है। सुश्री वॉंग ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किए गए एक बयान में कहा, 'यूएनआरडब्ल्यू जीवन-रक्षक



कार्य करता है। ऑस्ट्रेलिया यूएनआरडब्ल्यू के काम को गंभीर रूप से प्रतिबंधित करने के इजरायली नेसेट के फैसले का विरोध करता है। ऑस्ट्रेलिया रिविवा को कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, जापान, दक्षिण कोरिया और ब्रिटेन जैसे उन देशों में शामिल हो गया,

जिन्होंने इजरायल के नेसेट से इस कानून को आगे नहीं बढ़ाने का आग्रह किया है। संयुक्त बयान में कहा गया कि, यूएनआरडब्ल्यू के कार्यों के बिना, गाजा, पूर्वी यरुशलम, वेस्ट बैंक और व्यापक क्षेत्र में फिलिस्तीनी शरणार्थियों को आवश्यक एवं जीवन रक्षक मानवीय सहायता को पहुंच अगम असंभव नहीं तो गंभीर रूप से प्रभावित होगा। सुश्री वॉंग ने आज गाजा में बड़े पैमाने पर बुनियादी सेवाओं एवं मानवीय सहायता के प्रावधान को सक्षम बनाने के लिए इजरायल से अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (आईसीजे) के बाध्यकारी आदेशों का पालन करने के ऑस्ट्रेलिया के आह्वान को दोहराया।

## हिजबुल्लाह को मिला नया प्रमुख, नईम कासिम को चुना गया नेता

**एजेंसी तेहरान।** ईरान समर्थित हिजबुल्लाह ने अपने नए प्रमुख की घोषणा कर दी है। नईम कासिम संगठन की कमान संभालेंगे। बता दें कि 71 वर्षीय नईम कासिम 1991 से लेबनानी गुप के उप महासचिव के रूप में काम कर रहा है। हिजबुल्लाह को कई देशों ने आतंकी संगठन घोषित कर रखा है। नईम कासिम, हसन नसरल्लाह की जगह लेंगे जिनकी मौत पिछले महीने इजरायली बमबारी में हुई थी। इससे पहले इजरायल ने 22 अक्टूबर को यह घोषणा की थी कि उसने तीन सप्ताह पहले बेरुत में नसरल्लाह के उत्तराधिकारी माने जा रहे हाशेम सफीदीन को भी मार गिराया था। साल 1982 में हिजबुल्लाह के संस्थापकों में से एक कासिम को सोमवार को समूह के सात सदस्यों वाले केंद्रीय निर्णय लेने वाले निकाय शूरा परिषद की बैठक के बाद महासचिव चुना गया। परिषद ने अपने

फैसले की घोषणा करते हुए कहा कि हिजबुल्लाह अपने सिद्धांतों, लक्ष्यों और मार्ग पर कायम रहेगा, ताकि प्रतिरोध की लो को जीवित रखा जा सके और



अंतिम विजय तक उसका झंडा ऊंचा रहे। साल 1953 में दक्षिणी लेबनान में जन्मे कासिम 1991 में संगठन के उप महासचिव बने और तब से हिजबुल्लाह के सेकंड-इन-कमांड के रूप में काम करते रहे। वहीं, नसरल्लाह की मृत्यु के बाद कासिम तीन टेलीविजन भाषणों में दिखाई दिए, जिसमें उन्होंने अपने अनुयायियों को

आश्वासन दिया कि हिजबुल्लाह जवाबी कार्रवाई करेगा, भले ही पिछले कुछ हफ्तों में उसे नेतृत्व संबंधी गंभीर संकेत का सामना करना पड़ा हो।

कासिम ने पिछले महीने टिप्पणी की थी, मुझे पूर्ण विश्वास है कि दुश्मन के ये हमले प्रतिरोध को कमजोर नहीं करेंगे और हम निश्चित रूप से जीतेंगे। यह बरेकत के दक्षिणी उपनगरों में इजरायली वायु सेना के हमले में नसरल्लाह की हत्या के बाद हिजबुल्लाह के किसी वरिष्ठ अधिकारी का पहला भाषण था।

## म्यांमार में खाई में गिरी बस, 7 लोगों की मौत

**बेरुत।** म्यांमार के मांडले में एक भीषण सड़क हादसा हुआ। यहाँ एक मिनी बस गहरी खाई में गिर गई, इस हादसे में सात लोगों की मौत हो गई है। म्यांमार रेस्क्यू ऑर्गेनाइजेशन (मांडले) के एक अधिकारी ने हादसे की जानकारी देते हुए बताया कि सोमवार को म्यांमार में एक मिनीबस गहरी खाई में गिरने से 7 लोगों की मौत हो गई और 17 अन्य घायल हो गए हैं। अधिकारी ने हादसे के बारे में बताया, दुर्घटना सोमवार को सुबह करीब 11:30 बजे शान राज्य के यवांगन कस्बे में हुई। घटना की जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची टीम ने रिसर्चों और क्रेन की मदद से बचाव अभियान चलाया। रेस्क्यू ऑर्गेनाइजेशन ने बताया कि मिनी बस म्यांमार के हेहो कस्बे से लौट रही थी। सभी यात्री एक धार्मिक अनुष्ठान में शामिल होने के बाद बस में सवार होकर मांडले की ओर जा रहे थे। इसी दौरान ये हादसा हुआ।

समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, हादसे के समय बस में लगभग 28 लोग सवार थे। जिसमें सात लोगों की मौत हुई, इसके अलावा कई गंभीर रूप से घायल हुए



हैं, जिनमें से सात की हालत गंभीर है। अधिकारी ने बताया कि स्थानीय बकाव संगठन और अग्निशमन सेवा कर्मियों ने रेस्क्यू ऑपरेशन में हिस्सा लिया। इसके बाद उन्होंने घायलों को पास के अस्पताल में भर्ती कराया है।

## दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति और जेलेँस्की ने उत्तर कोरिया-रूस सैन्य सहयोग की कड़ी निंदा की

**एजेंसी रियाल।** दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यूं सुक येओल और यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेँस्की ने रूस में उत्तर कोरियाई सैनिकों की तैनाती की कड़ी निंदा की। योनाहाप समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, यूं और जेलेँस्की ने फोन पर बातचीत की। राष्ट्रपति कार्यालय ने एक विज्ञापन में कहा, दोनों नेताओं ने उत्तर कोरिया और रूस के बीच हथियारों के हस्तांतरण और सैन्य तैनाती सहित अशुभ सैन्य सहयोग को कड़े शब्दों में निंदा की। उन्होंने संयुक्त प्रतिक्रिया के लिए रणनीतिक परिामर्श जारी रखने पर सहमति व्यक्त की। यूं ने कहा कि दक्षिण कोरिया प्योण्यांग और मारसको के बीच गहाते सैन्य संबंधों को नजरअंदाज



नहीं करेगा। उन्होंने बढ़ते सुरक्षा खतरों के जवाब में 'चरणबद्ध कदम' उठाने की कसम खाई। यूं ने कहा, 'उत्तर कोरिया, रूस को सैन्य सहायता प्रदान करने के अलावा, वह विशेष बलों की तैनाती करके अभूतपूर्व और खतरनाक कदम उठा रहा है।' यूं ने कहा, 'उत्तर कोरिया, रूस को सैन्य सहायता प्रदान

करने के अलावा, वह विशेष बलों की तैनाती करके अभूतपूर्व और खतरनाक कदम उठा रहा है।' उन्होंने दक्षिण कोरिया और यूक्रेन के बीच घनिष्ठ संघर्ष और समन्वित प्रतिक्रिया की जरूरत पर बल दिया। यूं ने इस बात पर भी चिंता व्यक्त की कि मारसको, सेना की तैनाती के बदले में प्योण्यांग को संवेदनशील सैन्य तकनीक दे सकता है और उत्तर कोरियाई सेना यूक्रेन संघर्ष से युद्ध का अनुभव प्राप्त कर सकती है। दक्षिण कोरिया के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा जोखिम साबित हो सकता है। जेलेँस्की ने दक्षिण कोरिया के निरंतर समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया, जिसमें कीव में एक सरकारी प्रतिनिधिमंडल भेजने का निर्णय भी शामिल है।

## पाकिस्तान में फ्रंटियर कोर के दो जवानों की गोली मारकर हत्या

**एजेंसी इस्लामाबाद।** पाकिस्तान के लोअर कुर्रम जिले में अज्ञात हमलावरों के साथ गोलीबारी में फ्रंटियर कोर (एफसी) के दो जवान मारे गए हैं। अज्ञात हमलावरों ने सोमवार को चार खेल इलाके में टॉल स्काउट्स पर गोलीबारी की जिसमें दो जवान मारे गये। मीडिया रिपोर्टों में यह जानकारी दी गई। 'डॉन' की जारी रिपोर्ट के अनुसार, यह हमला ऐसे समय में किया गया जब जिले में अनिश्चित स्थिति के कारण पाँच लाख निवासियों को दैनिक वस्तुओं की भारी कमी का सामना करना पड़ रहा है, कई सड़कें बंद हैं और सार्वजनिक परिवहन सड़कों से नकारा है। पुलिस ने कहा कि एफसी कर्मियों को लोगों की सुरक्षा के लिए

तैनात किया गया था। उसी दौरान, कुछ अज्ञात हथियारबंद लोगों ने उन पर हमला किया। हमले में गंभीर रूप



से घायल दो एफसी कर्मियों को टाल के संयुक्त सैन्य अस्पताल (सीएमएच) में ले जाया गया, जहाँ

दोनों की मौत हो गयी। पाराचिनार के जिला मुख्यालय अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. सैयद मीर



हसन जान ने कहा कि जिन मरीजों का डीएचक्यू में इलाज नहीं हो पाया, उन्हें दूसरे अस्पतालों में स्थानांतरित

किया जाना था, लेकिन सड़कें बंद होने के कारण उन्हें ले जाया नहीं जा सका। निवासियों ने कहा कि बंद करने के बजाय सड़कों को सुरक्षित किया जाना चाहिए। उन्होंने शिकायत की कि बंद सड़कों के कारण बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, किसानों ने शिकायत की कि सड़कें बंद होने के कारण जिले में समय पर बीज नहीं पहुंच पा रहे हैं, इसके अलावा, क्षेत्र में उर्वरकों की भी भारी कमी है। इसके अलावा, व्यापारियों और माल ट्रांसपोर्टर्स ने सड़कों को तुरंत खोलने की मांग की। उन्होंने कहा कि अफगानिस्तान के साथ खारलाची सीमा भी बंद कर दी गई है। क्षेत्र में स्थायी शांति के लिए मामों को सुरक्षित किया जाना चाहिए।

## चीन ने अंतरिक्ष स्टेशन मिशन के लिए शेनझोउ-19 चालक दल का खुलासा किया

**एजेंसी जिउझान।** चीनी अंतरिक्ष यात्री काई शुजे, सोंग लिंगडोंग और वांग हाओजे शेनझोउ-19 चालक दल वाले अंतरिक्ष उड़ान मिशन में शामिल होंगे और काई शुजे इस टीम के कमांडर होंगे। चीन की चाइना मैड स्पेस एजेंसी ने एक संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी दी। एजेंसी के प्रवक्ता लिन शिकियांग ने बताया कि शेनझोउ-19 चालक दल वाले इस अंतरिक्ष यान का बुधवार तड़के चार बजकर 27 मिनट (बीजिंग समयानुसार) पर उत्तर पश्चिमी चीन के जिउझान उपग्रह प्रक्षेपण केंद्र से प्रक्षेपण किया जाएगा। शुजे ने 2022 में शेनझोउ-14 अंतरिक्ष मिशन पूरा किया था। चीनी अंतरिक्ष यात्रियों के तीसरे बैच में से सोंग और वांग

अंतरिक्ष के लिए नये हैं। इन दोनों का जन्म 1990 के दशक में हुआ था। सोंग अंतरिक्ष यात्री के रूप में चुने जाने



से पहले वायु सेना के एक पूर्व पायलट थे और वांग ने पहले चीन एयरोस्पेस सॉल्ट एंड टेक्नोलॉजी कॉर्पोरेशन के अंतरगत एकेडमी ऑफ एयरोस्पेस प्रोपल्शन टेक्नोलॉजी में एक वरिष्ठ इंजीनियर के रूप में कार्य किया है।

एजेंसी ने कहा कि वांग वर्तमान में चीन की एकमात्र महिला अंतरिक्ष उड़ान इंजीनियर हैं और चालक दल के

अंतरिक्ष यान मिशन पर जाने वाली तीसरी चीनी महिला बनेंगी। शेनझोउ-19 अंतरिक्ष यात्री शेनझोउ-18 तिकड़ी के साथ कक्षा में चक्कर पूरा करेंगे और लगभग छह महीने तक अंतरिक्ष स्टेशन पर रहेंगे।

**कौमी पत्रिका**  
**संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर**  
 स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक,  
 गुरचरन सिंह बब्बर, नं. कौमी  
 पत्रिका फ्रंटियर प्रेस, सेक्टर  
 ए-4/ए-144 इंडस्ट्रियल एरिया  
 ट्रोनिंका सिटी, लोनी (गजियाबाद),  
 उत्तर प्रदेश, भारत का प्रकाशक  
 प्रकाशित किया।

**Corporate Office:**  
 5, Bahadurshah Zafar Marg  
 ITO, New Delhi-110002  
 फोन : 011-41509689, 23315814  
 मोबाइल नंबर : 9312262300

**E-mail address:**  
 qpatrika@gmail.com  
 Website: www.qaunipatrika.in

**R.N.I. No.**  
**UP-HIN/2007/21472**

**Legal Advisors:**  
 Advocate Mohd. Sajid  
 Advocate Dr. A.P.Singh  
 Advocate Manish Sharma  
 Advocate Pooja Bhaskar Sharma

## किम जोंग उन की बढ़ाई गई सुरक्षा, हत्या के प्रयास की आशंका !

**एजेंसी सोल।** उत्तर कोरिया के लीडर किम जोंग-उन की संभावित हत्या के प्रयास की आशंका के चलते सुरक्षा बढ़ा दी गई है। दक्षिण कोरिया की खुफिया एजेंसी ने सांसदों को यह जानकारी दी। सत्तारूढ़ पीपुल्स पावर पार्टी के प्रतिनिधि ली सेओंग-क्रेन और मुख्य विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रतिनिधि पक-सन्-वोन के अनुसार, नेशनल इंटील्लिजेंस सर्विस (एनआईएस) ने संसदीय लेखा परीक्षा सत्र के दौरान यह जानकारी दी। एनआईएस ने सांसदों को बताया

कि कम्युनिकेशन जामिंग क्लिकल और ड्रोन डिटेक्शन इक्रिपमेंट के सुरक्षा का स्तर बढ़ा दिया गया है। एनआईएस ने यह भी कहा कि



जिएर किम की हत्या के संभावित प्रयासों के कारण उनके आसपास

इस वर्ष किम की सार्वजनिक गतिविधियां 110 गुना बढ़ गईं, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 60 प्रतिशत अधिक है। किम की बेटी, जिसे 'जु-ए' के नाम से जाना जाता है, के बारे में, भी एनआईएस ने सांसदों को जानकारी दी। एनआईएस का मानना है कि 'जु-ए' की स्थिति को आंशिक रूप से उंचा किया गया है, जिसमें उनके सार्वजनिक रूप से सामने आने का उदाहरण भी शामिल है। इस बीच रूस में उत्तर कोरियाई सैनिकों की तैनाती के दावों को बल मिल रहा है। उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के चीफ ने पृष्ठ की कि उत्तर कोरियाई सैनिकों को रूस

के पश्चिमी सीमावर्ती कुर्सक क्षेत्र में तैनात किया गया है। इससे पहले पहले सोल और वाशिंगटन भी रूस में उत्तर कोरियाई सैनिकों की तैनाती का दावा कर चुके हैं। सोल उत्तर कोरियाई सैनिकों की रणनीति का अध्ययन और विश्लेषण करने के विकल्प पर विचार कर रहा है। इसके लिए वह यूक्रेन में अपनी एक टीम भेजने की योजना बना रहा है। अगर ऐसी टीम यूक्रेन रवाना होता ही तो इसमें खुफिया अधिकारी और सेना के उत्तर कोरिया विशेषज्ञ शामिल हो सकते हैं।

फ्रांसिस्को। अमेरिका के वाशिंगटन और ओरोगन राज्यों में बेल्टेड ड्रॉप बक्सों में आग लगाने से वजह से सैकड़ों बेल्टेड नष्ट हो गए। बता दें अमेरिका में 5 नवंबर को राष्ट्रपति चुनाव होने वाले हैं। पुलिस ने बताया कि ओरोगन के दक्षिण-पूर्व पोर्टलैंड में और वाशिंगटन के पास के वैक्वर में एक-एक बेल्टेड बॉक्स में आग लग गई। पुलिस ने बताया कि पोर्टलैंड में बेल्टेड बॉक्स में सुबह-सुबह लगी आग

## राष्ट्रपति चुनाव से पहले ड्रॉप बॉक्स में आग लगने से सैकड़ों मतपत्र नष्ट

**एजेंसी फ्रांसिस्को।** अमेरिका के वाशिंगटन और ओरोगन राज्यों में बेल्टेड ड्रॉप बक्सों में आग लगाने से वजह से सैकड़ों बेल्टेड नष्ट हो गए। बता दें अमेरिका में 5 नवंबर को राष्ट्रपति चुनाव होने वाले हैं। पुलिस ने बताया कि ओरोगन के दक्षिण-पूर्व पोर्टलैंड में और वाशिंगटन के पास के वैक्वर में एक-एक बेल्टेड बॉक्स में आग लग गई। पुलिस ने बताया कि पोर्टलैंड में बेल्टेड बॉक्स में सुबह-सुबह लगी आग

को जल्दी बुझा लिया गया। उन्होंने बताया कि केवल तीन बेल्टेड बॉक्स को नुकसान पहुंचा। चुनाव अधिकारियों ने कहा कि वैक्वर में आग लगने से सैकड़ों मतपत्र जल गए। समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, उन्होंने इस घटना को मतदाताओं को वोटिंग के वंचित करने की कोशिश बताया। पोर्टलैंड पुलिस ब्यूरो ने एक बयान में कहा कि पोर्टलैंड में आग लगने की घटना के बाद वहां से निकलते हुए देखे गए एक संदिग्ध वाहन की पड़चान

कर ली गई है, जिसके वैक्वर में हई दो समान घटनाओं से जुड़े होने का अनुमान है। पोर्टलैंड पुलिस ब्यूरो की सहलग प्रमुख अमांड मैकमिलन ने एक प्रेस विज्ञापन में कहा, 'हमें इन कृत्यों के पीछे का मकसद नहीं पता है लेकिन हमें पता है कि इस तरह के कृत्य जानबूझकर किए जाते हैं और हम इस बात को लेकर चिंतित हैं कि जानबूझकर किए गए ऐसे काम चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं।'



### राष्ट्रपति ने की केरल हाई कोर्ट में पांच जजों की नियुक्ति

**एजेंसी नई दिल्ली।** राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने केरल हाई कोर्ट में पांच जजों की नियुक्ति को मंजूरी दी है। राष्ट्रपति ने केरल हाई कोर्ट के जज के रूप में परमेश्वर पणिक्कर कृष्ण कुमार, कोडासरी वेलियात मेदोम जयकुमार, मुरली कृष्ण शंकरमूलै, जीविन सेबस्तिन और पांडिकरन वरदराज अय्यर बालकृष्णन को नियुक्त किया है। इन जजों की नियुक्ति के लिए हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस ने 30 मई को अनुशंसा की थी। उसके बाद सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने 15 अक्टूबर को इन जजों की नियुक्ति की अनुशंसा की थी।



### कैंसर रोधी दवाओं की खुदरा कीमत में कमी

**एजेंसी नई दिल्ली।** केंद्र सरकार ने कैंसर रोधी दवाओं - ट्रेस्ट्रजुमाब, ओसिमार्टिनिक और डवल्लूमैब का अधिकतम खुदरा मूल्य (एमआरपी) घटाने के निर्देश दिये हैं। राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण (एनपीपीए) ने जारी एक कार्यालय ज्ञापन में कहा कि दवा निर्माताओं को तीन कैंसर रोधी दवाओं - ट्रेस्ट्रजुमाब, ओसिमार्टिनिक और डवल्लूमैब पर एमआरपी कम करने का निर्देश दिया गया है। सोमा शुल्क से छूट और जीएएसटी दरों में कमी के कारण बाजार में इन दवाओं के एमआरपी में कमी होनी चाहिए और करों तथा शुल्कों में कमी का लाभ उपभोक्ताओं को दिया

### सही मायने में दीवाली कैसे मनाएं ?

आज दीवाली का दिन है। इतिहास से हमें पता चलता है कि आज के दिन ब-ब-संतो-महात्माओं के जीवन में अनेक घटनाएं हुई हैं। जैसे भगवान महावीर को निर्वाण पद की प्राप्ति आज ही के दिन हुई थी। श्रीवाली का दिन सिक्ख इतिहास में भी बड़ी महत्ता रखता है। छठे गुरु श्री हरगोबिन्द सिंह जी महाराज जो ग्यालियर के किले में कैद थे, आज ही के दिन वे 52 राजा-महाराजाओं के साथ रिहा हुए थे। स्वामी रामतीर्थ जी का जन्म भी दीवाली के दिन ही हुआ था। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी का निर्वाण भी दीवाली के दिन हुआ था और हम सब यह अच्छी तरह जानते हैं कि चौदह वर्ष के बचपन के बाद श्री रामचन्द्र जी महाराज जब अयोध्या वापिस पहुंचे तो आज ही के दिन लोगों ने दीये जलाए थे। दीवाली खुशियों का त्यौहार है। दीवाली से कुछ दिन पहले हम अपने घरों की साफ-सफाई करते हैं और दीवाली के दिन घर की सजावट कर दीये जलाते हैं। इस मौके पर सभी लोग पटाखे जलाकर अपनी खुशी व्यक्त करते हैं। आत्मा, हमारे मन के सभी विचारों से साफ होना चाहती है। वह अंतर में प्रभु की ज्योति पर ध्यान टिकाने की कोशिश करती है लेकिन हमारा मन बहुत ही ताकतवर है। जो हर वह हमारी आत्मा को मैला करता जा रहा है? ऐसी अवस्था में हमारी आत्मा को मदद की जरूरत है। इसके लिए हमें वक्त के पूर्ण सत्पुरुष की आवश्यकता होती है जो हमारे मन की गंदगी को न सिर्फ साफ करने में हमारी मदद करते हैं बल्कि हम को शांत व स्थिर कैसे किया जाए, उसका भी उपाय बताते हैं। हम अपने आप मन को तब तक शांत नहीं कर सकते, जब तक हमें किसी पूर्ण सत्पुरुष की मदद न मिले। एक पूर्ण सत्पुरुष हमारी मदद कैसे करते हैं? सबसे पहले वे हमें पवित्र नाम से जोते हैं। जब हम ध्यान-अभ्यास के दौरान अपने सत्पुरुष द्वारा दिये गए इन नामों का जाप करते हैं तो इससे हमारा मन शांत होता है, जिससे कि हम अपने अंदर प्रभु की ज्योति व शक्ति का अनुभव करते हैं। दूसरा सत्पुरुष हमें यह भी समझाते हैं कि निष्काम सेवा करने से हम मन के दुष्प्रभावों से मुक्ति पा सकते हैं और अपने मन पर नियंत्रण रख सकते हैं जिससे कि हमारी आत्मा भी साफ बनी रहती है। अपने सत्पुरुष के मार्गदर्शन में ही हम अपने जीवन को सही दिशा की ओर ले जाकर सही मायनों में दीवाली का त्यौहार मना सकते हैं। संतों-महापुरुषों के अनुसार जिस प्रकार हम दीवाली के मौके पर कुटू-करकट बाहर निकालकर अपने घर की सफाई करते हैं, ठीक उसी प्रकार हमें अपने अवगुणों जैसे - ईर्ष्या-द्वेष, निंदा-चुगली, हिंसा, झूठ, गंदे विचारों और अहंकार को अपने अंदर से बाहर निकालना है और उसकी जगह अहिंसा, प्रेम, पवित्रता, नम्रता और निष्काम सेवा जैसे गुणों को अपने जीवन में ढालना है, जिससे कि हमारा अंतःकरण भी साफ हो और हम अपने अंदर में दीवाली मनाने के लायक हो सकें। सभी धर्मों की बुनियादी शिक्षाओं में हमें समझाया गया है कि जैसे हम बाहरी दीवाली मनाते हैं, ठीक उसी प्रकार हम अपने अंदर में भी दीवाली मना सकते हैं। दीवाली के त्यौहार पर हम जो दीये और पटाखे जलाते हैं वो सब हमारे अंदर में मौजूद प्रभु की ज्योति और शक्ति का प्रतीक है। तो आईये! दीवाली के इस त्यौहार पर हम बाहरी सफाई के साथ-साथ अपने अंदर की भी सफाई करें और सबसे जरूरी कि हम ध्यान-अभ्यास में भी समय दें, ताकि हमें प्रभु की ज्योति और शक्ति का अनुभव हो। जिससे कि हम सच्चे मायनों में दीवाली के इस त्यौहार को मना सकें।

## फार्मा सेक्टर भारत को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण साबित हो रहा है: नड्डा

**एजेंसी नई दिल्ली।** भारत के स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और देशभर में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) में आयोजित भव्य कार्यक्रम में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, आयुष मंत्रालय, फार्मास्यूटिकल्स विभाग, रसायन और उर्वरक मंत्रालय और श्रम और रोजगार मंत्रालय के तहत कर्मचारी राज्य बीमा निगम (इंएसआईसी) में कई स्वास्थ्य बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का उद्घाटन और आधारशिला रखी। साथ ही विभिन्न स्वास्थ्य कार्यक्रमों का शुभारंभ किया। इन परियोजनाओं का कुल परिव्यय 12,855 करोड़ रुपये से अधिक है। इस अवसर पर केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री, जगत प्रकाश नड्डा, केंद्रीय श्रम और रोजगार मंत्री, डॉ. मनसुख मंडाविया, केंद्रीय आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र



प्रभार) और केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री, प्रतापराव जाधव इस अवसर पर शोभा कार्यक्रमों और दक्षिणी दिल्ली सांसद (लोकसभा) रामवीर सिंह बिष्टू भी उपस्थित थे। इस मौके पर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने कहा कि पिछले 10 वर्षों में मोदी सरकार ने जो योजनाएं बनाईं, जो कार्यक्रम बनाए, जो नीतियां बनाईं, जो स्वास्थ्य को नई दिशा में ले जाने में कारगर सिद्ध हुई हैं। ये योजनाएं भारत को मजबूत और

और स्वास्थ्य के इन्फ्रास्ट्रक्चर को समर्थित किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी द्वारा आज प्रस्तुत की गई स्वास्थ्य नीति की दो विशेषताएं हैं। पहली, यह कि स्वास्थ्य नीति होलिस्टिक है यानी समग्र है; इसमें भिन्न-भिन्न, प्रचारात्मक, उपचारात्मक, पुनर्वासनात्मक और उपशामक सभी पहलुओं का ध्यान रखा गया है। दूसरी यह कि सभी विधाओं को एक छत के नीचे लाकर अपने स्वास्थ्य नीति को और समृद्ध किया है। जो बहुत महत्वपूर्ण है और इसे हमेशा याद रखा जाएगा। उन्होंने यह भी दोहराया कि केंद्र सरकार 70 वर्ष से अधिक आयु के किसी भी बुजुर्ग व्यक्ति, किसी भी महिला, किसी भी जाति, किसी भी समुदाय और किसी भी क्षेत्र के लोगों को 5 लाख रुपये का स्वास्थ्य कवर प्रदान करेगी और उनके इलाज की निःशुल्क व्यवस्था करेगी और यह सुविधा जीवन भर उपलब्ध रहेगी।

### दिल्ली में 24 घंटे खुलेंगे 111 व्यावसायिक प्रतिष्ठान :आतिशी

**एजेंसी नई दिल्ली।** चार्ता दिल्ली को मुख्यमंत्री आतिशी ने दिल्ली में 111 और दुकानों एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठानों को 24 घंटे खोलने की मंजूरी दी। सुश्री आतिशी ने कहा कि सरकार की इस पहल से दिल्ली के अंदर आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर भी पैदा होंगे। सरकार इन पर कड़ी निगरानी रखेगी। दिल्ली शॉप एस्टीब्लिशमेंट एक्ट 1954 के प्रावधानों और नियमों का उल्लंघन करने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। अब इसकी अंतिम मंजूरी देने के लिए उपराज्यपाल के पास फाइल भेजी गई है। उन्होंने कहा कि गर्मियों के दिनों में रात नौ से सुबह सात बजे तक और ठंड के मौसम में रात आठ से सुबह आठ बजे के बीच किसी भी प्रतिष्ठान में महिला कर्मचारियों को काम करने की अनुमति नहीं होगी। दुकानों को निर्धारित समय के अंदर ही खोलना और बंद करना होगा।

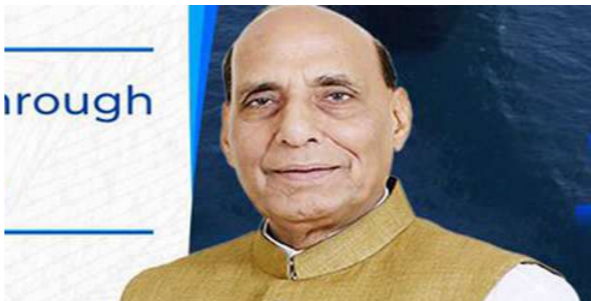


इसका उल्लंघन करने पर व्यवसायिक प्रतिष्ठान बंद कराए जा सकते हैं। अगर ग्राहक इंतजार कर रहे हैं तो दुकान खोलने के लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय मिलेगा। अलग-अलग इलाकों में दुकानों को खोलने या बंद रखने का अलग-अलग समय तय हो सकता है और स्वामियों को उसका पालन करना होगा। गौरतलब है कि पिछले कुछ वर्षों में दिल्ली के अंदर 24 घंटे दुकानों व व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के संचालन की अनुमति लेने वालों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। अब इसकी संख्या बढ़कर 700 से अधिक हो गई है।

### रक्षा मंत्री ने रक्षा क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों के कामकाज की समीक्षा की

**एजेंसी नई दिल्ली।** रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने यहां रक्षा क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों के कामकाज की समीक्षा की। रक्षा मंत्रालय ने बताया कि श्री सिंह ने रक्षा उपक्रमों और स्वदेशीकरण द्वारा नयी तकनीक के विकास के महत्व पर जोर दिया और सशस्त्र बलों की तैयारियों में उपक्रमों की भूमिका की सराहना की। रक्षा मंत्री ने रक्षा उपक्रमों को अनुसंधान और विकास, निर्यात और स्वदेशीकरण की दिशा में समर्थित प्रयास और संसाधन लगाने का निर्देश दिया। उन्होंने उत्पादन क्षमता, उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाने और सशस्त्र बलों को समय पर सामान वितरण करने के लिए प्रेरित किया। श्री सिंह ने हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड को महारत का दर्जा मिलने और

सहित उपक्रमों के बारे में जानकारी दी। अंत में एचएएल, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, बीईएमएल लिमिटेड, भारत डायनामिक्स एजेंसी नई दिल्ली। कलाकारों के एक समूह ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की। राष्ट्रपति ने इन कलाकारों द्वारा राष्ट्रपति भवन प्रवास के दौरान बनाई गई कलाकृतियों की प्रदर्शनी भी देखी। राष्ट्रपति ने कलाकृतियों की सराहना करते हुए कहा कि इनमें मानव और प्रकृति के बीच शाश्वत संबंध परिलक्षित होता है। उन्होंने सभी से ऐसी कलाकृतियों को सराहने और खरीद कर इन कलाकारों को प्रोत्साहित करने का आह्वान किया। ये कलाकार छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, मिजोरम, तेलंगाना, उत्तराखंड और झारखंड में विभिन्न वाघ अभ्यारण्यों के पास रहते हैं। वे



प्रोत्साहित किया। सचिव (रक्षा उत्पादन)संजीव कुमार ने रक्षा मंत्री को उपक्रमों के वित्तीय निष्पादन, वर्तमान स्थिति तथा अनुसंधान एवं विकास और स्वदेशीकरण आदि के क्षेत्रों में उनके द्वारा किए गए प्रयासों

### आयोग ने कांग्रेस की हरियाणा चुनाव से संबंधित शिकायतों को किया खारिज

**एजेंसी नई दिल्ली।** चुनाव आयोग ने हरियाणा विधानसभा चुनाव की मतगणना से जुड़ी कांग्रेस पार्टी की शिकायतों का निपटारा कर दिया है। आयोग ने कहा है कि पार्टी की ओर से प्राप्त सभी शिकायतें 'एक पेजर' की तरह बहुत सामान्य हैं, जैसे कि उम्मीदवारों ने इन्हें किसी 'सामान्य' निर्देश के तहत दर्ज कराया हो। चुनाव आयोग ने हरियाणा विधानसभा चुनाव की मतगणना के दौरान कांग्रेस की ओर से प्राप्त शिकायतों का जवाब देते हुए पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को पत्र लिखा है। इसमें आयोग ने शिकायतों के जवाब के साथ ही ईवीएम के पाँच पैकेज पर भी विस्तार से जानकारी दी है और यह भी कहा है कि बेटी पर आयोग ईवीएम शिकायतों पर बनी 'नियमित प्रस्तावित' (एफएफयू) को भी अपडेट करेगा। उल्लेखनीय है

कि कांग्रेस पार्टी ने ईवीएम बैटरी को लेकर संदेह जताया था और कहा था कि जिन की बैटरी में 99 प्रतिशत इसका परिणामों पर क्या प्रभाव पड़ेगा और क्या परिणाम घोषित होने से पहले किसी भी स्तर पर कोई शिकायत की



दिखा रही थी, उन्हें भाजपा आगे रही। आयोग ने खरगे को लिखा कि बैटरी के संदर्भ में उन्हें कुल 19 शिकायतें प्राप्त हुई हैं। हालांकि इसमें यह भी उल्लेख नहीं किया गया है कि किस समय बैटरी 99 प्रतिशत क्षमता दिखा रही थी और

### आर्टिस्ट-इन-रेंजिडेंसी फर्स्ट क्रिएट 2024 के तहत 21 प्रयोग कर समकालीन जनजातीय कला संरचना सौरा,



अक्टूबर से अभी तक राष्ट्रपति भवन में रके थे। इस दौरान इन कलाकारों ने प्राकृतिक रंगों का

### राष्ट्रपति भवन में स्थापित की गई कोणार्क पहियों की प्रतिकृतियां



**एजेंसी नई दिल्ली।** राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र और अमृत उद्यान में बलुआ पत्थर से बनी कोणार्क पहियों की चार प्रतिकृतियां स्थापित की गई हैं। राष्ट्रपति भवन ने बताया कि कोणार्क पहियों की स्थापना का उद्देश्य आगंतुकों के बीच देश की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करना और उसका प्रचार करना है। यह पहल राष्ट्रपति भवन में पारंपरिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तत्वों को पेश करने के लिए उठाया जा रहे कई कदमों का हिस्सा है। कोणार्क सूर्य मंदिर एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है, जो ओडिशा के मंदिर वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसे सूर्य देव को ले जाने वाले एक विशाल राथ के आकार में बनाया गया था। कोणार्क के पहिए भारत की सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं।

### राय ने पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध लागू करने के अधिकारियों को दिए निर्देश

**एजेंसी नई दिल्ली।** दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने दिल्ली में पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध लागू करवाने के लिए संबंधित विभागों के साथ बैठक कर प्रतिबंध का सख्ती से पालन कराने के निर्देश दिए। श्री राय ने कहा कि दिवाली के अवसर पर पटाखों से होने वाला प्रदूषण दिल्ली की हवा को अत्यधिक प्रदूषित कर देता है, और यह प्रदूषण बच्चों और बुजुर्गों के लिए अत्यंत घातक होता है। इसी कारण पटाखों के निर्माण, भंडारण, बिक्री (ऑनलाइन मार्केटिंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से डिजीवरी सहित) तथा पटाखों को जलाने पर पूर्ण प्रतिबंध लागू किया गया है। इस प्रतिबंध को लागू करवाने के लिए 377 टीमों का गठन किया गया है, जिसमें दिल्ली पुलिस की 300 टीमों और राजस्व विभाग की 77 टीमों शामिल हैं। ये टीमों पूरे दिल्ली में लगातार निगरानी कर रही हैं। उन्होंने कहा कि ठंड के मौसम में दिल्ली में प्रदूषण से निपटने के लिए सरकार ने



21-प्वाइंट विंटर एक्शन प्लान की घोषणा की है, जिस पर सरकार लगातार काम कर रही है। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों केंद्रीय कृषि मंत्री के साथ हुई बैठक में पटाखों पर प्रतिबंध पूर्ण प्रतिबंध को दिल्ली में लागू करने के लिए निर्देश दिए। श्री राय ने बताया कि दिवाली के अवसर पर पूर्ण प्रतिबंध लागू करवाने के लिए दिल्ली पुलिस की टीमों बनाई गई हैं, जो पटाखों के

### एकाधिकारवाद के संरक्षण को तोड़ना हमारा लक्ष्य : राहुल

**नयी दिल्ली।** कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा है कि देश में अडानी तथा बृज क के एकाधिकार को संरक्षण देने का सिंडिकेट चल रहा है, और वहां से लगभग 19,005 किलोग्राम पटाखे जब्त किए गए हैं। जो लोग पटाखों के पूर्ण प्रतिबंध (उत्पादन/भंडारण/बिक्री) का उल्लंघन करते पाए जाएंगे, उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि सरकार ने पटाखों पर प्रतिबंध के बारे में जन जागरूकता फैलाने के लिए 'दीए' जलाओ, पटाखे नहीं' कार्यक्रम शुरू किया है, और लोगों को जागरूक करने का यह अभियान दीपावली तक चलेगा। इसलिए कांग्रेस का लक्ष्य जनहित में इस एकाधिकार को तोड़ना है। उन्होंने एकाधिकार को देश की जनता के खिलाफ बताया और कहा कि और यह स्पष्ट होना चाहिए कि इस एकाधिकार को संरक्षण देने का मकसद किससे लाभ पहुंचाना है। श्री गांधी ने कहा, 'मोनोंपॉली का जाल बिछाने और उसे बचाने वाले कौन। अग्निवीर, राष्ट्रीय सुरक्षा, छोटे व्यापार या करदाताओं को। उन्होंने इसे एकाधिकार का संरक्षण करने वाला सिंडिकेट बताया और कहा, 'सिंडिकेट का उद्देश्य-बृज बचाओ, अडानी बचाओ, मोनोंपॉली बचाओ। हमारा लक्ष्य - जनहित बचाओ, देशहित बचाओ, सिंडिकेट को सजा दिलाओ।



### सेना कमांडरों के सम्मेलन में विदेश मंत्री ने भारतीय सेना की सराहना की

**एजेंसी नई दिल्ली।** सेना कमांडरों के सम्मेलन का दूसरा चरण यहां संपन्न हो गया। दो दिवसीय इस आयोजन में भारतीय सेना के वरिष्ठ अधिकारियों ने सीमा सुरक्षा और भीतरी इलाकों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण रणनीतिक मुद्दों पर विचार-विमर्श किया। सम्मेलन का मुख्य आकर्षण 'भारतीय सशस्त्र बलों के लिए विकसित भू-राजनीतिक परिदृश्य और अवसर' विषय पर विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर का संबोधन था। इस अवसर पर डॉ. जयशंकर ने भारत को प्रभावित करने वाली जटिल वैश्विक और भू-राजनीतिक गतिशीलता को रेखांकित किया। उन्होंने सशस्त्र बलों से देश की अपेक्षाओं और वर्तमान विश्व व्यवस्था के विरोधाभासों और चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक तैयारियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारतीय सेना को सतर्क रहने के लिए सराहना की और वरिष्ठ अधिकारियों से तेजी से विकसित हो रहे भू-राजनीतिक खतरों और अवसरों के लिए तैयार रहने का

आग्रह किया। भारत की रणनीतिक स्थिति को आकार देने में तकनीकी प्रगति और चल रहे वैश्विक संघर्षों से सीखे गए सबक के महत्व पर जोर दिया। सम्मेलन के दौरान भारतीय सेना के वरिष्ठ अधिकारियों ने



परिचालन और प्रशासनिक मुद्दों पर गहन चर्चा की। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने लखनऊ में संयुक्त

%संयुक्त संस्कृति' की ओर आगे बढ़ना और अंततः संयुक्त संचालन के लिए पूर्ण एकीकरण प्राप्त करना है। उन्होंने उभरी चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए परिचालन तत्परता की आवश्यकता को दोहराया। विशेष रूप

### राजधानी में तीन दिन पानी की किल्लत: 40फीसदी इलाके के लोग होंगे परेशान

**नई दिल्ली।** राजधानी निवासियों को इस बार दिवाली, गोवर्धन पूजा और भैया दूज जैसे महत्वपूर्ण त्योहारों पर जल संकट का सामना करना पड़ेगा। राजधानी में पानी की समस्या का मुख्य कारण गंग नहर और यमुना नदी से जल आपूर्ति में कमी है। इस समय गंग नहर में सफाई का कार्य चल रहा है, इस कारण गंग नहर से जल आपूर्ति बंद कर दी गई है। वहीं, यमुना नदी के पानी में अमोनिया की मात्रा सामान्य से कहीं अधिक हो गई है, जिससे जल शोधन संयंत्रों पर सीधा असर पड़ रहा है। दिल्ली जल बोर्ड के वजीराबाद, चंद्रावल, सोनिया विहार और भागीरथी जल शोधक संयंत्र इस समय अपनी पूरी क्षमता के साथ कार्य नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि यमुना नदी के पानी में अमोनिया की अधिकता के कारण जल को शुद्ध करने में दिक्कत आ रही है। यमुना में अमोनिया का स्तर 1 पीपीएम (पार्ट्स पर मिलियन) से अधिक हो गया है, जबकि जल शोधन के लिए इसकी सुरक्षित मात्रा 0.5 पीपीएम से कम होनी चाहिए। अमोनिया की अधिकता के चलते संयंत्रों में जल शोधन को प्रक्रिया धीमी हो जाती है, जिससे पानी की आपूर्ति कम हो गई है। दिल्ली जल बोर्ड ने लोगों को सलाह दी है कि वे पानी का विवेकपूर्ण उपयोग करें और किसी भी प्रकार की बर्बादी से बचें। दिल्ली में पानी की आपूर्ति मुख्य रूप से गंग नहर, यमुना नदी और भूजल स्रोतों से होती है। हालांकि, गंग नहर में सफाई कार्य के कारण वहां से जल आपूर्ति फिलहाल बंद है। ऐसे में यमुना नदी से मिलने वाले पानी पर निर्भार बढ़ गई है, लेकिन अमोनिया की अधिकता ने इस पानी को शोधन में बाधा उत्पन्न की है। जल संकट के कारण कई इलाकों में पानी की आपूर्ति प्रभावित हुई है। जल बोर्ड के अधिकारियों ने पानी के टैंकरों की व्यवस्था की है ताकि संकट के दौरान लोगों को कुछ राहत मिल सके। हालांकि, त्योहारों के समय पानी की मांग अधिक होती है, ऐसे में जल संकट को लेकर जनता में चिंता बढ़ रही है। अधिकारियों ने बताया कि गंग नहर में सफाई का कार्य दिवाली के बाद पूरा होने की उम्मीद है, जिससे जल आपूर्ति में सुधार हो सकेगा।

राजधानी में पानी की समस्या का मुख्य कारण गंग नहर और यमुना नदी से जल आपूर्ति में कमी है। इस समय गंग नहर में सफाई का कार्य चल रहा है, इस कारण गंग नहर से जल आपूर्ति बंद कर दी गई है। वहीं, यमुना नदी के पानी में अमोनिया की मात्रा सामान्य से कहीं अधिक हो गई है, जिससे जल शोधन संयंत्रों पर सीधा असर पड़ रहा है। दिल्ली जल बोर्ड के वजीराबाद, चंद्रावल, सोनिया विहार और भागीरथी जल शोधक संयंत्र इस समय अपनी पूरी क्षमता के साथ कार्य नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि यमुना नदी के पानी में अमोनिया की अधिकता के कारण जल को शुद्ध करने में दिक्कत आ रही है। यमुना में अमोनिया का स्तर 1 पीपीएम (पार्ट्स पर मिलियन) से अधिक हो गया है, जबकि जल शोधन के लिए इसकी सुरक्षित मात्रा 0.5 पीपीएम से कम होनी चाहिए। अमोनिया की अधिकता के चलते संयंत्रों में जल शोधन को प्रक्रिया धीमी हो जाती है, जिससे पानी की आपूर्ति कम हो गई है। दिल्ली जल बोर्ड ने लोगों को सलाह दी है कि वे पानी का विवेकपूर्ण उपयोग करें और किसी भी प्रकार की बर्बादी से बचें। दिल्ली में पानी की आपूर्ति मुख्य रूप से गंग नहर, यमुना नदी और भूजल स्रोतों से होती है। हालांकि, गंग नहर में सफाई कार्य के कारण वहां से जल आपूर्ति फिलहाल बंद है। ऐसे में यमुना नदी से मिलने वाले पानी पर निर्भार बढ़ गई है, लेकिन अमोनिया की अधिकता ने इस पानी को शोधन में बाधा उत्पन्न की है। जल संकट के कारण कई इलाकों में पानी की आपूर्ति प्रभावित हुई है। जल बोर्ड के अधिकारियों ने पानी के टैंकरों की व्यवस्था की है ताकि संकट के दौरान लोगों को कुछ राहत मिल सके। हालांकि, त्योहारों के समय पानी की मांग अधिक होती है, ऐसे में जल संकट को लेकर जनता में चिंता बढ़ रही है। अधिकारियों ने बताया कि गंग नहर में सफाई का कार्य दिवाली के बाद पूरा होने की उम्मीद है, जिससे जल आपूर्ति में सुधार हो सकेगा।

राजधानी में पानी की समस्या का मुख्य कारण गंग नहर और यमुना नदी से जल आपूर्ति में कमी है। इस समय गंग नहर में सफाई का कार्य चल रहा है, इस कारण गंग नहर से जल आपूर्ति बंद कर दी गई है। वहीं, यमुना नदी के पानी में अमोनिया की मात्रा सामान्य से कहीं अधिक हो गई है, जिससे जल शोधन संयंत्रों पर सीधा असर पड़ रहा है। दिल्ली जल बोर्ड के वजीराबाद, चंद्रावल, सोनिया विहार और भागीरथी जल शोधक संयंत्र इस समय अपनी पूरी क्षमता के साथ कार्य नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि यमुना नदी के पानी में अमोनिया की अधिकता के कारण जल को शुद्ध करने में दिक्कत आ रही है। यमुना में अमोनिया का स्तर 1 पीपीएम (पार्ट्स पर मिलियन) से अधिक हो गया है, जबकि जल शोधन के लिए इसकी सुरक्षित मात्रा 0.5 पीपीएम से कम होनी चाहिए। अमोनिया की अधिकता के चलते संयंत्रों में जल शोधन को प्रक्रिया धीमी हो जाती है, जिससे पानी की आपूर्ति कम हो गई है। दिल्ली जल बोर्ड ने लोगों को सलाह दी है कि वे पानी का विवेकपूर्ण उपयोग करें और किसी भी प्रकार की बर्बादी से बचें। दिल्ली में पानी की आपूर्ति मुख्य रूप से गंग नहर, यमुना नदी और भूजल स्रोतों से होती है। हालांकि, गंग नहर में सफाई कार्य के कारण वहां से जल आपूर्ति फिलहाल बंद है। ऐसे में यमुना नदी से मिलने वाले पानी पर निर्भार बढ़ गई है, लेकिन अमोनिया की अधिकता ने इस पानी को शोधन में बाधा उत्पन्न की है। जल संकट के कारण कई इलाकों में पानी की आपूर्ति प्रभावित हुई है। जल बोर्ड के अधिकारियों ने पानी के टैंकरों की व्यवस्था की है ताकि संकट के दौरान लोगों को कुछ राहत मिल सके। हालांकि, त्योहारों के समय पानी की मांग अधिक होती है, ऐसे में जल संकट को लेकर जनता में चिंता बढ़ रही है। अधिकारियों ने बताया कि गंग नहर में सफाई का कार्य दिवाली के बाद पूरा होने की उम्मीद है, जिससे जल आपूर्ति में सुधार हो सकेगा।

**NAME CHANGE**  
I, Suresh Garg S/O Om Prakash Garg R/O House No 60, Second Floor Rohini Sector-1, Block-E, West Delhi Rohini Sector 7, Delhi have changed my name to Suresh Chand Garg for all future purposes

**BEDAKHAL**  
My client MANMOHAN SINGH S/O LT RANJEET SINGH & GURCHARAN KAUR W/O MANMOHAN SINGH both R/o 40/6, CHURCH ROAD, BHOGAL DELHI, have severed relations with his son JASKARAN SINGH & his wife GURSHEEN KAUR CHADHA KANDHARI and disowned them from all movable/immovable property, because they are not obedient of my client. Any persons having dealing with them shall do so at his own risk. My client shall not be held responsible in any manner.  
Advocate:- SANDEEP SINGHA  
Mobile No:-9810699694

**NAME CHANGE**  
I, ASLAM S/O SUNIAD ALI R/O H No 880, STREET NO-9, OLD MUSTAFABAD, NORTH EAST, DELHI 110094 HAVE CHANGED MY NAME ASLAM KHAN FOR ALL FUTURE PURPOSE



**विकसित जिला बनाने के लिए हमें मिलकर काम करना होगा: नवीन जिंदल**

**एजेंसी**  
**यमुनानगर।** कुरुक्षेत्र से लोकसभा सांसद नवीन जिंदल ने जिले के अधिकारियों को कहा कि हमें यमुनानगर को विकसित जिला बनाने के लिए मिलकर काम करना है। जिले को विकसित करने का काम मिलकर ही सम्भव हो सकता है। जिला सचिवालय में डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेंट कॉन्डिशन एवं मॉनिटरिंग कमेटी (दिशा) की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता कुरुक्षेत्र से लोकसभा से सांसद नवीन जिंदल ने की। उन्होंने केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की और अधिकारियों को सभी लक्ष्य समय पर हासिल करने के साथ-साथ विकास कार्यों तेजी लाने के निर्देश दिए। बैठक में अम्बाला से लोकसभा सांसद एवं जिला स्तरीय दिशा कमेटी के उपाध्यक्ष वरुण चौधरी, यमुनानगर से विधायक घनश्याम दास अरोड़ा, जगाधरी से विधायक अकरम खान, जिला परिषद के चेयरमैन रमेश ठसका, उपायुक्त कैप्टन मनोज कुमार, एडीसी आयुष सिन्हा मौजूद रहे। लोकसभा सांसद नवीन जिंदल ने कहा कि हम लोगों को साथ मिलकर कार्य करना होगा तभी यमुनानगर के विकास को गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि हमने अपने देश को 2047 तक एक विकसित भारत बनाने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि सभी अपना कार्य ईमानदारी से करेंगे तो हम यमुनानगर जिले को विकसित बनाने में सफल होंगे। उन्होंने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने, शहर की सफाई व्यवस्था को दुरुस्त रखने, बिना संकेशन के सफाई कर्मचारी को किसी भी अधिकारी के घर न भेजने के निर्देश दिए।

**मजबूत सरकार के लिए मजबूत पार्टी की जरूरत : कंवरपाल गुर्जर**

**हिसार।** राज्य के पूर्व मंत्री एवं सदस्यता अभियान के जिला प्रभारी कंवरपाल गुर्जर ने कहा है कि देश में मजबूत सरकार के लिए मजबूत पार्टी की जरूरत होती है। मजबूत पार्टी भी नहीं बन पाएगी, जब उसके सदस्य ज्यादा से ज्यादा हों। वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी भारत की ही नहीं बल्कि विश्व की सबसे बड़ी मजबूत पार्टी है। कंवरपाल गुर्जर भाजपा जिला कार्यालय में सदस्यता अभियान बारे आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पार्टी की मजबूती व नए सदस्य जोड़ने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सदस्यता अभियान की शुरुआत की थी। हमें अपने इस अभियान को आगे बढ़ाने के लिए सदस्यता अभियान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना है और अधिक से अधिक नए सदस्य जोड़ने हैं। उन्होंने सदस्यता अभियान के लिए पार्टी की ओर से जारी 8800002024 नंबर पर अधिक से अधिक मिस्ट्रड कॉल करके सदस्य बनने व बनाने का आह्वान किया। सदस्यता अभियान के जिला संयोजक एवं पूर्व मंत्री डॉ. कमल गुप्ता ने इस अवसर पर जिले में चलते आ रहे सदस्यता अभियान बारे जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जिले में अभियान को तेजी से चलाकर साढ़े तीन लाख सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

**167 शिकायतों में से 67 का निवारण**

**सोनीपत।** शहरी स्थानीय निकाय से संबंधित समस्याओं का समाधान करने के लिए आयोजित समाधान शिविरों में अब तक 167 शिकायतें प्राप्त हुई हैं। इनमें से 67 शिकायतों का त्वरित समाधान किया गया है, जबकि 97 शिकायतों को संबंधित विभागों में भेजा गया है। निगमायुक्त विश्राम मीणा ने बताया कि आयोजित शिविरों में 23 शिकायतें आईं, जिनमें से 02 का मौके पर ही समाधान कर दिया गया। बाकी 21 शिकायतों को शीघ्र निवारण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया। सोनीपत नगर निगम में आयोजित शिविर में 19 शिकायतें प्राप्त हुईं, जिनका समाधान करने के लिए दिशा-निर्देश दिए गए। गन्नीर नगरपालिका में 03 शिकायतें मिलीं, जिनमें से 02 का मौके पर समाधान किया गया। वहीं, खरखोदा नगरपालिका में 01 शिकायत आई, जबकि कुच्छली और गौहाना में कोई शिकायत नहीं मिली। निगमायुक्त ने कहा कि समाधान शिविर नागरिकों के लिए एक बेहतर मंच है, जहां सभी अधिकारी एक साथ बैठकर समस्याओं का समाधान कर रहे हैं। प्रशासन की प्रतिक्रिया है कि नागरिकों को त्वरित समाधान मिले, जिससे सभी सरकारी सेवाओं तक उनकी आसान पहुंच सुनिश्चित की जा सके। इन शिविरों के माध्यम से प्रशासन नागरिकों की समस्याओं का शीघ्र समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**होम्योपैथी एवं यूनानी स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए सरकार का अहम निर्णय**

**चंडीगढ़।** हरियाणा में आयुष स्वास्थ्य सेवाओं तक जनता की आसान पहुंच सुनिश्चित करने तथा होम्योपैथी एवं यूनानी स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने नवसृजित आयुर्वेदिक मेडिकल ऑफिसर (एमओ) को 1085 पदों में से 204 पदों को पुनः नामित करने का निर्णय लिया है। इनमें 120 पदों को होम्योपैथिक चिकित्सा अधिकारी (एचएमओ) तथा 84 पदों को यूनानी चिकित्सा अधिकारी (यूपएमओ) के रूप में पुनः नामित किया जाएगा। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने इस संबंध में प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान कर दी है। आयुष स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री ने आयुष विभाग की समीक्षा बैठक की और सभी पीएचएस और उप स्वास्थ्य केंद्रों पर एक हजार आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारियों की नियुक्ति करने का निर्देश दिए थे। इन निर्देशों का अनुपालन करते आयुष विभाग में एमओ को 1085 पर सुनिश्चित किए हैं। सरकारी प्रवक्ता के अनुसार पहले चरण में 557 एमओ की तैनाती के लिए हरियाणा लोक सेवा आयोग (एचपीएससी) के माध्यम से भर्ती के लिए अनुरोध भेजा जा चुका है।

**समाधान शिविरों में आई 13 समस्याओं में से सात का निपटारा**

**एजेंसी**  
**जौदा।** जिला नगर आयुक्त गुलजार मलिक ने कहा कि न केवल कि प्रदेश सरकार ने आमजन की समस्याओं का समाधान करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। आमजन की समस्याओं का प्राथमिकता के आधार समाधान करने के उद्देश्य से समाधान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। प्रत्येक कार्य दिवस को जिला स्तर पर नगर परिषद के सभागार में सुबह 9 बजे से 11 बजे तक समाधान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसके साथ-साथ उपमंडल व ब्लॉक स्तर पर भी समाधान शिविरों का निरंतरता में आयोजन किया जा रहा है ताकि आमजन की समस्याओं को सुनकर उनका शीघ्र अति शीघ्र निवारण किया जा सके। जिला नगर आयुक्त गुलजार मलिक राज्य सरकार के दौरान कार्य समाधान शिविर के दौरान कार्य समाधान शिविर में आमजन की समस्याओं को सुन रहे थे। इस दौरान डीएमसी ने लोगों की प्रांटी आईडीए परिवार पहचान पत्र, पुलिस विभाग से संबंधित, राशन कार्ड तथा विभिन्न सामाजिक सुरक्षा पेंशनों आदि से संबंधित मामलों की समस्याएं सुनीं और संबंधित अधिकारियों को इन मामलों को प्राथमिकता के साथ निपटाने बारे



जरूरी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को लागू करने व आमजन की समस्याओं के समाधान के लिए प्रशासन हमेशा तत्पर है। प्रशासन द्वारा गरीब व अत्योद्यत परिवारों के अंतिम व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा रहा है और फिर भी कोई समस्या आती है तो उसके लिए समाधान शिविर में आने वाली समस्याओं का प्राथमिकता के साथ समाधान किया जा रहा है। आयोजित

**हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने यू-विन पोर्टल के शुभारंभ के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जताया आभार**

**एजेंसी**  
**चंडीगढ़।** हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा यू-विन पोर्टल का शुभारंभ भारत सरकार की देश के नागरिकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है और सभी के लिए बुनियादी व आवश्यक सेवाओं की सार्वभौमिक और समाना पहुंच को प्रोत्साहित भी करता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऑनलाइन माध्यम से टीकाकरण सेवाओं को मजबूत करने के उद्देश्य से यू-विन पोर्टल राष्ट्र को समर्पित किया। eVIN और Co-WIN के सफल कार्यान्वयन के बाद स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने देश में नियमित टीकाकरण सेवाओं को डिजिटल बनाने के लिए तीसरे स्तंभ के रूप में यू-विन की स्थापना की है। यू-विन प्लेटफॉर्म टीकाकरण के लिए प्रत्येक गर्भवती महिला, नवजात शिशु, का सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम (यूआईपी) का लक्ष्य सालाना 5.95 लाख से अधिक नवजात शिशुओं और



बच्चे और किशोरों की ट्रेकिंग की सुविधा के लिए एक डिजिटल समाधान मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने इस प्रमुख स्वास्थ्य पहल को शुरू करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का धन्यवाद किया और कहा कि हरियाणा 6.80 लाख से अधिक गर्भवती महिलाओं तक पहुंचने का है। यू-विन प्लेटफॉर्म एक डिजिटल समाधान है, जो हर गर्भवती महिला, नवजात शिशु, बच्चे और किशोरों के टीकाकरण के लिए ट्रेकिंग की सुविधा प्रदान करता है।

**सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने किया कंप्यूटर लैब का उद्घाटन**

**एजेंसी**  
**जौदा।** ऐतिहासिक गांव रामरथ स्थित श्री ब्राह्मण संस्कृत महाविद्यालय में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश सूर्यकांत ने कंप्यूटर लैब का उद्घाटन किया। कंप्यूटर लैब को दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश दिनेश कुमार शर्मा की पत्नी माता कमला देवी की याद में बनवाया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता पंडित सच्चिदानंद ने की। कार्यक्रम में दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश दिनेश कुमार शर्मा की धर्मपत्नी विशाखा शर्मा, नगर निगम के अतिरिक्त आयुक्त वाईएस गुप्ता, एचसीएस सतपाल शर्मा, रिटायर्ड आईएस डीडी गौतम, सीजेएम मौनिका, रिटायर्ड ज्वाइंट डायरेक्टर एसडी गौतम, शुभभारम विशद, कमेटी प्रधान रिष्कांत शर्मा, पूरव राज्य सरकार संसद डीपी वल्लभ, बार एसोसिएशन जौदा व हिसार के कई गणमान्य अधिकारिता मौजूद रहे। कार्यक्रम की

शुरुआत में सभी ने मिल कर भगवान परशुराम मंदिर में पूजा अर्चना की और सर्व कल्याण की कामना की। आवश्यक है। कंप्यूटर ज्ञान से व्यक्ति सुविधाओं का उपयोग आसानी से कर सकते हैं। आज कंप्यूटर ने हमारे



सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा कि आज का युवा तकनीकी का युग है। यह लैब वातायुक्त है और इसमें 15 कंप्यूटर सेट रखे गए हैं। इस लैब में बच्चे कंप्यूटर ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। आज के युग में खासकर युवा व बच्चों को कंप्यूटर का ज्ञान होना अति

**महाराष्ट्र चुनाव में भाजपा ही विजयी होगी : अनिल विज**

**एजेंसी**  
**अम्बाला।** हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री अनिल विज ने कहा कि महाराष्ट्र चुनाव में भाजपा ही विजयी होगी। विज आज पत्रकारों के सवालों का जवाब दे रहे थे। सपा नेता अखिलेश यादव के बयान की महाराष्ट्र में भाजपा को हार मिलेगी पर पलटवार करते हुए कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने कहा कि यह सारे खयलों तो विपक्ष के नेता हरियाणा के लिए भी बोलते थे। लेकिन, सभी गलत साबित हो गए। पहले तो सभी अपने-अपने लिए सेल्फ सजा जनता के सामने झूठ बोलने के लिए तय करें और महाराष्ट्र में भी भाजपा ही विजयी होगी। इन बौद्धों के नेतृत्व में नकल को लेकर कांग्रेस नेता सुरजेवाला के बयान पर तंज करते हुए कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने कहा कि कौन सा नकल राशन चल रहा है, सुरजेवाला खुद भूपिंदर सिंह हुड्डा ही नकल कर रहे हैं। शैलजा भूपेंद्र हुड्डा की हिदायत है तो अपना एक आदमी कम कर देते। लेकिन, कांग्रेस मतलब गांधी परिवार है।



मल्लिका अर्जुन खड़गे को बाहर खड़ा कर दिया। अंदर सिर्फ गांधी परिवार था। अगर उनको जरा भी शर्म है तो अपना एक आदमी कम कर देते। उन्होंने कहा माना चुनाव आयोग की हिदायत है तो अपना एक आदमी कम कर देते। लेकिन, कांग्रेस मतलब गांधी परिवार है।

**हरियाणा सरकार एमएसपी पर अनाज का एक-एक दाना खरीदने के लिए प्रतिबद्ध: श्याम सिंह राणा**

**एजेंसी**  
**दुबई/चंडीगढ़।** हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्याम सिंह राणा ने राज्य सरकार की किसानों के हित में उठाए गए कदमों के लिए प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि किसानों से उनकी धान का एक-एक दाना न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीदा जाएगा। उन्होंने कांग्रेसी नेता रणदीप सुरजेवाला पर मीडिया में 'गुमराह करने वाले बयान- देने का आरोप लगाते हुए कहा कि धान की खरीद प्रक्रिया सुचारु रूप से चल रही है, और किसान सरकार की खरीद प्रणाली से पूरी तरह संतुष्ट हैं। श्याम सिंह राणा ने आज यहां जारी बयान में बताया कि प्रदेश सरकार ने अब तक 47.05 लाख मीट्रिक टन धान एमएसपी पर खरीदा है और करोड़ों रुपये की भुगतान राशि बिना किसी देरी के किसानों के खातों में हस्तांतरित कर दी गई है। 'मेरी फसल मेरा ब्यौरा' पोर्टल पर पंजीकरण के आंकड़ों में कोई

गड़बड़ नहीं : कृषि मंत्री कृषि मंत्री ने कांग्रेसी नेता द्वारा दिए गए 'मेरी फसल मेरा ब्यौरा' पोर्टल पर पंजीकरण में अनेक गलतियों के बयान को भ्रामक बताते हुए स्पष्ट किया जताई कि इस वर्ष राज्य का धान उत्पादन पिछले साल के 58-59 लाख मीट्रिक टन के आंकड़े को पार कर सकता है। श्याम सिंह राणा ने आगे यह भी कहा, 'हम सुनिश्चित कर रहे हैं कि कृषि मंत्री ने सुरजेवाला को राजस्थान के मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए, जहां से उनको राज्यसभा में भेजा गया है। कृषि मंत्री ने सुरजेवाला को सार्वजनिक रूप से गलत बयानबाजी देने से बचने की सलाह दी। उन्होंने अधिकारियों से धान खरीद की सुचारु खरीद का फीडबैक लेने के बाद पुनः दोहराया कि धान की खरीद के डेटा की नियमित रूप से अपडेट किया जा रहा है और उठान प्रक्रिया की सुचारु रूप से हो रही है। उन्होंने कहा कि सरकार का प्राथमिक लक्ष्य किसानों का कल्याण सुनिश्चित करना और खरीद प्रक्रिया को निबंध रचना है। उन्होंने कहा कि हरियाणा के किसान राज्य सरकार की कार्यप्रणाली से पूरी तरह खुश हैं, और सरकार का पूरा प्रयास है कि किसानों की उपज का एक-एक दाना एमएसपी पर खरीदा जाए। खरीद और उठान प्रक्रिया समय पर हो, ताकि किसानों को किसी तरह की दिक्कत न हो। सुरजेवाला पर निशाना, राजस्थान पर ध्यान देने की नसीहत : राणा श्याम सिंह राणा ने कांग्रेस नेता



कि खरीद विपणन सत्र 2024-25 के लिए 4,14,239 किसानों ने पंजीकरण कराया है, जो पिछले साल के 3,60,282 से अधिक है। इस साल फसल क्षेत्र भी बढ़कर 28,77,562 एकड़ हो गया है, जो पिछले वर्ष 27,30,745 एकड़ था। उन्होंने उम्मीद

**सोनीपत पुलिस ने अवैध पटाखे बेचते दो पकड़े**

**एजेंसी**  
**सोनीपत।** सोनीपत पुलिस ने जिले में ज्वलनशील पदार्थ और अवैध पटाखों की बिक्री के खिलाफ अभियान छेड़ते हुए भारी मात्रा में पोटारा, सल्फर और विभिन्न प्रकार के पटाखे जब्त किए। इस कार्रवाई में दो व्यक्तिओं को गिरफ्तार किया गया है और आगे उन्हें न्यायालय में पेश किया जाएगा। पुलिस की टीम ने जिले के अलग-अलग इलाकों में छापेमारी की। थाना कुडली में सहायक उप निरीक्षक नरेश ने एक आरोपी पंकज, निवासी प्रेम कॉलोनी, कुच्छली से 17 गंठक फोने के यंत्र, 2.8 किलोग्राम पोटारा और 2.78 किलोग्राम सल्फर बरामद किया। दूसरी ओर, थाना मुरखल में उप निरीक्षक तेज प्रकाश ने महेन्दीपुर निवासी विकास की दुकान से विभिन्न प्रकार के पटाखों के पैकेट जब्त किए।

**डॉ. अबेडकर और महात्मा गांधी के सिद्धांतों से मार्गदर्शन लेकर सिविल सेवकों को ईमानदारी व सेवाभाव के साथ अपने कर्तव्यों का करना चाहिए निर्वहन : प्रसाद**

**एजेंसी**  
**चंडीगढ़।** हरियाणा के मुख्य सचिव डॉ. टीवीएसएन प्रसाद ने आज हरियाणा सिविल सचिवालय में डॉ. बी.आर. अबेडकर सम्मेलन हॉल का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि यह नवनिर्मित हॉल भारतीय सविधान के निर्माता डॉ. बी.आर. अबेडकर के प्रति एक श्रद्धांजलि है। इस मौके पर उपस्थितजन को संबोधित करते हुए मुख्य सचिव ने कहा कि यह कॉन्फ्रेंस हॉल हरियाणा सिविल सचिवालय कर्मचारियों के लिए कार्यस्थल के माहौल को बेहतर बनाने और उत्कृष्टता, समावेशिता व समर्पित सार्वजनिक सेवा की संस्कृति को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सिविल सेवकों को ईमानदारी व सेवाभाव के साथ अपने कर्तव्यों का करना चाहिए निर्वहन डॉ. टीवीएसएन प्रसाद ने कहा कि डॉ. बी.आर. अबेडकर ने समानता, शासन और आत्मनिर्भरता पर संवेद जोर दिया और उनके इस विजन के लिए हम आज उनके ऋणी हैं। सिविल सेवकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देते हुए उन्होंने



कहा कि अधिकारी सरकार का चेहरा होते हैं, इसलिए अधिकारियों को सम्पन्न भाव के साथ सभी नागरिकों की सेवा करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि डॉ. अबेडकर और महात्मा गांधी के सिद्धांतों से हमें मार्गदर्शन लेना चाहिए और ईमानदारी, सेवा व प्रतिबद्धता के साथ तथा महिल्लाओं के लिए क्रेच सुविधा स्थापित करने की घोषणा का भी स्वागत किया।

**15 हजार से अधिक लोग रन फॉर यूनिटी में लगे भाग**

**एजेंसी**  
**गुरुग्राम।** 31 अक्टूबर को गुरुग्राम में रन फॉर यूनिटी का भव्य आयोजन होगा। इसमें 15 हजार से अधिक धावकों के भाग लेने की संभावना है। फनवरी में गुरुग्राम मेरथन के सफल आयोजन के बाद यह पहला अवसर है जब इतनी बड़ी संख्या में

की गत वर्षों में विधान सभा की कार्यशैली में अनेक सुधार हुए हैं, लेकिन सुधार एक ऐसी प्रक्रिया है जो सतत रूप से जारी रहनी चाहिए। टीम की सामूहिक भावना और सकारात्मक वातावरण से यह सब संभव है। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी उन्हें व्यक्तिगत रूप से सुझाव दें। बड़े दृष्टिकोण के साथ स्थानीय कामकाज की उत्कृष्टता अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि विधान सभा का स्टाफ इस कामकाज को संपन्न करवाने में बहुत ही महत्वपूर्ण



होना चाहिए। उत्साह सिर्फ शरीर से नहीं आता, बल्कि यह मानसिक अवस्था है। उन्होंने कहा कि जैसे हम

भी प्रतिभागी को दौड़ खतम होने तक कोई असुविधा ना हो। इस अवसर पर एडीसी दिनेश कुमार मीणा, डीसीपी ट्रेकिंग विंदि विज, डीसीपी मयंक गुप्ता, सीईओ जिला परिषद जगनिवास, गुरुग्राम के एसडीएम रविंद्र, मानसिक डॉ. जिला प्रशासन की ओर से यह पूरा प्रयास किया जा रहा है कि किसी

वेल्फेयर एसोसिएशन को आमंत्रित किया गया है। डीसी ने बताया कि देश की एकता सुदृढ़ करने के उद्देश्य से आयोजित की जा रही इस मैरथन में स्थानीय नागरिकों के लिए भाग लेना उनके जीवन का एक नया अनुभव होगा। जिला प्रशासन की ओर से यह पूरा प्रयास किया जा रहा है कि किसी

केंद्रीय विद्युत, आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल द्वारा सुबह 7 बजे आयोजन स्थल से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जाएगा। इसमें हिस्सा लेने वाले लोग बसों और प्रहवेट गाड़ियों से वेन्चू पर पहुंचेंगे। डीसी ने बताया कि रन फॉर यूनिटी के दौरान मनोरंजन के लिए सांस्कृतिक

उन्होंने ट्रेकिंग पुलिस को निर्देश देते हुए कहा कि आयोजन के दौरान आमजन को कोई परेशानी प्रकर न उठनी पड़े। इसके लिए निर्धारित समय के दौरान आसपास से ट्रेकिंग को भी डायवर्ट किया जाए व इस संबंध में ट्रेकिंग पुलिस एडवाइजरी भी जारी करें। उन्होंने बताया कि रन को मुख्यातिथि

सरस मेले के आयोजन स्थल से शुरू होगा। होटल लेमन ट्री, मिलेनियम सिटी मेट्रो स्टेशन के अंडरपास से होते हुए झंडसा कट से यू टर्न लेकर लेजर वैली ग्राउंड में खतम होगी। पांच किलोमीटर की रस में शामिल होने वाले धावक इस रूट में सेक्टर-44 की रेड लाइट से यू टर्न ले सकते हैं।

उन्होंने ट्रेकिंग पुलिस को निर्देश देते हुए कहा कि आयोजन के दौरान आमजन को कोई परेशानी प्रकर न उठनी पड़े। इसके लिए निर्धारित समय के दौरान आसपास से ट्रेकिंग को भी डायवर्ट किया जाए व इस संबंध में ट्रेकिंग पुलिस एडवाइजरी भी जारी करें। उन्होंने बताया कि रन को मुख्यातिथि

सरस मेले के आयोजन स्थल से शुरू होगा। होटल लेमन ट्री, मिलेनियम सिटी मेट्रो स्टेशन के अंडरपास से होते हुए झंडसा कट से यू टर्न लेकर लेजर वैली ग्राउंड में खतम होगी। पांच किलोमीटर की रस में शामिल होने वाले धावक इस रूट में सेक्टर-44 की रेड लाइट से यू टर्न ले सकते हैं।



## पेट्रोल और डीजल कीमतें अपरिवर्तित

एजेंसी नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी लौटने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम आज अपरिवर्तित रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर सामाहिक पर अमेरिकी क्रूड 1.01 प्रतिशत चढ़कर 68.06 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। इसी तरह लंदन ब्रेट क्रूड 1.02 प्रतिशत की तेजी के साथ 72.15 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

## भारती एयरटेल का मुनाफा 168 प्रतिशत उछला

नयी दिल्ली। दूसरे चार सेवार्थ प्रदान करने वाली प्रमुख कंपनी भारती एयरटेल ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 3593 करोड़ रुपये का शुद्ध आय अर्जित की है जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही की 1341 करोड़ रुपये की तुलना में 168 प्रतिशत अधिक है। कंपनी के प्रबंध निदेशक गोपाल विहल ने निदेशक मंडल की बैठक के बाद यहां जारी वित्तीय लेखाजोखा में कहा कि जुलाई-सितंबर 2024 की तिमाही में कंपनी का कुल परिचालन राजस्व 41473 करोड़ रुपये रहा है जो वित्त वर्ष 2023-24 की समान अवधि के 37044 करोड़ रुपये की तुलना में 12 प्रतिशत अधिक है। उन्होंने कहा कि भारतीय बाजार में उसके कुल 40.6 करोड़ ग्राहक हैं जो पिछले वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही के 38.94 करोड़ ग्राहकों की तुलना में 4.4 प्रतिशत अधिक है। इसी तरह से वैश्विक स्तर पर कंपनी के कुल ग्राहकों की संख्या अभी 56.13 करोड़ है जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि की 54 करोड़ से 4.3 प्रतिशत अधिक है। श्री विहल ने कहा - हमने एक और तिमाही में ठोस प्रदर्शन किया, जिसमें भारत का राजस्व 8.7 प्रतिशत बढ़ा। अफ्रीका ने भी 7.7 प्रतिशत निरंतर मुद्रा वृद्धि के साथ मजबूत राजस्व वृद्धि गति बनाए रखी। हमने 233 रुपये का उद्योग में अग्रणी एआरपीयू दर्ज किया। 42 लाख स्मार्टफोन ग्राहकों को जोड़ने में मदद मिली है। हम 2,000 से अधिक शहरों में एफडब्ल्यूए पेशकशों के साथ अपने वाई फाई कवरेज का विस्तार करना जारी रखते हैं।

## मडियों में 54 लाख टन धान की खरीद

चंडीगढ़। पंजाब के खाद्य, सिविल सप्लाई और उपभोक्ता मामले मंत्री लाल चंद कटारूचक ने बताया कि आज यानी सोमवार तक राज्य की मडियों में 59,79,723.94 टन धान की आमद हुई है जिसमें से 54,98,389.72 टन धान की खरीद की जा चुकी है। श्री कटारूचक ने बताया कि लिफ्टिंग प्रक्रिया में भी तेजी आई है और अतः तक कुल 23,30,117.58 टन धान की लिफ्टिंग हो चुकी है और 27 अक्टूबर को एक दिन में रिकॉर्ड 4.13 लाख टन धान की लिफ्टिंग की गई है। उन्होंने बताया कि किसानों के खातों में 7640.55 करोड़ रुपए का भुगतान किया जा चुका है ताकि किसान अपने धान में दीपावली का त्योहार शानदार ढंग से मना सकें। उन्होंने डी.एफ.एस.सी.जो खरीद और लिफ्टिंग प्रक्रिया में तेजी लाने के निर्देश देते हुए मंत्री ने कहा कि उन्हें पूरा धरोसा है कि सभी के साझा प्रयासों से मौजूदा खरीद सौजन्य निर्बाध ढंग से सफलतापूर्वक संपूर्ण किया जाएगा।

## राजकोषीय मजबूती की दिशा में केंद्र की प्रगति के साथ पटरी गड़बड़ा रही है: एमके ग्लोबल फाइनेंशियल

मुंबई। निवेश, धन प्रबंधन और बाजार अनुसंधान सेवा बाजार की प्रमुख कंपनी एमके ग्लोबल फाइनेंशियल सर्विसेज के एक अध्यक्ष ने बताया कि सरकारी घाटा कम करने की दिशा में राज्यों और केंद्र सरकार की चाल में ताल मेल गड़बड़ा रहा है और प्रमुख राज्यों में चुनाव से पहले लोक लुभावन वादों से चालू वित्त वर्ष में राजकोषीय घाटा बढ़ने का जोखिम उंचा हो गया है। एमके ग्लोबल के विश्लेषकों ने एक एक मीडिया वेबिनार में कहा कि उनके विश्लेषण के अनुसार केंद्र और राज्यों की राजकोषीय मजबूती की राह पर समन्वय के समक्ष कुछ जोखिम उभर रहे हैं। राज्यों द्वारा चुनाव के कारण किए गए लोकलुभावन खर्च अभूतपूर्व हैं और इससे वित्त वर्ष 2024-25 में राजकोषीय फिसलन का जोखिम बढ़ गया है। इससे राज्यों द्वारा अधिक उधारों की ली जा सकती है।

## राजमार्ग, रेलमार्ग की सात परियोजनाओं का पीएम गति शक्ति के अंतर्गत मूल्यांकन पूरा

मुंबई। पीएम गति शक्ति पहल के तहत नेटवर्क प्लानिंग ग्रुप (एनपीजी) ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में राजमार्गों के विकास एवं उन्नयन से संबंधित दो परियोजनाओं के साथ सड़क और रेलमार्ग विकास की कुल सात परियोजनाओं का संबंधित विभागों के पूर्ण समन्वय के सिद्धांत के आधार पर मूल्यांकन का काम पूरा कर लिया है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की एक विज्ञापित के अनुसार एनपीजी की 82वीं बैठक में मूल्यांकन की इस प्रक्रिया में मल्टीमैडल परिवहन प्रणालियों की अवसंरचना का एकीकृत विकास, आर्थिक और सामाजिक सहमति के लिए अंतिम-मिल कनेक्टिविटी, इंटरमॉडल कनेक्टिविटी और समन्वित परियोजना कार्यान्वयन की योजना शामिल है।

एजेंसी नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में आज तीन कंपनियों ने लिस्टिंग के जरिये दस्तक दी। इन तीनों कंपनियों के शेयर प्रीमियम के साथ लिस्ट होने में सफल रहे। लिस्टिंग के बाद एक कंपनी के शेयर खरीदारी के सपोर्ट से अपर सर्किट लेवल तक पहुंच गए। वहीं दो कंपनियां शुरुआती उतार चढ़ाव का सामना करने के बाद फिलहाल बढ़त के साथ कारोबार करती नजर आ रही हैं। यानी आज लिस्ट हुई तीनों कंपनियों के आईपीओ निवेदक फायदे में बने हुए हैं। प्रीमियम सेक्टर एंटरप्राइज और रिटेली सेक्टर के शेयरों में जम कर खरीदारी होती रही। इसी तरह मेटल, जिससे शेयर बाजार मजबूती हासिल करने में सफल रहा। आज के

## दूसरी तिमाही में 8 गुना बढ़ गया अडाणी इंटरप्राइजेज का मुनाफा, मजबूत तिमाही नतीजे से शेयर को मिली तेजी

एजेंसी नई दिल्ली। अडाणी ग्रुप की फ्लैगशिप कंपनी अडाणी इंटरप्राइजेज ने सितंबर में खत्म हुई तिमाही के दौरान शानदार प्रदर्शन किया है। मौजूदा वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में कंपनी के शुद्ध मुनाफे में करीब 8 गुना की बढ़ोतरी हुई। इस अवधि में कंपनी के रेवेन्यू में भी लगभग 16 प्रतिशत की तेजी आ गई। अडाणी इंटरप्राइजेज के शानदार तिमाही नतीजे का असर स्टॉक मार्केट में इसके शेयर पर भी नजर आया। बीएसई में कंपनी के शेयर 1.46 प्रतिशत की मजबूती के साथ 2,841.45 रुपये के स्तर पर बंद हुए, जबकि कंपनी के नतीजे अपने के पहले इस्तेमाल के साथ 2.37 प्रतिशत टूट कर 2,734 रुपये के स्तर तक लुढ़क गए थे।

कंपनी के तिमाही नतीजे की बात करें तो सितंबर में खत्म हुई

तिमाही के दौरान अडाणी इंटरप्राइजेज का शुद्ध मुनाफा 8 गुना बढ़कर 1,742 करोड़ रुपये हो



गया कंपनी द्वारा की गई एक्सचेंज फाइलिंग में बताया गया है कि इस तिमाही के दौरान कंपनी का ऑपरेशनल रेवेन्यू भी 16 प्रतिशत बढ़कर 22,608 करोड़ रुपये के

स्तर पर पहुंच गया। रेवेन्यू ग्रोथ की वजह से ही कंपनी के मुनाफे में भी बढ़ोतरी हुई।

अगर अडाणी इंटरप्राइजेज के शेयरों की बात की जाए तो पिछले 1 साल की अवधि में कंपनी ने अपने शेयर होल्डर्स को भी शानदार मुनाफा कराया है। पिछले साल

नवंबर की 20 तारीख को अडाणी इंटरप्राइजेज के शेयर 52 सप्ताह के सबसे निचले स्तर 2,142.30 रुपये पर थे। इस स्तर से कंपनी के शेयर ने रफ्तार पकड़ी और अगले 7 महीने में 3 जून को 74 प्रतिशत से अधिक उछल कर 3,743 रुपये के स्तर पर पहुंच गया। कंपनी के शेयरों के लिए पिछले 52 सप्ताह के दौरान ये सबसे ऊंचा स्तर रहा। इसके बाद कंपनी के शेयरों की रफ्तार में गिरावट आ गई। फिलहाल अडाणी इंटरप्राइजेज के शेयर 52 सप्ताह के सर्वोच्च स्तर से करीब 24 प्रतिशत की गिरावट के साथ कारोबार कर रहे हैं। हालांकि मार्केट एक्सपर्ट्स का मानना है कि दूसरी तिमाही में कंपनी ने जैसा शानदार प्रदर्शन किया है, उससे एक बार फिर इसके शेयर मूल्य में तेजी आने की संभावना बन गई है।

## एसके आटोमोटिव का मुनाफा 63 प्रतिशत बढ़ा

एजेंसी नई दिल्ली। दोपहिया वाहनों के लिए ब्रेक शु और एडवांस ब्रेकिंग सिस्टम बनाने वाली कंपनी एसके आटोमोटिव लिमिटेड ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही 67 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया है जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के 41 करोड़ रुपये की तुलना में 63 प्रतिशत अधिक है। कंपनी ने आज यहां जारी वित्तीय लेखाजोखा में कहा कि सितंबर 2024 को समाप्त इस तिमाही में कंपनी की कुल आय 976 करोड़ रुपये रही है जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही के 798 करोड़ रुपये की तुलना में 22.2 प्रतिशत अधिक है। कंपनी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कुलदीप सिंह राठी ने कहा - करौली में ईगा विनिर्माण सुविधा तेजी से बढ़ रही है। बढ़ी हुई अर्थव्यवस्थाएं और परिचालन क्षमताएं हमें बेहतर परिणाम देने में लाभ पहुंचा रही हैं। हमने इस संयंत्र से सकारात्मक मार्जिन हासिल करना शुरू कर दिया है। इसके अलावा,

बेंगलुरु में हमारे नए संयंत्र के लिए निर्माण कार्य योजना के अनुसार अच्छी तरह से आगे बढ़ रहा है। साथ ही, कैपिटल खपत के लिए हरियाणा के सिरसा में सौर ऊर्जा संयंत्र का कमीशनिंग कार्य पूरा होने वाला है। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं, हमें



उम्मीद है कि वित्त वर्ष 25 की अगली तिमाहियों में उद्योग की वृद्धि को बेहतर बनाने की प्रवृत्ति बनी रहेगी। हम उम्मीद करते हैं कि आगामी त्योहारी सीजन के आगमन पर मौजूदा सकारात्मक बाजार भावनाओं के साथ दोपहिया क्षेत्र में विकास की गति वर्ष के शेष भाग के लिए जारी रहेगी। हम अपने निवेशकों और निवेशकों के लिए मूल्य सृजन की दिशा में योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

## तेल कंपनियों ने पेट्रोल पंप डीलरों को सौगात दी, बढ़ाया कमीशन

एजेंसी नई दिल्ली। धनतेरस पर सार्वजनिक क्षेत्र की तेल विपणन कंपनियों (ओएमसी) ने पेट्रोल-डीजल पंप डीलरों को बड़ी सौगात दी है। तेल कंपनियों ने डीलरों का कमीशन बढ़ाने का ऐलान किया है। तेल कंपनियों ने कहा कि पेट्रोल पंप डीलरों का कमीशन बढ़ाने के बाद भी डीजल-पेट्रोल के दाम नहीं बढ़ेंगे। डीलरों का नया कमीशन 30 अक्टूबर से लागू होगा।

इंडियन ऑयल ने 'एक्स' पोस्ट पर जारी बयान में कहा कि लंबे समय से चल रहे मुकदमों के बाद डीलर मार्जिन में संशोधन (30 अक्टूबर, 2024 से प्रभावी) करने की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। इसी बीच केंद्रीय पेट्रोलियम एवं नेचुरल गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने एक्स पोस्ट पर जारी बयान में कहा कि 'तेल विपणन कंपनियों की ओर से पेट्रोल और डीजल पंप डीलरों को देय डीलर

बढ़ाने का संकल्प मजबूत होगा। इंडियन ऑयल ने कहा कि हम अपने साझा लक्ष्यों और दृष्टिकोण की दिशा में काम करते हुए अपने भागीदारों और उनकी टीमों को निरंतर सफलता की कामना करते हैं। इसी बीच केंद्रीय पेट्रोलियम एवं नेचुरल गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने एक्स पोस्ट पर जारी बयान में कहा कि 'तेल विपणन कंपनियों की ओर से पेट्रोल और डीजल पंप डीलरों को देय डीलर

कमीशन बढ़ाने की घोषणा का स्वागत करता हूं। उन्होंने कहा कि दूरदराज के स्थानों (तेल विपणन कंपनियों के पेट्रोल-डीजल डिपो से दूर) स्थित उपभोक्ताओं को लाभ पहुंचाने के लिए अंतर-राज्य माल ढुलाई को युक्तिपूर्वक बनाने के निर्णय का स्वागत करता हूं, जिसके चलते देश के कई हिस्सों में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कमी आएगी।

## सीबीडीटी ने थोक कारोबार के लिए 'सहनशीलता' दायरा को किया अधिसूचित

एजेंसी नई दिल्ली। आयातक विभाग का नियमन करने वाले केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने आकलन वर्ष 2024-25 के लिए अंतरराष्ट्रीय और निरिदित घरेलू लेन-देन के दौरान 'आर्मस लेंथ' मूल्य और हस्तांतरण कीमत (ट्रांसफर प्राइसिंग) के बीच अंतर के लिए 'सहनशीलता' दायरे को अधिसूचित कर दिया है। वित्त मंत्रालय ने जारी बयान में कहा कि सीबीडीटी ने 18 अक्टूबर को जारी अधिसूचना में आकलन वर्ष 2024-25 के लिए सहनशीलता सीमा को अधिसूचित किया है। सहनशीलता सीमा की अधिसूचना करदाताओं को निश्चितता प्रदान करेगी और हस्तांतरण मूल्य निर्धारण में लेन-देन के मूल्य निर्धारण से जुड़े जोखिम की धारणा को कम करेगी। सीबीडीटी की जारी अधिसूचना के मुताबिक सहनशीलता दायरे को पिछले साल

की तरह 'थोक कारोबार' के लिए एक फीसदी और अन्य सभी मूल्य का निर्धारण संबंधित कंपनियों है कि कर कानूनों के तहत हस्तांतरण एक फीसदी और अन्य सभी मूल्य का निर्धारण संबंधित कंपनियों

करदाताओं के लिए तीन फीसदी रखा गया है। सीबीडीटी के मुताबिक 'थोक कारोबार' को कुछ शर्तों के अधीन वस्तुओं के व्यापार के एक अंतरराष्ट्रीय लेन-देन या निरिदित घरेलू लेन-देन के तौर पर परिभाषित किया जाएगा। उल्लेखनीय

## जियो फाइनेंस की स्मार्टगोल्ड योजना लॉन्च, मात्र 10 रुपये में खरीद सकते हैं डिजिटल सोना

नई दिल्ली। दिवाली से पहले धनतेरस के मौके पर जियो फाइनेंस सर्विसेज लिमिटेड ने स्मार्टगोल्ड योजना लॉन्च की है। स्मार्टगोल्ड योजना में डिजिटली सोने की खरीद के साथ सोने में किए गए निवेश को भुनाया भी जा सकता है। सोने में किए गए निवेश से मिली स्मार्टगोल्ड यूनित किसी भी वक्त नकद, सोने के सिक्कों या आभूषणों में बदला जा सकता है। लिक्विड यह है कि स्मार्टगोल्ड में हजारों या लाखों रुपये के निवेश की जरूरत नहीं है, मात्र 10 रु में भी सोना खरीदा जा सकता है। जियो फाइनेंस एप पर स्मार्टगोल्ड योजना में सोने में निवेश के दो विकल्प ग्राहक के पास उपलब्ध हैं। पहला वह निवेश की कुल राशि तय कर सकता है, दूसरा वह सोने के भार यानी ग्राम में निवेश कर सकता

है। भौतिक सोने की डिग्रीवरी 0.5 ग्राम और उससे अधिक की होल्डिंग पर ही होगा। यह 0.5 ग्राम, 1 ग्राम, 2 ग्राम, 5 ग्राम और 10 ग्राम के मूल्यवर्ग में उपलब्ध होगा। ग्राहक चाहे तो एप पर सीधा सोने के सिक्के खरीद कर होम डिलिवरी की सुविधा का लाभ भी उठा सकता है। ग्राहक का सोना सुरक्षित रखने के लिए, निवेश के बाद स्मार्टगोल्ड में निवेश के बराबर 24 कैरेट का सोना खरीदा जाएगा और उसे एक इश्योर्ड वॉल्ट यानी तिजोरी में रखा जाएगा। इससे सोने की संभाल से तो मुक्ति मिलेगी ही, चोरी-चकारी का डर भी नहीं सताएगा। जियो फाइनेंस एप पर जब चाहे तब सोने की लाइव मार्केट कीमत देखी जा सकती है। स्मार्टगोल्ड दरअसल डिजिटल सोना खरीदने का एक सुविधाजनक, सुरक्षित और सहज तरीका है।

## जन औषधि देश की सबसे बड़ी फार्मसी रिटेल चैन है जो लगभग 10 से 12 लाख लोगों को प्रतिदिन सस्ती दवाइयां उपलब्ध कराती है

एजेंसी नई दिल्ली। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं श्री जगत प्रकाश नड्डा, माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण और रसायन एवं उर्वरक मंत्री, द्वारा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) नई दिल्ली में को देश के सबसे बड़े जन औषधि केंद्र का उद्घाटन किया। जन औषधि देश की सबसे बड़ी फार्मसी रिटेल चैन है जो लगभग 10 से 12 लाख लोगों को प्रतिदिन सस्ती और अच्छी दवाइयां उपलब्ध कराती है। प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना (पीएमबीजेपी) के अंतर्गत 29 अक्टूबर, 2024 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली के परिसर में जन औषधि केंद्र का उद्घाटन कर एक

और ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की गयी। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा इस केंद्र का उद्घाटन किया गया। इस समारोह में श्री जगत प्रकाश नड्डा, माननीय केंद्रीय रसायन एवं उर्वरक और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री भी उपस्थित रहे। इस केंद्र का मुख्य उद्देश्य विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए एम्स आने वाले मरीजों को सस्ती और गुणवत्तापूर्ण दवाइयां उपलब्ध कराना है। इस जन औषधि केंद्र की स्थापना फार्मास्यूटिकल्स एंड मेडिकल

गुणवत्तापूर्ण दवाइयां उपलब्ध कराना है। इस जन औषधि केंद्र की स्थापना फार्मास्यूटिकल्स एंड मेडिकल

2,047 गुणवत्ता वाली दवाइयों के साथ-साथ 300 सज्जिक उपकरण भी बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। ये सभी उत्पाद बाजार में बिक रहे उत्पादों की तुलना में 50 से 90 तक सस्ते हैं। पिछले 10 वर्षों में इस कल्याणकारी परियोजना के माध्यम से नागरिकों द्वारा लगभग 30,000 करोड़ रुपये की बचत की गई है। जन औषधि की दवाएं चिकित्सीय समूहों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करती हैं जिसमें हृदय रोग, मधुमेह, संक्रामक रोग, एलर्जी, जटरात्र संबंधित समस्याएं, कैंसर उपचार न्यूट्रास्यूटिकल्स शामिल हैं। इस परियोजना की यह पहल विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए एम्स, नई दिल्ली में आने वाले हजारों मरीजों के लिए लाभकारी होगी।

## राजमार्ग, रेलमार्ग की सात परियोजनाओं का पीएम गति शक्ति के अंतर्गत मूल्यांकन पूरा

मुंबई। पीएम गति शक्ति पहल के तहत नेटवर्क प्लानिंग ग्रुप (एनपीजी) ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में राजमार्गों के विकास एवं उन्नयन से संबंधित दो परियोजनाओं के साथ सड़क और रेलमार्ग विकास की कुल सात परियोजनाओं का संबंधित विभागों के पूर्ण समन्वय के सिद्धांत के आधार पर मूल्यांकन का काम पूरा कर लिया है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की एक विज्ञापित के अनुसार एनपीजी की 82वीं बैठक में मूल्यांकन की इस प्रक्रिया में मल्टीमैडल परिवहन प्रणालियों की अवसंरचना का एकीकृत विकास, आर्थिक और सामाजिक सहमति के लिए अंतिम-मिल कनेक्टिविटी, इंटरमॉडल कनेक्टिविटी और समन्वित परियोजना कार्यान्वयन की योजना शामिल है।

## तीन कंपनियों ने लिस्टिंग के जरिये दी स्टॉक मार्केट में दस्तक, शुरुआती कारोबार में आईपीओ निवेशकों को मुनाफा

एजेंसी नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में आज तीन कंपनियों ने लिस्टिंग के जरिये दस्तक दी। इन तीनों कंपनियों के शेयर प्रीमियम के साथ लिस्ट होने में सफल रहे। लिस्टिंग के बाद एक कंपनी के शेयर खरीदारी के सपोर्ट से अपर सर्किट लेवल तक पहुंच गए। वहीं दो कंपनियां शुरुआती उतार चढ़ाव का सामना करने के बाद फिलहाल बढ़त के साथ कारोबार करती नजर आ रही हैं। यानी आज लिस्ट हुई तीनों कंपनियों के आईपीओ निवेदक फायदे में बने हुए हैं। प्रीमियम सेक्टर एंटरप्राइज और रिटेली सेक्टर के शेयरों में जम कर खरीदारी होती रही। इसी तरह मेटल, जिससे शेयर बाजार मजबूती हासिल करने में सफल रहा। आज के

लेकिन आज इसकी लिस्टिंग 110 रुपये के स्तर पर हुई। लिस्टिंग के थोड़ी देर बाद ही खरीदारी के सपोर्ट से अपर सर्किट लेवल तक पहुंच गए। वहीं दो कंपनियां शुरुआती उतार चढ़ाव का सामना करने के बाद फिलहाल बढ़त के साथ कारोबार करती नजर आ रही हैं। यानी आज लिस्ट हुई तीनों कंपनियों के आईपीओ निवेदक फायदे में बने हुए हैं। प्रीमियम सेक्टर एंटरप्राइज और रिटेली सेक्टर के शेयरों में जम कर खरीदारी होती रही। इसी तरह मेटल, जिससे शेयर बाजार मजबूती हासिल करने में सफल रहा। आज के

के बीच सभ्यक्रिफ़ान के लिए खुला था। आईपीओ के तहत 66.02 लाख नए शेयर जारी किए गए हैं। ये

बनाने वाली कंपनी दानिशा पावर के शेयर की भी 50 प्रतिशत प्रीमियम के साथ लिस्टिंग हुई। आईपीओ के तहत कंपनी ने 380 रुपये के भाव पर शेयर जारी किए थे। आज नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के एमएसई प्लेटफॉर्म पर कंपनी के शेयर 570 रुपये के स्तर पर लिस्ट हुए। लिस्टिंग के बाद इस शेयर में उतार चढ़ाव शुरू हो गया। बिकवाली के दबाव में ये शेयर 541.50 रुपये के लोअर सर्किट लेवल तक पहुंच गया लेकिन इसके बाद खरीदारी शुरू होने पर इसमें तेजी आ गई। दिन का पहला कारोबारी सत्र खत्म होने के बाद दोपहर 12 बजे दानिशा पावर के शेयर 218.50 रुपये की मजबूती के साथ 598.50 रुपये के स्तर पर कारोबार कर रहे थे। इस तरह अभी तक इस कंपनी के आईपीओ निवेशकों को 57.50 प्रतिशत का फायदा हो चुका है।

एजेंसी नई दिल्ली। देश की प्रमुख कार निमाता कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) ने चालू वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही (जुलाई-सितंबर) के नतीजे का ऐलान कर दिया है। जुलाई-सितंबर तिमाही में कंपनी का एकीकृत शुद्ध लाभ सालाना आधार पर 18 फीसदी घटकर 3,102 करोड़ रुपये रह गया है। कंपनी ने शेयर बाजार को बताया कि जुलाई-सितंबर तिमाही में मारुति सुजुकी इंडिया का एकीकृत शुद्ध लाभ 18.06 फीसदी घटकर 3102.50 करोड़ रुपये रह गया जबकि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में यह 3786.20 करोड़ रुपये रहा था। एमएसआई के मुताबिक दूसरी तिमाही में उसकी बिक्री 0.14 फीसदी बढ़कर 35586.50 करोड़ रुपये पर पहुंच गई है जबकि सितंबर 2023 को

## मारुति सुजुकी का मुनाफा दूसरी तिमाही में 18 फीसदी घटकर 3,102 करोड़ रुपये

समाप्त समान तिमाही में यह 35535.20 करोड़ रुपये रही थी। तिमाही के दौरान उसकी परिचालन आय बढ़कर 37,449 करोड़ रुपये

शेयर बाजारों को भेजी सूचना में एमएसआई ने बताया कि चालू वित्त वर्ष 2024-25 की जुलाई-सितंबर

## शुरुआती गिरावट के बाद संभला शेयर बाजार, सेंसेक्स और निफ्टी ने निचले स्तर से की शानदार रिकवरी

एजेंसी नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार आज लगातार दूसरे दिन मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहा। आज के कारोबार की शुरुआत सपाट स्तर पर हुई थी। दिन के पहले स्तर के कारोबार में बिकवाली के दबाव की वजह से शेयर बाजार में जोरदार गिरावट आ गई, लेकिन दूसरे सत्र में खरीदारों ने मोर्चा संभाल लिया, जिससे शेयर बाजार मजबूती हासिल करने में सफल रहा। आज के

कारोबार में सेंसेक्स ने निचले स्तर से 1,029 अंक तक की छलांग लगाई। इसी तरह निफ्टी भी निचले स्तर से 343 अंक से अधिक उछल गया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.46 प्रतिशत और निफ्टी 0.52 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए। आज के कारोबार में बैंकिंग, फिन्टेक सेक्टर एंटरप्राइज और रिटेली सेक्टर के शेयरों में जम कर खरीदारी होती रही। इसी तरह मेटल, जिससे शेयर बाजार मजबूती हासिल करने में सफल रहा। आज के

इयूरॉबल, एफएमसीजी और ऑयल एंड गैस इंडेक्स भी मजबूती के साथ बंद हुए। दूसरी ओर आईटी, ऑटोमोबाइल, हेल्थकेयर और टेक इंडेक्स गिरावट के साथ बंद हुए। ब्रॉड मार्केट में भी आज लगातार खरीदारी होती रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकेप इंडेक्स 0.74 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स 0.71 प्रतिशत की बढ़त के साथ, आज के कारोबार का अंत किया

आज शेयर बाजार में आई मजबूती के बावजूद स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में 6 लाख करोड़ रुपये से अधिक की कमी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद कर 434.91 लाख करोड़ रुपये (अस्थायी) हो गया। जबकि पिछले कारोबारी दिन यानी सोमवार को इन्फो मार्केट कैपिटलाइजेशन 441.20 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों

को आज के कारोबार से करीब 6.29 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हो गया। आज दिनभर के कारोबार में बीएसई में 3,991 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 2,243 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, एनएसई में 1,624 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं, 124 शेयर बिना किसी उतार-चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,499 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,512 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और

987 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 16 शेयर बढ़त के साथ और 14 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। जबकि निफ्टी में शामिल 50 शेयरों में से 28 शेयर हरे निशान में और 22 शेयर लाल निशान में बंद हुए। बीएसई का सेंसेक्स आज 32.16 अंक की मामूली बढ़त के साथ 80,037.20 अंक के स्तर पर खुला। बाजार खुलने के बाद बिकवाली का दबाव

बन जाने की वजह से ये सूचकांक 583.69 अंक टूट कर 79,421.35 अंक तक गिर गया। हालांकि इसके बाद तेजियों ने लिवलाली का जोर बना दिया, जिससे ये सूचकांक निचले स्तर से 1,029.13 अंक उछल कर 445.44 अंक की मजबूती के साथ 80,450.48 अंक तक पहुंच गया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 363.99 अंक की तेजी के साथ 80,369.03 अंक के स्तर पर बंद

हुआ। सेंसेक्स के विपरीत एनएसई के निफ्टी ने आज 10.30 अंक की कमजोरी के साथ 24,328.85 अंक के स्तर से कारोबार की शुरुआत की। बाजार खुलने के बाद बिकवाली का दबाव बढ़ जाने की वजह से ये सूचकांक 198.30 अंक की गिरावट के साथ 24,140.85 अंक तक गिर गया। हालांकि इसके बाद खरीदारी का सपोर्ट मिलने की वजह से इस सूचकांक की चाल में तेजी आ गई।



## एक हफ्ते में ही हेयर कलर पड़ने लगता है फीका, आप ये गलतियां तो नहीं कर रहे



समय से पहले बालों में आने वाली सफेदी को छिपाने के लिए या फिर स्टाइलिश लुक के लिए हेयर कलर का यूज किया जाता है। पर अगर ये एक हफ्ते में ही हटने लग जाए तो फीकापन लुक को और बिगाड़ देता है। यहाँ हम हेयर कलर से जुड़े कुछ आम गलतियां बताते जा रहे हैं जिन्हें लोग जाने-अनजाने में दोहराते हैं। आपको लग रहा है कि आपका रंगन बढ़ रहा है तो आप अपने फुड में परिवर्तन कर लें। आप ऐसे फुड का सेवन करें जिसमें कैल्शियम तो कम हो लेकिन पोषक तत्वों को कोई कमी न हो।

पहले प्रीमेच्योर ग्रे हेयर को छिपाने के लिए बालों में कलर किया जाता था। लेकिन अब चीजें बदल गई हैं। बालों को स्टाइलिश बनाने के लिए मार्केट में कई तरह के युनिक कलर मौजूद हैं। इनमें वैरायटी के साथ ये महंगे से लेकर सस्ते दाम में भी मिल जाते हैं। अपने लुक के साथ एक्सपेरिमेंट करने के लिए महिलाएं और पुरुष अलग-अलग हेयर कलर को ट्राई करते हैं। हालांकि, कई बार अच्छे, कालिटी और महंगे सैलून या पार्लर में हेयर कलर करवाने के बाद भी ये टिकता नहीं है। मोटा खर्च करने के बाद भी एक हफ्ते में हेयर कलर फीका पड़ जाते तो ये अपने आप में बेहद परेशान करने वाला है। माना जाता है कि हेयर कलर के फीका पड़ने का एक बड़ा कारण कुछ गलतियां होती हैं जिन्हें लोग जाने-अनजाने में रोजाना दोहराते हैं।

बालों का कलर अगर समय से पहले फीका नजर आने लगे तो पूरा लुक तक बर्बाद हो जाता है। चलिए आपको बताते हैं कि आप किन गलतियों को दोहराकर समय से पहले हेयर कलर को फीका कर देते हैं। जानें इनके बारे में...

**गर्म पानी का यूज**  
बालों को हेयर कलर से चमकदार बनाने के बाद इनकी एक्स्ट्रा केयर की जरूरत होती है। कुछ लोग ठंड के दौरान बालों में कलर करने के बाद इन्हें वॉश करने के लिए गर्म पानी का यूज करते हैं। हेयर पर हॉट वाटर का यूज रंग को फीका करने लगता है। हद से ज्यादा गर्म पानी का इस्तेमाल बालों के नेचुरल कलर तक को फेड करने लगता है। इतना नहीं बालों में इन्हें पानी या दूसरी प्रोडक्ट्स भी बूझ जाती हैं। हेयर कलरिंग हो या नहीं बालों को हल्का गर्म या गुनगुने पानी से ही धोना चाहिए।

**हीटिंग टूल्स हैं नुकसानदायक**  
कभी-कभी महिलाएं बालों को कलर कराने के बाद इन्हें और स्टाइलिश बनाने के लिए हीटिंग टूल्स से इन्हें स्ट्रेट या कर्ली लुक देने की कोशिश करती हैं। एक्सपर्ट्स का मानना है कि हीट होने की वजह से भी हेयर कलर फीका पड़ने लगता है। कलर्ड हेयर हो या नॉर्मल हमें इस तरह के स्टाइलिंग टूल्स का कम से कम यूज करना चाहिए। ये बालों को कमजोर बनाने के अलावा रूखा भी बनाते हैं। हेयर स्ट्रेट करने के बाद इस प्रोसेस को अवसर फॉलो करना पड़ता है। लेकिन लंबे समय बाद बाल झाड़ू जैसे तक नजर आने लगते हैं। ऐसे में पूरी लुक बर्बाद हो जाती है।

**गलत कलर को चुनना**  
हेयर कलर करवा रहे हैं तो ध्यान रहे कि जो प्रोडक्ट आप चुन रहे हैं वो किसलिए साबित होगा। कभी-कभी लोग सस्ते के चक्कर में ऐसे प्रोडक्ट को बालों में लगाते हैं तो समय से पहले फीका तो पड़ता ही है साथ ही बालों को भी कमजोर बना देता है। जरूरी नहीं है कि महंगा प्रोडक्ट भी बेस्ट रिजल्ट दे पर ज्यादातर मामलों में ये सही साबित होता है। गलत प्रोडक्ट का यूज बालों की हेल्थ पर लंबे समय तक बुरा असर डाल सकता है।

**सही देखभाल है जरूरी**  
हेयर कलरिंग के बाद बालों को देखभाल भी जरूरी है। महिलाएं या पुरुष नॉर्मल शैंपू से हेयर वॉशिंग करते हैं जबकि एक्सपर्ट के बताए कलर-प्रोटेक्टिव शैंपू का यूज करते रहता है। कहा जाता है कि ये शैंपू बालों के कलर को समय पहले फीका होने से बचाता है। बालों की शाइन को बरकरार रखने के लिए अच्छे ब्रांड वाले शैंपू का ही इस्तेमाल करें।

# बढ़ा-चढ़ाकर पेश की जा रही है नियंत्रण रेखा पर भारत-चीन समझौते की 'सफलता'

## भारत को विवादित क्षेत्रों पर चीन के अनुवर्ती कदमों पर बारीकी से नजर रखनी होगी

भारत को विवादित क्षेत्रों पर चीन के अनुवर्ती कदमों पर बारीकी से नजर रखनी होगी। सीमावर्ती क्षेत्रों में भारत के संबंध में चीन की नीति दो कदम आगे और एक कदम पीछे की है। विवादित क्षेत्रों से चीन की सैन्य उपस्थिति को वापस लेने को भारत की जीत के रूप में दिखाया जा रहा है, जबकि इस तथ्य को छिपाया जा रहा है कि कुछ नये क्षेत्र चीन के नियंत्रण में रह गये हैं। हालांकि पूर्वी लद्दाख में डेमचोक और देपसांग क्षेत्रों में संघर्ष और टकराव को लेकर भारत और चीन के बीच गतिरोध कम हो गया है, लेकिन तनाव पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है। 22-24 अक्टूबर को रूस के कज़ान में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से कुछ घंटे पहले जल्दबाजी में घोषित किये गये समझौते का उद्देश्य दोनों देशों के बजाय अंतरराष्ट्रीय दर्शकों को अधिक आकर्षित करना था। इस समझौते को द्विपक्षीय तनाव कम करने की तुलना में अंतरराष्ट्रीय रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के संदर्भ में अधिक देखा जाना चाहिए। भारत और चीन के बीच कुछ धूमधाम से घोषित किया गया समझौता सीमा विवाद को वास्तव में कम करने की तुलना में दिखावे के लिए अधिक है। यह रूस के कज़ान में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के संदर्भ में था, जिसका उद्देश्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन की राष्ट्रपति शी जिनपिंग की बैठक के दौरान होने वाली सहमति के लिए आधार तैयार करना था।

चीन का अतीत का ट्रैक रिकॉर्ड पिछली प्रतिबद्धताओं को अन्वेषित करने का रहा है। चीन ने चीज स्टाइलिंग की रणनीति अपनाई है, यानी छोटे क्षेत्रों पर कब्जा करके फिर से आगे बढ़ जाना। कई क्षेत्रों में, चीन ने भारतीय क्षेत्रों पर दावा किया है और यहाँ तक कि बड़े पैमाने पर गांव भी बसाये हैं।

उनमें से किसी भी संघर्ष का पूर्ण समाधान नहीं हुआ है या उस पर समुचित ध्यान भी नहीं दिया गया है। मौजूदा समझौते में अंतरराष्ट्रीय सीमा के केवल एक छोटे से हिस्से को संबोधित किया गया है, जहाँ दोनों देशों के बीच झड़पें हुई थीं, जिसके परिणामस्वरूप 20 भारतीय सैनिक मारे गये थे। कई अन्य क्षेत्रों में, चीनी चुसपैट का समाधान नहीं किया गया है। दोनों पक्षों द्वारा भारी संख्या में सैनिकों और



वाहनों, और अन्य सैन्य उपकरणों और बंदूकों को इकट्ठा करने के अलावा, एक और संघर्ष का तत्काल खतरा कम हो गया है। भारत को चीन से निपटने के लिए कई कदम उठाने होंगे। जब चीन की अर्थव्यवस्था गंभीर रूप से गिर रही थी और कुछ क्षेत्रों में उसके उद्योग सिक्कड़ रहे थे, तब भारत द्वारा चीनी व्यवसायों और भारत में निवेश के खिलाफ उठाये गये कदमों ने उसके हितों को नुकसान पहुंचाना शुरू कर दिया था। समग्र मजबूरियों का आकलन करने के लिए पूरे कदमों और जवाबी कदमों के संदर्भ को ध्यान में रखना होगा। अमेरिका और यूरोपीय संघ सहित प्रमुख पश्चिमी देशों द्वारा चीन के निर्यात को रोकना जा रहा था। यूरोपीय संघ के बाजारों में उच्च टैरिफ बाधाओं के साथ चीनी इलेक्ट्रिक वाहनों को बाहर रखने की कोशिश की जा रही थी। अमेरिका चीनी ईवी निर्माताओं के खिलाफ नये कदम उठा रहा था। चीन के पास युनिया भर में अपने ईवी को आगे बढ़ाने में बहुत बड़ा दांव है। इसके अलावा, अमेरिका ने चीन को महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी और वस्तुओं के हस्तांतरण के खिलाफ पूरी तरह से नाकाबंदी लगा दी है, जिसने कई मायनों में चीनी उद्योगों को पंगु बना दिया है। अमेरिका ने चीन को उच्च अंत औद्योगिक निर्यात को आपूर्ति से बाहर रखा है और यह कम से कम फिलहाल चीनी उद्योगों को नुकसान पहुंचा रहा है। चीन स्टील का सबसे बड़ा उत्पादक है और यह युनिया भर में अपना स्टील डंप कर रहा है। तथ्य यह

है कि चीन में हर साल उत्पादित होने वाले स्टील की भारी मात्रा को अवशोषित करने की क्षमता नहीं है। कई विकसित देश अपने घरेलू स्टील बाजारों से चीन को बाहर करना चाहते हैं। चीन ने अपनी अर्थव्यवस्था की वास्तविक स्थिति को छिपाने के लिए कई महत्वपूर्ण जानकारी जारी करना बंद कर दिया है। उदाहरण के लिए, चीन के सांख्यिकी ब्यूरो ने युवाओं की बेरोजगारी के आंकड़े देना बंद कर दिया है, ताकि युवाओं की बड़ी बेरोजगारी को छिपाया जा सके।

यह एक ऐसी नीति को आगे बढ़ाने का आदर्श समय था जो संबंधों को सामान्य बनाने की किसी भी प्रक्रिया के लिए चीन को वास्तव में कड़ी चोट पहुंचा सकती थी। भारत को चीन से बड़ी रियायतों के लिए काम करना चाहिए था। यह हमारा समय था क्योंकि आर्थिक रूप से भारत अब तक चीन की तुलना में कहीं बेहतर स्थिति में था। इसके अलावा, दक्षिण चीन सागर और ताइवान पर अपने कदमों को लेकर चीन को पश्चिमी ताकतों के गठबंधन का सामना करना पड़ रहा है। दक्षिण चीन सागर के आसपास कोई भी टीवी देश चीन के साथ नहीं है। फिलीपींस से लेकर मलेशिया तक के साथ उसके विवाद हैं। कुछ मायनों में, दक्षिण-पूर्व एशिया के कई देश चीन को संदेह की दृष्टि से देख रहे हैं।

लेकिन चीन और भारत दोनों के पास दिखावे के लिए मजबूरियां थीं। सिख आतंकवादी की हत्या में कथित सलिसता को लेकर भारत को पश्चिम द्वारा घेरा

जा रहा था, जिसका नेतृत्व कनेड और आशिक रूप से अमेरिका कर रहा था। चीन को कई मोर्चों पर अमेरिका से भारी दबाव का सामना करना पड़ रहा है। सबसे बढ़कर, कज़ान बैठक के मेजबान, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन से युद्ध के लिए पश्चिमी देशों के संयुक्त मोर्चे के खिलाफ ताकत दिखाने की कोशिश की। सऊदी अरब, मिस्र और ईरान के साथ-साथ युनिया के दो सबसे अधिक आबादी वाले देशों को ब्रिक्स बैठक, रूस को अलग-थलग करने में संयुक्त पश्चिमी ब्लॉक की विफलता का प्रदर्शन है।

इन देशों के बीच आंतरिक तनाव हैं और उनकी प्राथमिकताएं अलग-अलग हैं। हालांकि, ये सभी देश पश्चिमी प्रतिबंधों के बावजूद अपने संचालन के दायरे को दिखाते हुए रूस के हाथों खेल रहे थे। यह अमेरिका के नेतृत्व वाले पश्चिमी गठबंधन की संयुक्त ताकत के खिलाफ व्लादिमीर पुतिन का सबसे अच्छा हेफेर था। भारत को विवादित क्षेत्रों पर चीन के अनुवर्ती कदमों पर बारीकी से नजर रखनी होगी। सीमावर्ती क्षेत्रों में भारत के संबंध में चीन की नीति दो कदम आगे और एक कदम पीछे की है। विवादित क्षेत्रों से चीन की सैन्य उपस्थिति को वापस लेने को भारत की जीत के रूप में दिखाया जा रहा है, जबकि इस तथ्य को छिपाया जा रहा है कि कुछ नये क्षेत्र चीन के नियंत्रण में रह गये हैं। भारत को अपनी जमीन वापस लेने के लिए दृढ़ रहना चाहिए।

### संपादकीय

## जनगणना का बहुप्रतीक्षित फैसला

पूरे चार वर्ष के विलम्ब से ही सही, अंततः केन्द्र सरकार ने अगले साल यानी 2025 में देश में जनगणना करने का फैसला लिया है। यह काम कम से कम एक वर्ष तक चलेगा और आंकड़ों के परीक्षण, वार्डिकरण एवं अंतिम जनसांख्यिकीय के प्रकाशन में एक और साल लग जाने का अनुमान है। यानी 2026 तक ही यह काम पूरा हो सकेगा। वैसे लक्ष्य यही होगा कि 2028 तक होने वाले परिसीमन तक यह बड़ा काम पूर्ण हो जाए। सामान्य तौर पर जनगणना का उद्देश्य सामाजिक विकास के उद्देश्यों को ध्यान में रखा जाता है परन्तु लगता है कि केन्द्र सरकार ने 2029 में होने वाले लोकसभा चुनाव को सामने रखकर यह फैसला लिया है। 2025 में जनगणना करने के कारण अगली 2035 में होगी।

भारत में 1872 में पहली जनगणना हुई थी जिसे लॉर्ड मेयो की देखरेख में कराया गया था। हालांकि इस गणना का परीक्षण आदि हेनरी वाल्टर के अधीन हुआ था इसलिये उन्हें ही भारतीय जनगणना का जनक माना जाता है। ब्रिटिश उपनिवेश होने के कारण भारत में भी दशक

की शुरुआत में जनगणना कराने की व्यवस्था हुई। अब लगभग पूरी दुनिया में जनगणना का समय यही होता है।

इस परम्परा का निर्वाह करते हुए स्वतंत्र भारत की पहली जनगणना 1951 में हुई जो हर साल बदस्तूर जारी रही। इसके कारण भारत को विश्व भर के देशों द्वारा होने वाली जनगणना के साथ तालमेल करने में सुविधा होती है। पिछली जनगणना 2011 में हुई थी। आर्थिक जनगणना का प्रारम्भ 1976-77 में हुआ था। इसका उद्देश्य देश की आर्थिक संरचना का विश्लेषण करने के लिये होता है। इसमें देश की आर्थिक संस्थाओं के आंकड़े एकत्र किये जाते हैं जो केन्द्र या राज्य सरकार की विभिन्न योजनाएं बनाने में सहायक होते हैं। समग्र भारत में 15 बार बिला नागा होने वाली जनगणना को आजाद हिन्दुस्तान में पहली बार 2021 में कोविड-19 के कारण टाला गया था।

हालांकि परिस्थितियां 2022 तक ऐसी हो चुकी थीं कि जनगणना कराई जा सके लेकिन देश की प्रशासकीय अराजकता के लिये यह मुफ्रीद था कि जनगणना न हो।

कोरोना के कारण लोगों के मरने वालों की संख्या, भूख से प्रभावित लोग, बेरोजगार आदि की संख्या आज भारत सरकार के पास नहीं है। रोजगार पर हुई एक बहस में सरकार ने संसद तक में बताया कि उसके पास इसके आंकड़े नहीं हैं।

जितने भी योजनाएं चल रही हैं, उनमें हितग्राहियों या जरूरतमंदों सम्बन्धी तमाम आंकड़े संदेहास्पद हैं। इसके कारण कोई भी कार्यक्रम वैज्ञानिक आधार पर क्रियान्वित नहीं हो रहे हैं। केन्द्र सरकार ने 2019-20 में आर्थिक जनगणना तो कराई पर उसका आधार 2011 के ही पुराने आंकड़े थे। बताया जाता है कि भारतीय जनता पार्टी सरकार के दो निर्णयों का असर इन आंकड़ों में सचचाई के साथ परिलक्षित नहीं हुआ है- नोटबन्दी एवं जीएसटी जिन्होंने भारत के आर्थिक परिदृश्य पर बहुत विपरीत प्रभाव छोड़ा था, परन्तु लोगों को वास्तविक वित्तीय स्थिति को कभी उजागर नहीं किया गया। स्पष्टतः ऐसा इन दो कदमों को गलत साबित होने से बचाने के किया गया। संसद में भी पहले-पहल इन दोनों निर्णयों को

सकारात्मक पहल तो बताया गया पर बाद में उन पर चर्चा बन्द हो गयी। हाल के वर्षों में जनगणना की मांग उठने लगी थी। खासकर जब से कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने अपनी दो यात्राओं (भारत जोड़ो एवं न्याय यात्रा) में इस ओर लोगों का ध्यान खींचा था कि भारत में जिस जाति के लोग जितनी संख्या में हैं, उस परिमाण में उन्हें अवसर नहीं मिलते। उन्होंने बार-बार बताया कि केन्द्र सरकार में केवल 5 सचिव ऐसे हैं जो ओबीसी वर्ग से आते हैं।

उनके हाथ में कुल बजट का 5 फीसदी भी नहीं होता। यह विश्वास पहले राहुल गांधी, फिर कांग्रेस और अंततः विपक्षी गठबन्धन इंडिया ने न केवल अपनाया वरन यह पिछले कुछ विधानसभा तथा लोकसभा चुनाव का भी प्रमुख मुद्दा बन गया था। अब पूरा देश चाहता है कि जातिगत जनगणना हो जिससे न केवल आरक्षण प्रणाली सुधरे वरन सामाजिक न्याय भी सुनिश्चित हो। हालांकि देखा यह है कि जनगणना में लोगों की जाति व धर्म के आंकड़े कितनी ईमानदारी से प्रविष्ट होंगे।

## बाल विवाह पर 'बड़ी अदालत' का फैसला



कि %बाल विवाह लक्ष्मी से बच्चों को जन्म देने और प्रजनन क्षमता साबित करने की उम्मीद की जाती है। बच्चे को जन्म देने के निर्णय लक्ष्मी से छीन लिए जाते हैं। एक बच्चे के रूप में विवाहित महिला की पसंद और स्वायत्तता का अधिकार बाल विवाह की प्रणाली द्वारा छीना जाता है। बाल विवाह का कर नाबालिग लड़कियों को वैवाहिक संबंध बनाने के लिए मजबूर करने से वे तनाव झेलने को मजबूर होती हैं।

गैर-सरकारी संगठन %सेवा% (सेल्फ एम्प्लायड वीमेस एसोसिएशन) और सामाजिक कार्यकर्ता निर्मल गोराना की याचिका पर आए इस फैसले का दो सी से अधिक संस्थाओं के संगठन %बाल विवाह मुक्त भारत% ने स्वागत किया है। %बाल विवाह मुक्त भारत% से जुड़ी सोलारपुर (महाराष्ट्र) की संस्था %महात्मा फुले समाज सेवा मंडल% के प्रमोद खिड़ड़े के मुताबिक %बाल विवाह मुक्त भारत% देश के 400 से अधिक जिलों में बाल विवाह के खतमे के लिए सक्रिय है। इस गठबंधन से जुड़ी संस्थाओं ने 2023-24 में पूरे देश में 1,20,000 से भी ज्यादा बाल विवाह रुकवाए हैं और 50,000 बाल विवाह मुक्त गांव बनाए हैं।

प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति डीवाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की खंडपीठ ने फैसले में कहा है

और इसकी स्पष्ट व्याख्या के लिए सुप्रीम कोर्ट बधाई का पात्र है। साझा प्रयासों से बच्चों के लिए अतिरिक्त बाल विवाह जैसी बुराइयों का पूरी तरह से खतमा किया जा सकेगा। अभियान के संस्थापक भुवन त्रिभु ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को भारत और पूरी दुनिया के लिए नजीर बताते हुए कहा कि यह ऐतिहासिक फैसला सांस्थानिक संकल्प को मजबूती देने की दिशा में निर्णायक साबित होगा। यह देश से बाल विवाह के समग्र उन्मूलन के लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग की बाधाओं को दूर करने में बहुत सहायक होगा। सुप्रीम कोर्ट ने दिखाया है कि उसे बच्चों की परवाह है और अब समय आ गया है कि हम सभी आगे आएँ और साथ मिलकर इस सामाजिक अपराध का खतमा करें। त्रिभु ने कहा, %अगर हम अपने बच्चों की सुरक्षा करने में विफल हैं तो फिर जीवन में कोई भी काम मायने नहीं रखता। सुप्रीम कोर्ट ने एक समग्र दृष्टिकोण को मजबूती से अपनाया है। जल्द बतवाई है। बाल विवाह अपने मूल रूप में बच्चों से बलात्कार है। %बाल विवाह मुक्त भारत% से जुड़े संगठन इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक समग्र रणनीति %पिकेट% पर अमल कर रहे हैं, जिसमें नीति, संस्थान, सम्मिलन, ज्ञान, परिवेश, तकनीक जैसी चीजें शामिल हैं। अभियान के तहत विभिन्न धार्मिक नेताओं और समुदायों के साझा प्रयासों

से इस अपराध के खतमे के लिए 4.90 करोड़ लोगों को बाल विवाह के खिलाफ शपथ भी दिलाई है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश में कहा गया है कि सरकारें जिला स्तर पर %चाइल्ड मैरिज प्रिवेंशन ऑफिसर% नियुक्त करें। इसके लिए कलेक्टर और एसपी भी जवाबदेह होंगे। उनके पास उन सभी व्यक्तियों पर मुकदमा चलाने का अधिकार और जिम्मेदारी होगी जो बाल विवाह करवाने में मदद देते या उसे संपन्न करते हैं। अपने दो साल में बाल विवाह के मामलों में जानबूझकर कर्तव्यों की उपेक्षा करने वाले सरकारी कर्मचारियों के खिलाफ सख्त अनुशासनात्मक और कानूनी कार्रवाई की जाए। सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारों को बाल विवाह रोकने के लिए एक वार्षिक कार्य योजना विकसित करना चाहिए। व्यक्तिगत जवाबदेही तय करने और बाल विवाह रोकने के लिए राज्य हर 3 महीने में रिपोर्ट अपलोड करें। राज्य के %महिला एवं बाल विकास विभाग% और गुह मंत्रालय इसकी समीक्षा करें। अदालत के मुताबिक स्थानीय लोगों के साथ प्रभावी सामुदायिक सहभागिता तकनीक विकसित की जाए। राज्यों के गुह मंत्रालय स्पेशल ज्विनाइल पुलिस यूनिट बनाए पर विचार करें। राज्य %स्पेशल चाइल्ड मैरिज प्रोडिक्शन यूनिट% बनाए जिसमें पांच सामाजिक कार्यकर्ताओं, जिनमें दो महिलाएं जरूर हों, को रखा जाए। मजिस्ट्रेट स्वतंत्र सज्जन लेकर निर्देश जारी कर सकेंगे। केंद्र राज्य सरकारों के साथ मिलकर ऐसे मामलों के लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट बनाएँ। बाल विवाह मुक्त गांवों और ग्राम पंचायतों को बाल विवाह मुक्त सर्टिफिकेट दिया जाए। सामुदायिक नेतृत्व को सक्रिय भूमिका के लिए प्रोत्साहित किया जाए। स्कूलों सहित धार्मिक संस्थाओं और पंचायत में जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाए। स्थानीय भाषा में प्रभावी होर्डेस और स्लोगन बनाए जाएँ। स्कूलों, पंचायतों और सभी स्थानीय संस्थाओं को %चाइल्ड लाइन 1098% और %महिला हेल्पलाइन 181% की जानकारी दी जाए। बच्चों को बताया जाए कि कैसे मदद लेनी जाती है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में सभी पक्षों को एक साल बाद स्टेटस रिपोर्ट देने को भी कहा है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों, सामाजिक संगठनों की सक्रियता के बीच यह बताना जरूरी है कि %बाल विवाह निषेध संशोधन विधेयक 2021% को 21 दिसंबर 2021 को संसद में पेश किया गया था। विधेयक को शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल संबंधी विभागों से संबंधित स्थायी समितियों को जांच के लिए भेजा गया था। विधेयक में संशोधन की मांग की गई थी, ताकि विभिन्न व्यक्तिगत कानूनों पर प्रभाव को स्पष्ट रूप से बताया जा सके। यह विधेयक संसद के समक्ष अभी भी विचारार्थ है।



## कुछ बातें, जिनका ख्याल रखो



- ▶ बड़ों की निगरानी में ही पटाखों का इस्तेमाल करो, ताकि किसी भी स्थिति से निपटने के लिए वे तुम्हारे साथ रहें।
- ▶ पटाखों के लिए किसी खुले स्थान का प्रयोग करें। आसपास ऐसी वस्तुओं को तुरंत हटा दो, जिन से आग लगने का खतरा हो।
- ▶ वही पटाखे खरीदो, जो लाइसेंस युक्त और विश्वसनीय हों।
- ▶ रॉकेट जैसे पटाखों का इस्तेमाल मत करो क्योंकि उनकी दिशा का पता नहीं चलता। अगर तुम्हें इन्हें जलाने से खुद को रोक नहीं पा रहे हो तो ध्यान रखें कि उनकी दिशा घर के किसी दरवाजे खिड़की की तरफ न हो।
- ▶ बीच सड़क में पटाखों का इस्तेमाल मत करो। आने जाने वालों को चोट लग सकती है।
- ▶ पटाखे जलाते हुए उनसे उचित दूरी बनाए रखो। कभी भी अपने चेहरे को उनके करीब मत लाओ।
- ▶ दीवाली के दिन फर्स्ट एड बॉक्स तुम्हारे करीब होना चाहिए।

दोस्तो, तुमने दिवाली की तैयारी शुरू कर दी होगी। तुमने खरीदारी के लिए जो लिस्ट पापा को थमाई होगी, उसमें पटाखे सबसे ऊपर होंगे। पटाखे आकाश में रंगीन रोशनी और जोरदार आवाज के साथ कुछ जोखिम भी लेकर आते हैं। अगर सावधानी से उनका इस्तेमाल करने में कहीं चूक हो जाए तो लेने के देने पड़ने में भी देर नहीं लगती। तुम अनार, चकरी का इस्तेमाल खूब करते हो। इनमें शोर नहीं, बल्कि खूबसूरत रोशनी होती है। इसके बावजूद कई बार इनमें भी धमाका हो जाता है, इसलिए ध्या रखें कि इनके इस्तेमाल में कोई लापरवाही न बरती जाए और इनमें भी उचित दूरी बनाई जाए। हमारे सबसे संवेदनशील अंगों में एक हैं हमारी आंखें। इस दीवाली पर तुम्हें अपनी आंखों का भी विशेष ध्यान रखना होगा। हम तुम्हें यह नहीं कह रहे कि दीवाली में मस्ती मत करो, बस अपना और आसपास के लोगों का भी ख्याल रखो, जिससे तुम्हारा पल भर का फन किसी को जिं दगी भर के लिए अपाहिज न बना दे।

### नए पटाखे नए जोखिम

जब तुम किसी ऐसे पटाखे का इस्तेमाल करने जा रहे हो, जिसका इस्तेमाल तुमने पहले कभी नहीं किया और तुम्हें बिल्कुल भी जानकारी नहीं है कि उसका प्रभाव क्या होगा तो पैकेट पर लिखे निर्देशों पर एक नजर जरूर दौड़ाओ। अक्सर तुम रॉकेट का इस्तेमाल घर में रखी किसी बॉटल से करते हो, जो बेहद खतरनाक होता है। रॉकेट के लिए उसके साथ रॉकेट लॉन्चर भी खरीदा जाना चाहिए। अगर संभव हो तो रॉकेट जैसे पटाखों से दूर रहो, क्योंकि इनकी दिशा का पता नहीं चल पाता। एक बार में एक पटाखे का इस्तेमाल ही करो यानी जब तक वह पूरी तरह न जल जाए, दूसरे पटाखे के लिए जल्दबाजी मत करो। ऐसा करने से तुम खुद को और दूसरों को भी सुरक्षित रख सकते हो।

### आतिशबाजी...जरा ठहरो

कभी भी किसी बंद कमरे में पटाखों का इस्तेमाल मत करो। खुले स्थान की तलाश करो, जहां पटाखों के बॉम्ब और उन्हें इस्तेमाल करने की जगह में उचित दूरी हो। पास



रौशनी के त्योहार दीपावली के लिए कुछ ही दिन बचे हैं। अब तुम पटाखों से धूम धड़ाका की प्लानिंग में जुट गए होगे। तुम्हें किस्म-किस्म के पटाखों का जोरदार शोर खूब भाता भी है। लेकिन हर साल इस त्योहार के दिन तुम जैसे कई नन्हें दोस्त इन्हीं पटाखों की वजह से इसी फन को दुर्घटना में बदल देते हैं। कैसे मनाओगे तुम सुरक्षित दीवाली? आइए हम बताते हैं..

# धूम धड़ाका धूम मगर...!



में कम से कम एक बाल्टी पानी की जरूर रखी हो, ताकि आग लगने की स्थिति में जल्दी ही उस पर काबू पान आसान हो। कई बार पटाखे एक बार में नहीं जलते। उन्हें दोबारा इस्तेमाल का जोखिम मत लो। ऐसा न हो कि उनके पास जाते ही वो फट जाए और तुम्हें नुकसान हो जाए। पटाखों को अपनी पकित में मत रखो। अगर कोई चिंगारी तुम्हारी पकित तक पहुंच गई तो तुम खुद का जलने से नहीं बचा पाओगे। कभी-कभी कुछ देर के फन के लिए राह चलते हुए किसी व्यक्ति पर भी तुम लोग पटाखे फेंक देते हो। सोचो अगर इस वजह से उसके कपड़ों में आग पकड़ ली तो क्या तुम उसे बचा पाओगे?

कैसे हों परिधान

ढीले-ढाले कपड़ों में आग आसानी से पकड़ लेती है। अगर कपड़ों में चिंगारी लग जाती है तो भागने की कोशिश मत करो। इससे आग को लपटें अधिक भड़क जाएंगी। सिंथेटिक कपड़ों को कभी इस दिन मत पहनो। इनमें आग पकड़ने की संभावना सबसे अधिक रहती है। तुम्हें पटाखे चलाते वक चुस्त कपड़ों का चुनाव करना चाहिए। पटाखों के इस्तेमाल से पहले शूज पहनना कभी मत भूलो। इस दिन अधजले पटाखे चारों ओर पड़े रहते हैं। शूज तुम्हें अतिरिक्त सुरक्षा देंगे।

### प्रदूषण को बढ़ने से रोको

प्रदूषण को न्यूनतम करने के लिए चारों ओर लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। तुम्हारी विज्ञान की टीचर ने भी तुम्हें बताया होगा कि प्रदूषण से हमें क्या-क्या नुकसान होते हैं। बच्चों, पर्यावरण की वजह से पूरी दुनिया में हर साल करीब एक करोड़ तीस लाख मौतें होती हैं और उनमें अकेले 38 फीसदी मौतों का हिस्सा भारत और चीन को जाता है। एक सर्वे के मुताबिक दिल्ली जैसे शहर में अधिकाधिक बच्चे दमा जैसी सांस की बीमारियों के शिकार हो रहे हैं।

उनके लिए सांस लेना तक मुश्किल हो रहा है और आलम यह है कि वे कुछ ही कदम चलने पर हांफने लगते हैं पहले ही शहरों में चलने वाली गाड़ियां रोजाना हजारों टन जहरीला धुआं वातावरण में धोल रही हैं। उसके बाद फैक्टोरियों, कारखानों का नंबर आता है।

बम पटाखों का धुआं। दोस्तों, पटाखों के लिए जितना मजा मना कर लिया जाए, लेकिन तुम उनसे दूर नहीं रह पाते। तुम इतना जरूर कर सकते हो कि पटाखों का



इस्तेमाल एक सीमा के अंदर ही करो। मजे की बात यह है कि आजकल इको फ्रेंडली पटाखे मार्केट में आ चुके हैं। इन पटाखों की खास बात यह है कि इन से शोर कम होता है, वहीं वे कम से कम प्रदूषण फैलाते हैं।

### पालतू जानवर खाते हैं खौफ

जब तुम आतिशबाजी का मजा ले रहे होते हो, उस समय तुम्हारे घर के पालतू जानवर जैसे कुत्ते-बिल्ली डर से सहमें रहते हैं। हम जानते हैं तुम उन्हें बहुत प्यार करते हो, उन्हें तुम तकलीफ में नहीं देख सकते, इसलिए बच्चों दीपावली के दिन उनके नजदीक कोई भी धमाका मत करना और उस दिन उन्हें कहीं ऐसे स्थान में बांध कर रखना, जहां उन्हें कोई तकलीफ न पहुंचे।

### पटाखे रखने होंगे कहीं सुरक्षित

अभी दिवाली आने में कुछ समय बचा हुआ है। हम जानते हैं अपने मनपसंद पटाखों की खरीदारी भी तुमने अभी से करनी शुरू कर दी है। इन पटाखों को जहां-तहां रखने की बजाए किसी सुरक्षित स्थान पर रखो। कहीं ऐसा न हो कि दिवाली से पहले ही पटाखों के बॉम्ब में आग लग जाए और घर में रह रहे लोगों को भी नुकसान हो जाए।

## कहानी कैलेंडर की

लिटिल फ्रेंड्स, आप सभी कैलेंडर के बारे में तो जानते ही हैं। अपनी नोटबुक में रोज काम करते समय कैलेंडर के हिसाब से ही आप सभी डेट भी डालते हैं। जिंदगी के पल-पल का हिसाब रखने वाले कैलेंडर की स्टोरी के बारे में क्या आप जानते हैं?

दुनिया भर में कई प्रकार, के कैलेंडर प्रचलित हैं, जिनमें, रोमन, यहूदी, इस्लामी, चीनी और विक्रमी कैलेंडर प्रमुख हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस समय इंटरनेशनल लेवल पर सबसे अधिक प्रचलित साल को 365 दिनों में डिस्ट्रीब्यूट करने वाला ग्रेगोरियन कैलेंडर है।



पुष्पे समय में इंसान के पास टाइम का नापने की कोई तकनीक नहीं थी और वे सूरज और चंद्रमा के घूमने के हिसाब से ही दिन और रात की कैलकुलेशन करते थे। धीरे-धीरे खगोल विज्ञान की स्टडी और रिसर्च से जाना गया कि पृथ्वी सूरज की परिक्रमा करती रहती है। इसी तरह पृथ्वी के अपनी ही धुरी या एक्सिस पर घूमने की डायरेक्शन को दिन और रात और सूरज की परिक्रमा करने की डायरेक्शन को एक साल माना गया। इसके बाद साल की इस अवधि को चंद्रकलाओं या चंद्रा मामा के बढ़ने घटने के हिसाब से बारह भागों में बांटा गया, जिसे महीना या मंथ कहा जाने लगा।

गए इस कैलेंडर में 304 दिन का साल और 10 महीने थे। लेकिन इसमें महीने के दिनों की संख्या तय नहीं थी। इस वर्ष का आरंभ मार्च महीने से होता था। फिर सम्राट पोपीलस ने रोमन देवी जेनिस के नाम पर जनवरी तथा रोमन त्योहार फ्रेब्रुआ के नाम पर फरवरी माह और जोड़े। इस तरह साल के 12 महीनों वाला यह पहला कैलेंडर चलन में आया। लेकिन इसमें दिन अब भी 355 ही माने गए थे। यह कैलेंडर मुख्यतः चंद्रमा पर आधारित था।

सूर्य के आधार पर कैलेंडर को तैयार करने की प्रक्रिया मिस्र में ईसा से करीब तीन हजार साल पहले ही शुरू हो चुकी थी। उस कैलेंडर में साल को चार-चार महीनों के तीन ऋतु काल में विभाजित किया गया था और साल को सूरज की गति के हिसाब से 360 दिन का माना गया। फिर रोमन सम्राट जूलियस

सीजर ने सूरज को समय गणना का आधार मान कर कैलेंडर विकसित किया।

इसके बाद जूलियस कैलेंडर में बाकी रही कमियों को दूर किया आधुनिक कैलेंडर के जन्मदाता रोम के 13वें पोप ग्रेगरी है। ग्रेगरी का जन्म रोम में हुआ था। उन्होंने अपने कैलेंडर की शुरुआत प्रभु यीशु के जन्म जनवरी सन् से की। उनके कैलेंडर में साधारण वर्षों में 365 दिन तथा लीप ईयर (हर चौथा वर्ष) में 366 दिन होते हैं।

वहीं फरवरी महीने में 28 दिन तथा हर चौथे महीने में 29 दिन होते हैं। इस समय पूरी दुनिया में प. च. लि. त. कै. ले. ड. र. 'ग्रेगोरियन' के नाम से ही जाना जाता है। तो फ्रेंड्स है न मजं दार और एक्साइटिंग कैलेंडर के बनने की स्टोरी।



# पटाखों का धमाकेदार इतिहास

### ऐसा भी हुआ

वर्ष 1605 में गाँव फॉक्स और उसके सहयोगियों ने मिलकर इंग्लैंड के पार्लियामेंट को पटाखों से जलाने की कोशिश की, उस वक़्त राजा भी अंदर मौजूद थे। गाँव ने 36 बैरल गनपाउडर मिस्त्रियानिस्टर बॉल में 8 नवंबर को डाला लेकिन फॉक्स की गिरफ्तारी के बाद यह कोशिश सिकरों को गई। इस दिन को आप भी यूके और पूरे ब्रिटिश कॉलोनीज जैसे साउथ अफ्रीका और न्यूजीलैंड में गाँव को 'फॉक्स नाइट' के तौर पर मनाया जाता है। इस दिन आतिशबाजी के साथ ही गाँव फॉक्स के पुतले भी जलाए जाते हैं।

### इतिहास

सबसे पहले चीनी लोगों ने 12वीं शताब्दी के आस-पास भूत-प्रेत और बुरी आत्माओं को दूर भगाने के लिए पटाखों का इस्तेमाल शुरू किया। इसका दूसरा मकसद खुशहाली लाना भी था। धीरे-धीरे पटाखे बनाने की कला को चाइना के कुछ लोगों ने अपना पेशा बना लिया। पुराने समय में चाइना में पटाखे बनाने वालों को बेहद इज्जत की नजर से देखा जाता था। लाइट और साउंड के शानदार डिस्प्ले के वास्ते इनके काम को बेहद सराहा जाता था। यही से मिलिट्री रॉकेट बनने की शुरुआत भी हुई।

### एक ही मकसद

पटाखे चलाने का तरीका और अक्सर कई जगहों पर भले ही अलग है लेकिन इसका मकसद केवल लाइफ को सैलिब्रेट करना और खुशी बांटना है। भारत में जहां यह पटाखे नव वर्ष और शादी-विवाह के मौके पर चलाए जाते हैं वहीं पाकिस्तान में शब-ए-बारात पर और अमरीका में हैलोवीन व स्वतंत्रता दिवस पर। मलेशिया में हरि राया के मौके पर और चीन में नव वर्ष के मौके पर पटाखे चलाए जाते हैं।

### उत्पादन का सूरमा

आपको बता दें कि दूसरी तमाम अन्य चीजों की तरह आज भी पटाखों के उत्पादन में चाइना पूरी दुनिया में सबसे आगे है। हालांकि पटाखों की खोज सबसे पहले चाइना ने मनोरंजन के लिहाज से गन पाउडर के रूप में की थी। चीन में इन पटाखों को इस्तेमाल में लाए जाने वाले कुछ खास दिनों में नया साल और मून फेस्टिवल प्रमुख हैं।

### आतिशबाजी के वर्ल्ड रिकॉर्ड्स

- सबसे बड़ा कैथरीन व्हील 25.95 मीटर व्यास का 1999 में ईस्ट सेक्स, यूके में बनाया गया।
- अब तक का सबसे बड़ा फायर डिस्प्ले 66,326 पटाखों का पुर्तगाल में 2006 में।
- जापान में आतिशबाजी से बना सबसे ऊंचा झरना 2003 में सवा तीन सौ मीटर ऊंचा नियाग्रा फॉल के रबप में था।



जानकारी

बादाम बनाए हड्डियां मजबूत और करे सिर दर्द दूर



याददास्त कमजोर है, तो बादाम इसका अचूक इलाज है। बादाम की 10 गिरी रात को पानी में भिगो कर सुबह छिलका उतार कर बारीक करके 20 ग्राम मखन, 10 ग्राम मिसरी मिलाकर एक महीने तक खाएं। दिमाग की कमजोरी दूर हो जाएगी और आपकी याददास्त अच्छी हो जाएगी। फिर दर्द होता है, तो बादाम का तेल आपको राहत दिला सकता है। इसके लिए नाक में एक बूंद बादाम का तेल डालें, जिसे बादाम रोगन भी कहते हैं। दूसरा उपाय यह भी है कि आप एक कप पानी में पांच बूंद बादाम का तेल मिलाकर पी जाएं।

बादाम के कुछ दाने आपको कई बीमारियों से दूर रखने में तो खास भूमिका निभाते ही हैं, इसके साथ ही कई समस्याओं में दवा की तरह भी काम आते हैं।

काफी फायदेमंद साबित होता है। इसमें ओमेगा 3 फैटी एसिड अधिक होता है। यह बुरे कोलेस्ट्रॉल को कम करता है व अच्छे कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाता है। इस वजह से हृदय की नलियों में कम रुकावट होती है और इसके प्रयोग से दिल का दौरा ऐसी पापड़ी आपको हथौड़ा और पंरी के पीछे भी दिखाई दे सकते हैं। अगर आप इस संकेत के बाद भी कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल नहीं करते हैं, तो आपको हार्ट अटैक का खतरा हो सकता है।



बादाम के तेल में विटामिन डी प्रचुर मात्रा में होता है, जो बच्चों की हड्डियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए इस तेल से अपने बच्चों की मालिश करें। अच्छा हो अगर एक चम्मच नारियल तेल में पांच बूंद बादाम का तेल मिलाकर इससे नियमित रूप से बच्चों की मालिश करें। जरूरत महसूस करें तो आयुर्वेद विशेषज्ञ से सलाह ले लें।



35+ उम्र वाले रहें सावधान

हार्ट अटैक या दिल की बीमारियों से पहले आपकी त्वचा पर कुछ संकेत दिखाई देते हैं। इन संकेतों को पहचानकर अगर आप सही समय पर इलाज शुरू कर दें, तो हार्ट अटैक से बच सकते हैं। जारें हार्ट अटैक के पूर्व संकेत या पहले दिखने वाले लक्षण।

आंखों के बगल में पीली-सफेद पपड़ी या वैक्स जैसी त्वचा दोनो आंखों के बगल में कई बार व्यक्ति को सफेद-पीले रंग की पपड़ी जैसी त्वचा दिखने लगती है। ये इस बात का संकेत है कि आपके शरीर में कोलेस्ट्रॉल बढ़ रहा है। कुछ लोगों में ये त्वचा जमे हुए मीम जैसी नजर आती है। आंखों के अलावा ऐसी पापड़ी आपकी हथौड़ों और पंरों के पीछे भी दिखाई दे सकते हैं। अगर आप इस संकेत के बाद भी कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल नहीं करते हैं, तो आपको हार्ट अटैक का खतरा हो सकता है।

सुझाव

मशरूम का उपयोग करे याददास्त ठीक



पौष्टिक तत्वों और अनाोखे स्वाद की वजह से मशरूम का भोजन में खूब इस्तेमाल किया जाता है। इसमें एंटीऑक्सिडेंट, एंटी बैक्टीरियल और एंटी वायरल तत्वों से भरपूर औषधीय गुण भी पाए जाते हैं। मशरूम को सुपरफूड माना गया है, क्योंकि इससे न केवल पोषक तत्व मिलते हैं, बल्कि यह कई बीमारियों से हमारा बचाव भी करता है। एंटीऑक्सिडेंट, एंटी बैक्टीरियल और एंटी वायरल तत्वों से भरपूर मशरूम के फायदों के बारे में जानना जरूरी है।

इम्युनिटी बढ़ाए मशरूम में मौजूद सेलेनियम, पेंसिलिन जैसे एंटीबायोटिक तत्व शरीर में माइक्रोबियल विकास और फंगल संक्रमण को बाधित करने में सहायक है और प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मददगार है।

कैंसर सेल को बढ़ने से रोके मशरूम में मौजूद फोलेट्स कैंसर सेल बनने से रोके हैं। इसमें मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स शरीर को फ्री रेडिकल से बचाते हैं, जो कैंसर का कारण बनते हैं। फोलेट्स डीएनए को बनाने और रीपेयर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मशरूम में पाया जाने वाला सेलेनियम तत्व लिवर को सुचारु रूप से काम करने में मदद करता है। यह शरीर को डीटीवीसीएफ करने में मदद करता है, जिससे कई बीमारियों से बचाव होता है।

दिल को रखे दुरुस्त मशरूम में मौजूद फाइबर, पोटैशियम, विटामिन सी और सेलेनियम जैसे एंटीऑक्सिडेंट तत्व हमारे दिल की सेहत को प्रोत्साहित करते हैं। एंटीऑक्सिडेंट्स दिल को फ्री रेडिकल से बचाते हैं। शरीर में बुरे कोलेस्ट्रॉल (एलडीएल) और अच्छे कोलेस्ट्रॉल (एचडीएल) के बीच संतुलन कायम रखने में भी मदद करते हैं।

ब्लड प्रेशर को नियमित पोटैशियम और सोडियम से भरपूर मशरूम का नियमित सेवन ब्लड प्रेशर को नियमित करने में मदद करता है। यह शरीर में सामान्य तलत पदार्थों के बीच संतुलन कायम रखता है।

अंत्रियव्योतेसि में दे आसम घृष में रखा फ्रेश मशरूम विटामिन डी का अच्छा स्रोत होता है। मशरूम में मौजूद विटामिन डी, कैल्शियम और फॉस्फोरस हड्डियों के स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं और जोड़ों के दर्द, हड्डियों में घटल कम होने या हड्डियों के टूटने की आशंका को कम करते हैं।

टाइप 2 डायबिटीज में फायदेमंद फाइबर से भरपूर, लेकिन कम शर्करा वाले मशरूम का सेवन डायबिटीज रोगियों के लिए फायदेमंद है। लिगर, अमनाशय और अंतःस्रावी श्रेणियों के समुचित क्रियान्वयन में यह मदद करता है।

याददास्त करे दुरुस्त इसमें मौजूद कोलीन तत्व मस्तिष्क में रक्त और ऑक्सीजन के प्रवाह को बनाए रखता है। इससे याददास्त और लॉर्निय पावर में सुधार होता है। कोलीन मेमरी के सेल मेम्ब्रेन की संरचना को मॉटेन रखता है।

इन बातों का ध्यान में रखकर एक स्वस्थ व्यक्ति नियमित रूप से 100 ग्राम मशरूम का सेवन आसानी से कर सकता है। मशरूम खरीदते समय ध्यान रखना चाहिए कि वे ताजे और सुखे हैं। विपणित या मुरदाधार मशरूम बासी होते हैं। घर लाने के बाद इन्हें फ्रिज में एयरटाइट बॉक्स में रखें। जब इन्हें बनाएं, तभी घी और फाटें।

टाइम पास

आज का राशिफल

राशिफल section containing horoscope details for various signs like Mees, Vash, Mishun, Kark, Sih, Na Ni Ju Me, Kanya, Tulsi, Vashik, To Na Ni Ju, Dhru, Akar, Me Na Ni Ju, Kumb, and Meen.

काकुरो पहेली - 2632

Crossword puzzle grid for Kakuro 2632 with numbers and empty cells.

हंसी के फूत्वारें

हंसी के फूत्वारें एक महिला दूसरी महिला से बोली- 'मेरे पति की याददास्त बहुत कमजोर है.' 'वह कैसे?' 'एक बार मैं चाट खाने गई तो देखा कि पतिदेव वहां पहले से ही जमे हुए हैं. मैंने जब उनका ध्यान अपनी ओर दिलाया तो बोली- 'बहन जी! आपको पहले भी कहीं देखा है. पर कहां, यह ठीक से याद नहीं पड़ रहा.'

काकुरो - 2631 का हल

Solved Kakuro puzzle grid for 2631 with numbers filled in.

फिल्म वर्ग पहेली - 2632

Word search grid for Film 2632 with a list of movie titles.

शब्द पहेली - 2632

Word puzzle grid for Shabd 2632 with a list of words.

ऊपर से नीचे:-

Downward crossword puzzle grid with a list of words to be placed.



## बीड़ बिलिंग घाटी में पैराग्लाइडर क्रेश, विदेशी पायलट की मौत

एजेसी धर्मशाला। पैराग्लाइडिंग के लिए विश्व प्रसिद्ध बीड़ बिलिंग घाटी में एक हदसे में विदेशी पैराग्लाइडर पायलट की मौत हो गई है। पुलिस और बचाव दल ने कड़ी मशकत के बाद घटनास्थल से विदेशी पायलट के शव निकालकर बैजनाथ अस्पताल पहुंचाया। उसके शव के पास को कागजात न मिलने से अभी तक पैराग्लाइडर पायलट के देश का नाम पता नहीं चल सका है और न ही उसकी शिनाख्त हो सकी है। जानकारी के अनुसार इस पैराग्लाइडर ने बिलिंग से टेक ऑफ किया था और लगभग 11 बजे दुर्घटनाग्रस्त होकर गिर गया। सूचना पर पुलिस और बीड़ बिलिंग पैराग्लाइडर एसोसिएशन ने एक बचाव दल घटनास्थल के लिए रवाना किया गया, जिसमें पुलिस के जवानों सहित रेस्क्यू टीम के सदस्य भी शामिल थे। जब टीम वहां पहुंची तब तक विदेशी पायलट की मौत हो चुकी थी। रेस्क्यू टीम ने कड़ी मशकत के बाद उसका शव मालविका सीतलानी की इमोजनल फादर्स डे पोस्ट।

## मतदाता सूचियों के प्रारूप प्रकाशन को लेकर बैठक, राजनैतिक दलों के पदाधिकारियों को दी जानकारी

एजेसी श्रीगंगानगर। निर्वाचन विभाग राजस्थान जयपुर के निर्देशानुसार अर्द्धा दिनिक 1 जनवरी 2025 के संदर्भ में मतदाता सूचियों के विशेष सक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत जिला कलक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. मंजू की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभाहॉल में राजनैतिक दलों के पदाधिकारियों की बैठक में आवश्यक जानकारी दी गई। बैठक में मतदाता सूचियों के प्रारूप प्रकाशन की जानकारी दी गई। साथ ही विशेष सक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम-2025 के पोस्टर का विमोचन जिला कलक्टर द्वारा किया गया। बैठक में जिला कलक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. मंजू ने बताया कि राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जो युवा 1 जनवरी 2025 को 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर रहे हैं, वे अपना नाम मतदाता सूचियों में सम्मिलित करवा सकते हैं। पुनरीक्षण कार्यक्रम के दौरान यदि कोई आवेदक मतदाता सूची में नाम जड़वाने हेतु प्रारूप-6 में आवेदन करता है तथा अपना यूनिक मोबाइल नम्बर की सूचना प्रस्तुत करता है, तो मतदाता सूची में उनका पंजीकरण होने की स्थिति में वह अपना मतदाता पहचान पत्र ऑनलाइन प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त वर्तमान मतदाता भी प्रपत्र-8 के माध्यम से अपना मोबाइल नम्बर दर्ज करवा सकते हैं।

## लाइव टेलीकास्ट के जरिए पूरी दुनिया देखेगी अयोध्या की भव्यता

अयोध्या। आठवें दीपोत्सव की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। राम की पैड़ी पर दीप बिखाने का काम तकरवीर पूरा किया जा चुका है। अब अयोध्या सहित पूरी दुनिया को इंजॉय है तो सिर्फ 30 अक्टूबर को शाम का। उस दिन सबसे आराध्य भगवान श्रीराम की नगरी अयोध्या एक और कीर्तिमान रचने जा रही है। इस अद्भुत और अलौकिक पल के साक्षी पूरी दुनिया में बैठे लोग भी होंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर सूचना विभाग द्वारा इस पूरे महा आयोजन के लाइव टेलीकास्ट की व्यवस्था की गई है। नगर के कोने-कोने में होने वाले दीपोत्सव की आभा दिखाने के लिए एलईडी वॉल और एलईडी वैन लगाई जा रही है। इसके अलावा मीडिया को कनेक्ट के लिए सेंटर की स्थापना करा दी गई है। मुख्यमंत्री योगी के नेतृत्व में इस बार दीपोत्सव को और भी भव्य बनाने की तैयारी चल रही है। शहर के मांगों को फूलों की लड़ियों और आकर्षक लाइट से सजाया जा रहा है। दीपोत्सव के दिन राम की पैड़ी पर होने वाले सभी कार्यक्रमों को दूरदर्शन व सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म पर लाइव दिखाया जाएगा। नगर के सभी लोग इस भव्य आयोजन का, जो जहां रहे वहीं से आनंद ले सकें, इसके लिए एलईडी स्क्रॉन की व्यवस्था कराई गई है। जिला सूचना अधिकारी संतोष द्विवेदी ने बताया कि दीपोत्सव के आयोजन की भव्यता को अयोध्या सहित पूरी दुनिया देखे इसके लिए नगर में 20 जगहों पर एलईडी वॉल और एलईडी वैन को व्यवस्था कराई जा रही है।

## पीएम मोदी के नेतृत्व में सरदार पटेल के अखंड भारत का स्वरूप मजबूत हो रहा : सीएम योगी

एजेसी लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ में 'रन फॉर यूनिटी' को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान सीएम योगी ने सरदार पटेल को नमन कर देश के प्रति उनके समर्पण को याद किया। पांच कालीदास मार्ग से केडी सिंह बाबू स्टेडियम तक आयोजित इस दीड़ में सैकड़ों युवाओं, बच्चों और आम नागरिकों ने पूरे जोश के साथ भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान सीएम योगी ने धनतेरस, दीपावली और छठ के अवसर पर सभी को शुभकामनाएं दीं और सरदार पटेल को 150वीं जयंती पर उनके महान योगदान को नमन किया। कार्यक्रम के दौरान समाज के सशक्तिकरण में स्वास्थ्य की अहमियत पर जोर दिया। कहा कि आरोग्यता समाज के विकास की पहली शर्त है। स्वस्थ समाज का निर्माण ही राष्ट्र को मजबूत बनाता है। इस अवसर पर आयोजित 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन न सिर्फ हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है, बल्कि सरदार पटेल के एकजुट भारत के सपने को भी बल प्रदान करता है। मुख्यमंत्री ने भारत की आजादी और आज के भारत की अखंडता में सरदार पटेल के महान योगदान को याद करते हुए कहा कि उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के षडयंत्र को बेनकाब करके 563 से अधिक रियासतों को भारत गणराज्य में मिलाया।

## भारत के आयुर्वेद की ऋणी है पूरी दुनिया: शर्मा

चूरू। धन्वंतरि दिवस के अवसर पर जिला मुख्यालय पर नया बास स्थित शिवम आयुर्वेदिक स्टोर में धन्वंतरि भगवान की पूजा कर आयुर्वेद की महत्ता पर गोष्ठी आयोजित की गई। इस मौके पर आयुर्वेद विशेषज्ञ वैद्य रामाकृता शर्मा ने कहा कि समूचा विश्व आयुर्वेद के लिए भारत का ऋणी है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद एक चिकित्सा षड्विध मात्र नहीं होकर एक जीवन शैली है जो व्यक्ति के स्वस्थ जीवन के लिए एक दिनचर्या निर्धारित करती है। उन्होंने कहा कि यदि हम आयुर्वेद में बनाए आहार-विहार का पालन करें और उसमें बताई दिनचर्या पर चलें तो हमारे बीमार पड़ने की आशंकाएं ही लगभग खत्म हो जाती हैं। हीरालाल शर्मा, राजेंद्र शर्मा आदि मौजूद रहे। संचालक नवीन शर्मा ने आभार जताया।

## माजपा के एतराज के बावजूद एनसीपी ने नवाब मलिक को बनाया उम्मीदवार

एजेसी मुंबई। अजित पवार की अगुवाई वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (रकापा) ने सहयोगी दल भाजपा की आपत्ति को नजरअंदाज करते हुए पूर्व मंत्री नवाब मलिक को मानखुर्द शिवाजी नगर विधानसभा क्षेत्र से उम्मीदवार बना दिया। भाजपा ने चेतावनी दी है कि अंडरवर्ल्ड सरगना दाउद इब्राहिम के साथ कथित संबंधों के कारण वह नवाब मलिक के लिए प्रचार नहीं करेगी। नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि थी। अणुशक्ति नगर से विधायक

## टीएमसी ने चुनाव आयोग को लिखा पत्र, अमित शाह पर आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप

एजेसी कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने भारतीय निर्वाचन आयोग (ईसीआई) को पत्र लिखकर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर आचार संहिता (एमसीसी) के उल्लंघन का आरोप लगाया। आईएमएस को हासिल पत्र में टीएमसी ने कहा है कि आदर्श आचार संहिता में स्पष्ट रूप से निर्देश दिया गया है कि मंत्रियों को अपने आधिकारिक दायरे और चुनाव प्रचार कार्य को एक साथ करना चाहिए। सप्ताह पाटी के हित को आगे बढ़ाने के लिए चुनाव प्रचार कार्य के दौरान सरकारी मशीनों का उपयोग नहीं करना चाहिए। पत्र में कहा गया है, निर्देशों का दायरा उर 24 परगना के आधिकारिक संकेत हरोआ और नैहटी निर्वाचन क्षेत्रों के प्रशासनिक जिलों को

# प्रधानमंत्री का देशवासियों को दिवाली तोहफा

## स्वास्थ्य क्षेत्र में 12850 करोड़ रु. की परियोजनाओं का शुभारंभ

एजेसी नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने धन्वंतरि जयंती और धनतेरस के दिन देश के सभी 70 साल से ऊपर के बुजुर्गों को दिवाली का तोहफा दिया है। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईएर) में आयोजित समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लगभग 12,850 करोड़ रुपये की लागत वाली विभिन्न स्वास्थ्य परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इसके साथ ही आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत 70 साल और इससे ज्यादा की उम्र वाले सभी लोगों के लिए हेल्थ इश्योरेंस की सुविधा शुरू कर दी गई है। योजना के तहत सालाना 5 लाख रुपये तक के मुफ्त इलाज के अलावा

आसान और किफायती इलाज मिलेगा। 70 साल से ज्यादा उम्र वाले लोगों के लिए आयुष्मान भारत योजना



शुरू करने को पिछले महीने ही कैबिनेट ने मंजूरी दी थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस योजना के लाभार्थियों को आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जनआरोग्य (एबी-पीएमजेएवाई) कार्ड भी सौंपा। अखिल भारतीय आयुर्वेद

संस्थान के चरण-दो का उद्घाटन समारोह में प्रधानमंत्री ने स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में बुनियादी ढांचे को बढ़ावा

देने के लिए कई स्वास्थ्य संस्थानों का उद्घाटन और शिलान्यास किया, जिसमें पहले अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान के चरण-दो का उद्घाटन शामिल है। इस चरण में, एक पंचकर्म अस्पताल, औषधि निर्माण के लिए एक

## भारत को विकास के उच्च स्तर को जारी रखने के लिए निजी निवेश को आकर्षित करने की आवश्यकता : राष्ट्रपति

एजेसी नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि भारत को प्रति व्यक्ति आय के स्तर को बढ़ाने और अशांत वैश्विक वातावरण के बीच भी विकास के उच्च स्तर को जारी रखने के लिए निजी निवेश को आकर्षित करने की आवश्यकता है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू आज राष्ट्रपति भवन में उनसे मिलने आए भारतीय व्यापार सेवा और भारतीय लागत लेखा सेवा के प्रोवेशंस को संबोधित कर रही थीं।

इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि वर्ष 2023-24 में 8.2 प्रतिशत की तीव्र आर्थिक वृद्धि के साथ, भारतीय अर्थव्यवस्था भू-राजनीतिक चुनौतियों का सामना करने में लचीलापन प्रदर्शित कर रही है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार को कई पहल विकास के लिए एक सक्षम पारिस्थितिकी तंत्र बना रही है। राष्ट्रपति ने कहा कि विनिर्माण को बढ़ावा देने पर सरकार के बढ़ते फोकस के साथ भारतीय व्यापार सेवा के

अधिकारियों को यह जिम्मेदारी होगी कि वे सीमाओं के पर व्यापार बढ़ाने के लिए अनुकूल माहौल और बुनियादी ढांचे के निर्माण को सुगम बनाएं। उनसे व्यापार



जीवन पर प्रभाव डालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। राष्ट्रपति ने कहा कि भारतीय लागत लेखा सेवा के अधिकारी सरकारी कार्य, योजनाओं

और परियोजनाओं में व्यय को तर्कसंगत बनाने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं, साथ ही राज्यसभा पारदर्शी मूल्यांकन सुनिश्चित करते हैं। उनसे जटिल वित्तीय और लागत प्रबंधन मुद्दों को संभालने की कुशलता को अपेक्षा की जाती है।

## सीकर में पुलिया से टकराई बस, 12 लोगों की मौत, सीएम ने दुख जताया

एजेसी सीकर। सीकर जिले के लक्ष्मणगढ़ इलाके में एक बस पुलिया से टकरा गई। इस हदसे में 12 लोगों की मौत हो गई और 30 से ज्यादा लोग घायल बताए जा रहे हैं। हदसे के बाद पूरे क्षेत्र में शोक की लहर है। इस हदसे पर मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने दुख जताया है।

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, बस सालासर से लक्ष्मणगढ़ आ रही थी। इस दौरान बस अनियंत्रित होकर लक्ष्मणगढ़ क्षेत्र में पुलिया से टकरा गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और राहत कार्य शुरू किया। हदसे में घायल लोगों को इलाज के लिए लक्ष्मणगढ़ के सीएचसी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हालांकि, कई लोगों की हालत गंभीर होने के कारण उन्हें सीकर के कल्याण अस्पताल रेफर कर दिया गया है। सीएम भजन लाल शर्मा ने इस हदसे पर दुख जताया है। सीएम ने

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, +सीकर के लक्ष्मणगढ़ क्षेत्र में बस दुर्घटना में हुई जनहानि



अत्यंत दुःख देह हृदयविदारक है। मेरी गहरी संवेदनाएं मुक्तों के शोक संतप्त परिवारजनों के साथ हैं। संबन्धित अधिकारियों को घायलों का समुचित उपचार सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया है। प्रभु श्री राम से प्रार्थना है

कि दिवंगत आत्माओं को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें तथा घायलों को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ दें। ओम शांति।

संतप्त परिवारों के साथ ही। ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि वे दिवंगत आत्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और उनके परिजनों को इस असमी पीड़ा को सहन करने की शक्ति दें। इस घटना में घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करती हूँ। जिला कलेक्टर मुकुल शर्मा और पुलिस अधीक्षक भुवन भूषण ने अस्पताल पहुंचकर घायलों का हालचाल जाना और राहत कार्यों का जायजा लिया। प्रशासन ने हदसे के कारणों की जांच के आदेश दे दिए हैं। साथ ही, मुक्तों के परिजनों के लिए सुआवजे की घोषणा की जा सकती है। इस हदसे ने दीपावली के उल्लास को मातम में बदल दिया है, जिससे पूरे क्षेत्र में गमगीन माहौल है। स्थिति पर नजर रखने के लिए पुलिस और प्रशासन के अधिकारी अस्पताल में डटे हुए हैं, ताकि घायलों को हसंभव मदद उपलब्ध कराई जा सके।

## वक्फ नोटिस के चलते किसी किसान को बेदखल नहीं किया जाएगा: सिद्धारमैया

एजेसी नई दिल्ली। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने आज कहा



कि वक्फ संबंधित नोटिस के चलते किसी भी किसान को उसकी जमीन से बेदखल नहीं किया जाएगा। अगर किसानों को नोटिस जारी किया गया है तो उसे वापस लिया जाएगा। उन्होंने विजयपुर, यादगिरि और धारवाड़ जिलों

में वक्फ संपत्ति के रूप में किसानों को दिए गए नोटिस के बारे में प्रकरणों से बातचीत के दौरान एक प्रश्न का जवाब

देते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि राज्यसभा मंत्री कृष्णावैरे गोड्ड, विजयपुर जिला प्रभारी मंत्री एबी पाटिल और वक्फ मंत्री जमीर अहमद ने कल संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इस बारे में स्पष्टाई दी है।

## पूर्वी लद्दाख सीमा पर भारत और चीन के सैनिक वापस लौटे, अपने-अपने सीमा क्षेत्रों में कर सकेंगे गश्त

एजेसी श्रीनगर। पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर भारत और चीन के बीच सैनिकों की वापसी की प्रक्रिया पूरी हो गई। इस प्रक्रिया के बाद दोनों देशों के सेनाओं ने एक-दूसरे की स्थिति का सत्यापन और बुनियादी ढांचे को खत्म करना शुरू कर दिया। सूत्रों ने बताया कि देपसांग मैदानों और डेमचोक में अस्थायी ढांचों को हटाने का काम लगभग पूरा हो चुका है और दोनों पक्षों की ओर से कुछ हद तक सत्यापन भी हो चुका है। सत्यापन प्रक्रिया भौतिक रूप से और मानव रहित हवाई वाहनों (यूएवी) का उपयोग करके की जा रही है। इस समझौते के बाद दोनों देशों के सैनिक अपनी

नियंत्रण रेखा पर सैन्य गतिरोध बना हुआ है। इस मुद्दे पर भारत ने पिछले हफ्ते चीन के साथ डेमसांग प्लेन्स और डेमचोक में सैनिकों की गश्त को लेकर समझौता



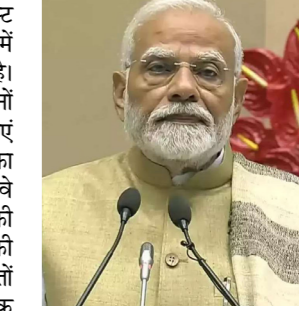
किया था। उसके चार दिन बाद दोनों देशों ने विवादित जगहों से अपने सैनिकों को वापस बुला लिया है। बीजिंग ने भी इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि इस समझौते के बाद चीनी और भारतीय सैनिकों ने अपने-अपने काम सुचारु रूप से शुरू कर दिए हैं। सेना के सूत्रों ने बताया कि सत्यापन प्रक्रिया पूरी होने के

बाद समझौते के अनुसार अगले दो दिनों में गश्त शुरू हो जाएगी। दोनों पक्षों को पहले से सूचित कर दिया जाएगा ताकि आपसी विवाद की स्थिति दोबारा पैदा न

## सीकर सड़क हादसे पर प्रधानमंत्री ने जताया शोक, अनुग्रह राशि की घोषणा

एजेसी नई दिल्ली। प्रधानमंत्री ने राजस्थान के सीकर में हुए सड़क हादसे पर शोक व्यक्त करते हुए अनुग्रह राशि की घोषणा की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक्स पोस्ट में कहा कि राजस्थान के सीकर में हुआ बस हादसा हृदयविदारक है। इसमें जान गंवाने वालों के परिजनों के प्रति उनकी गहरी शोक-संवेदनाएं हैं। ईश्वर उन्हें इस पीड़ा को सहने का संबल प्रदान करें। इसके साथ ही वे सभी घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हैं। राज्य सरकार की देखरेख में स्थानीय प्रशासन पीड़ितों की हसंभव मदद में जुटा है। एक अन्य पोस्ट में उन्होंने कहा कि प्रत्येक मुक्त के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (पीएमएनआरएफ) से 2 लाख रुपये रुपये की अनुग्रह राशि दी जाएगी।

इसके अलावा प्रत्येक घायल को 50 हजार रुपये दिए जाएंगे। उल्लेखनीय है कि राजस्थान के सीकर के लक्ष्मणगढ़ में हुए सड़क हादसे में



आठ लोगों की दर्दनाक मौत हो गई है। हादसा तब हुआ जब एक प्राइवेट बस तेज गति से पुलिया से जा टकराई। हादसे में 24 लोग घायल हुए हैं।

## केदारनाथ धाम के क्षेत्र रक्षक भुकुंट भैरवनाथ के कपाट शीतकाल के लिए बंद

एजेसी केदारनाथ। केदारनाथ धाम के क्षेत्र रक्षक भुकुंट भैरवनाथ के कपाट विधिविधान के साथ शीतकाल के लिए बंद हो गए हैं। इस अवसर पर हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भुकुंट भैरवनाथ का आशीर्वाद लिया। केदारनाथ धाम के कपाट बंद होने से पूर्व भैरवनाथ के कपाट मंगलवार या शनिवार को बंद किए जाने की परम्परा है, जिसका पालन सदियों से किया जा रहा है। केदार बाबा के कपाट बंद से पहले अपराह्न डेढ़ बजे भगवान केदारनाथ के द्वारापल रक्षक भुकुंट भैरवनाथ के कपाट शीतकाल के लिए विधि-विधान के साथ पूजन अर्चन करने के बाद बंद कर दिए गए। केदारनाथ मंदिर से पुजारी शिवशंकर लिंग सहित

के बाद पूजा-अर्चना कर भोग समर्पित किया और हवन यज्ञ भी



तथा पंचपंडा समिति के पदाधिकारीगण, भैरवनाथ मंदिर पहुंचे तथा भुकुंट भैरवनाथ के जलाभिषेक

किया गया। इस अवसर पर विश्व कल्याण तथा चारधाम यात्रा के निर्विघ्न समापन की प्रार्थना की गई।

इसके पश्चात अपराह्न डेढ़ बजे भगवान भैरवनाथ के कपाट शीतकाल के लिए बंद कर दिए गए। बीकेटीसी मीडिया प्रभारी डॉ. हरिश गोड्ड ने बताया कि भैयादूज पर्व पर केदारनाथ धाम के कपाट शीतकाल के लिए बंद हो जाएंगे। बाबा केदारनाथ के कपाट बंद होने से पूर्व भैरवनाथ के कपाट बंद करने की परम्परा है।

केदारनाथ धाम के कपाट भैयादूज 3 नवंबर को शीतकाल के लिए बंद हो जाएंगे। उन्होंने बताया कि इस वर्ष अब तक केदारनाथ धाम पहुंचने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या साढ़े 15 लाख से ज्यादा हो चुकी है। इन दिनों प्रतिदिन 19 से 20 हजार के करीब श्रद्धालु केदारनाथ धाम दर्शन को पहुंच रहे हैं।

## सिद्धार के कलियार शरीफ में बांग्लादेशी गिरफ्तार, महीने पहले बेनापुर बॉर्डर से अवैध रूप से घुसा था

एजेसी हरिद्वार। हरिद्वार पुलिस ने एक बांग्लादेशी घुसपैटिएर को पिरान कलियार क्षेत्र से गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार बांग्लादेशी वीजा बीजा से पासपोर्ट के अवैध रूप से भारत में घुसा था। कलियार पुलिस से अभिसूचना इकाई द्वारा संयुक्त चेकिंग प्रक्रिया के दौरान भाषा व बोलचाल में शक होने पर आरोपित से सख्ती से पूछताछ की गई तो उसने अपना नाम दुगु शेख पुत्र अलाउद्दीन निवासी बांग्लादेश बताया। शेख 4 माह पूर्व



बंगलादेश से पैसा कमाने के लिए बनेपार बॉर्डर पार कर भारत आया था। कुछ समय महाराष्ट्र में रहने के बाद दिनांक 27 अक्टूबर को ट्रेन से रुड़की पहुंचा और वहां से कलियार शरीफ आ गया। पूछताछ के दौरान आरोपित अपनी आईडी, वीजा और पासपोर्ट नहीं दिखा सका। पुलिस अधीक्षक ग्रामीण स्वप्न कुमार सिंह ने बताया कि पूछताछ के बाद पुलिस टीम द्वारा आरोपित के खिलाफ विदेशी अधिनियम व पासपोर्ट अधिनियम संहिता के अन्वय धाराओं में मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया गया।



# बॉडी में आ रहे हैं इन बदलावों को कभी न करें नजरअंदाज!

शरीर के सभी अंगों का सही तरह से काम करना बहुत जरूरी है। ज्यादातर लोग शरीर से जुड़ी छोटी-मोटी परेशानियों को नजरअंदाज कर देते हैं लेकिन बाद में यह बीमारी का रूप ले लेती है। अगर आपको भी शरीर से जुड़े कोई लक्षण दिखें तो उसे भूलकर भी इग्नोर न करें, तुरंत डॉक्टर जांच करवाएं।



## जानें किन लक्षणों में सतर्क रहना है जरूरी

### बार-बार मिठाई खाना

अगर अचानक आपको दिल मिठाई खाने को कर रहा है तो इसका मतलब है कि आपके शरीर में शुगर की कमी है। ऐसे में आप शहद खा सकते हैं।

### मसूड़ों में खून आना

कई बार ब्रश करते समय मसूड़ों में खून आने लगता है। शरीर में विटामिन-सी की कमी के कारण ऐसा होता है। ऐसे में अपनी डाइट में खट्टे फल, पालक, टमाटर, फूलगोभी और शिमला मिर्च शामिल करें।

शरीर में विटामिन-ई की कमी के कारण त्वचा झड़ने लगती है। झड़ने से छुटकारा पाने के लिए हरी सब्जियां, मशरूम, तेल और मछली का सेवन करें।

### खुरदरे नाखून

अगर आपके नाखून खुरदरे हैं तो इसका मतलब आपके शरीर में विटामिन-बी की कमी है। इसके लिए दूध, नारियल और मशरूम खाएं।



# कमजोर हड्डियों को मजबूत बनाएं ये आहार...

हड्डियों में बहुत से लोगों को जोड़ों में दर्द की समस्या रहती है। जब हड्डियां कमजोर हो जाती हैं, जिस वजह से बार-बार उनमें दर्द रहने लगता है। अगर आप भी सर्दियों में इस तरह की परेशानी से गुजर रहे हैं तो अपने खान-पान में थोड़ा बदलाव लाएं। इससे काफी फायदा होगा। अपने आहार में ऐसी चीजों को शामिल करें, जो हड्डियों को मजबूत बनाए रखेंगी। हम आपको कुछ ऐसे आहार के बारे में बताएंगे, जिनको सर्दियों में खाना काफी फायदेमंद हो सकता है।



- दही हड्डियों के लिए काफी फायदेमंद है। दही में शक्कर डालने के बजाए, उसमें जीरा या नमक मिलाकर खाएं।
- पनीर विटामिन डी होता है, जिसको खाने से हड्डियां मजबूत रहती हैं। ध्यान रखें कि पनीर को ज्यादा तेल में न तले। इसके अलावा पनीर को ग्रिलड करके भी खाया जा सकता है।
- दूध में विटामिन डी होता है, जिसको ड्राई करने में मिलाकर पीएं। इससे जोड़ों से जुड़ी कई प्रॉब्लम दूर होगी।
- संत्रों के रस में भी विटामिन डी मौजूद होता है। लेकिन ध्यान रखें कि जूस में ज्यादा शुगर की मात्रा न हो।
- फिश में भी विटामिन डी मौजूद होते हैं। इसको खाने हड्डियों की समस्या दूर रहती है।
- अंडा भी आपके लिए काफी फायदेमंद साबित होगा। इसलिए रोजाना एक अंडे का सेवन जरूर करें। इसको आप जैसे चाहें उबाल कर या फिर ऑमलेट बनाकर खाएं।
- मशरूम में भी विटामिन डी मौजूद होते हैं। इसको आप सब्जी या अन्य किसी तरह खा सकते हैं।

## सुझाव



# डीहाईड्रेशन की समस्या में अपनाएं ये उपाय

सर्दियों के मौसम में पसीना न आने के कारण और कम प्यास लगने के कारण डीहाईड्रेशन की समस्या हो जाती है। इसके अलावा सर्दियों में सांस लेने-छोड़ने के दौरान मुंह से निकलने वाली भाप शरीर में पानी का स्तर कम कर देती है। आज हम आपको बताएंगे कि किस तरह आप सर्दियों के मौसम में डीहाईड्रेशन की समस्या से बचाल करके खुद को सुरक्षित रख सकते हैं।

- सर्दियों के मौसम में इससे बचने के लिए दिन में कम से कम 1 बार पानी में थोड़ा-सा नमक और चीनी मिलाकर पीएं।
- रोजाना 8-10 गिलास गुनगुना पानी पीने से आप डीहाईड्रेशन की समस्या से बच सकते हैं।
- दिन में 1 बार नारियल पानी पीने से आपके शरीर में पानी की कमी पूरी हो जाती है।
- मसालेदार भोजन, कॉफी, कोल्ड ड्रिंक्स और चॉकलेट का सेवन आपके शरीर में पानी की कमी का कारण बन सकती है।
- धूम्रपान, शराब, सिगरेट और तम्बाकू के कारण भी आपको डीहाईड्रेशन की समस्या हो सकती है। इसलिए इन चीजों से दूरी बनाकर रखने में ही आपकी भलाई है।
- सर्दियों में ऐसे फलों का सेवन ज्यादा करें जिससे आपके शरीर में पानी की कमी पूरी हो जाए। इसके लिए आप हरी सब्जियां, चावल, दही, सेब, संतरा और मौसमी का सेवन कर सकते हैं।
- सर्दियों में ज्यादा परिश्रम और घर से बाहर रहने से बचें।
- ऐसे में मौसम में ठंड से बचने के लिए आप टाइट और फसे हुए कपड़े पहन लें। इसकी बजाए गर्म लेकिन कम और ढीले कपड़े पाएं।

इस भागती-दौड़ती जिंदगी में लोगों के पास टाइम कम है और काम ज्यादा। ऐसे में बहुत से लोग बचे हुए खाने को फ्रिज में रख देते हैं और उसे बाद में गर्म करके खा लेते हैं।

# इन चीजों को दोबारा गर्म भूलकर भी न करें

क्या आप जानते हैं कि खाने की कई चीजें ऐसी हैं, जिन्हें दोबारा गर्म करने पर उनमें जहरीले तत्व आ जाते हैं। आज हम आपको ऐसी 7 चीजों के बारे में बता रहे हैं।

- **चावल**  
कच्चे चावलों में जीवाणु होते हैं, जो पकने के बाद भी जिंदा रहते हैं। अगर चावल पकाने के बाद उन्हें रूम टेम्परेचर पर छोड़ दिया जाए तो ये जीवाणु बैक्टीरिया में बदल जाते हैं। ऐसे चावलों को खाने से उल्टी और दस्त का खतरा बढ़ जाता है।
- **आलू**  
आलू को अगर उबालने के बाद रूम टेम्परेचर पर ठंडा होने के लिए रख दें, तो गरमाहट से उसमें बांटुलिज्म नाम का एक रेस्यर बैक्टीरिया उत्पन्न हो जाता है, जो माइक्रोवेव में गर्म करने से भी जिंदा रहता है। ऐसे में जरूरी है कि उबालने के बाद इसे ठंडा होने के लिए सीधे फ्रिज में डाल दें।
- **पालक व अन्य पत्तेदार सब्जियां**  
पालक और दूसरी पत्तेदार सब्जियों में काफी मात्रा में नाइट्रेट पाया जाता है। अगर इन सब्जियों



- को दोबारा गर्म करें, तो ये नाइट्रेट जहर में तब्दील हो जाता है।
- **चुकंदर**  
चुकंदर में भी भरपूर मात्रा में नाइट्रेट पाया जाता है। इसे दोबारा गर्म करके खाने से आपके पेट में दर्द हो सकता है।
- **अंडे**  
उबले अंडे, आमलेट, एग करी या अंडे की पुर्जी को दोबारा गर्म करने से यह जहरीली हो जाती है और आपका डाइजेशन सिस्टम खराब हो जाता है।
- **मशरूम**  
मशरूम को काटने भर से ही उसमें मौजूद प्रोटीन तत्व कम होने लगते हैं। इसलिए इसे एक बार पकाने के बाद फिर से गर्म करके खाने से आपका पेट खराब हो सकता है।
- **चिकन**  
चिकन खाने के शौकीन लोग इस बात का ध्यान रके कि रेफ्रिजरेट किए हुए चिकन को दोबारा गर्म न करें। इसे दोबारा गर्म करके खाने से डाइजेशन सिस्टम खराब हो जाता है।



# ये हैं अमरूद के अनगिनत फायदे

कच्चा और सूजन हो जाएगी गायब

अमरूद मीठे और स्वादिष्ट फलों में से एक है जो कई बीमारियों का इलाज भी करता है। अमरूद में विटामिन सी, विटामिन ए, कैल्शियम, आयर्न जैसे सभी जरूरी पोषक तत्व मौजूद होते हैं। इतना ही नहीं, इसके बीज और पत्तियां भी काफी फायदेमंद हैं। अमरूद खाने की सलाह तो डॉक्टरों ही देते हैं, क्योंकि इसके सेवन से कई गंभीर बीमारियां जैसे कब्ज, मधुमेह अन्य से छुटकारा मिलता है। आइए जानते हैं अमरूद के अनगिनत फायदे, जिनके बारे में सभी को पता होना चाहिए।

● **पाचन क्रिया दुरुस्त:** अमरूद को काले नमक के साथ खाएं। इससे पाचन क्रिया ठीक रहेगी और पेट संबंधी कई समस्याएं दूर होंगी।

● **पेट के कीड़े:** अगर बच्चे के पेट में कीड़े हैं तो बच्चे को अमरूद खिलाएं काफी फायदा मिलेगा।

● **आंखों की सूजन:** कई बार आंखों के नीचे काले घरे और सूजन आने लगती है जिससे आंखें काफी अजीब लगती हैं। ऐसे में अमरूद की पत्तियों को पीसकर पेट बनाएं और आंखों के नीचे लगाएं।

● **कैंसर**  
अमरूद में लाइकोपीन नामक फाइटी न्यूट्रिएंट मौजूद होता है जो शरीर को कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों के खतरे से बचाव रखता है।

# इम्युनिटी बढ़ाने के लिए रोजाना खाएं ये आहार



- **नारियल पानी**  
शरीर में इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी होने पर भी कमजोरी आनी शुरू हो जाती है। नारियल पानी पीने से इलेक्ट्रोलाइट्स की मात्रा अच्छी हो जाती है और यह कुदरती खनिज पदार्थों का भी बहुत अच्छा स्रोत है।
- **चुकंदर**  
चुकंदर को ज्यादातर सलाद के तौर पर खाया जाता है। इसमें कुदरती एंटीऑक्सीडेंट और हेमोस्टैटिक गुण पाए जाते हैं। चुकंदर के 2 चम्मच जूस में 1 गिलास गाजर का जूस मिलाकर पीने से ब्लड प्रेशर तेजी से बढ़ते हैं और शरीर की प्रतिरक्षा क्षमता भी मजबूत होती है।
- **गिलोय**  
खून की कमी को पूरा करने में गिलोय बहुत फायदेमंद है। रोजाना 2 चुटकी गिलोय के पाउडर में 1 चम्मच शहद मिलाकर खाने से ब्लड में प्लेटलेट्स सैत तेजी से बढ़ने लगते हैं। इससे रोगों से लड़ने की शक्ति भी मजबूत होती है। रात को गिलोय की उड़ी को पानी में भिगो कर इसे छान कर सुबह पीने से भी फायदा मिलता है।
- **पालक:** शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पालक का सेवन करना भी लाभकारी है। हर रोज एक कप पानी में 4-5 पालक के पत्तों को डालकर उबाल लें और ठंडा होने पर आधा गिलास टमाटर का रस डालकर पीने से फायदा मिलता है। इसके अलावा पालक और टमाटर का सूप भी पी सकते हैं।
- **पपीता**  
पपीता ब्लड के प्लेटलेट्स बढ़ाने में मददगार है। पपीते की पत्तियों का रस पीने या फिर पका पपीता खाना भी लाभकारी होता है।

## रेसिपी

### एग्लेस आमलेट

**सामग्री**

- बेसन: 130 ग्राम
- मैदा: 70 ग्राम
- नमक: 1/2 छोटा चम्मच
- बेकिंग पाउडर: 1 छोटा चम्मच
- पानी: 550 मिलीलीटर
- नींबू का रस: 1 छोटा चम्मच
- तेल: जरूरत अनुसार
- टमाटर: स्वादानुसार
- प्याज: स्वादानुसार
- धनिया: स्वादानुसार

**विधि**

एक बाल में 130 ग्राम बेसन, 70 ग्राम मैदा, 1/2 छोटा चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच बेकिंग पाउडर, 550 मिलीलीटर पानी डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। इसमें 1 छोटा चम्मच नींबू का रस मिलाकर गाढ़ा मिश्रण तैयार करें। एक पैन को मध्यम आंच पर रखें और इसमें थोड़ा सा तेल डालें। अब तैयार किए गए मिश्रण को इसमें डालकर करीब 5 मिनट तक पकाएं। इस पर स्वादानुसार थोड़े टमाटर, प्याज और धनिया डालें। इसे 30 सेकंड तक और पकाएं। आपका एग्लेस आमलेट तैयार है, सर्व करें।

### जरदा राइस (मीठे चावल)

**सामग्री**

- पनीर: 2 लीटर
- नमक: 1/2 छोटा चम्मच
- पनीर: 2 बड़े चम्मच
- ऑर्गेनिक फूड फ्लवर (ऑरेंज रेड): 2 छोटे चम्मच
- भिगोए हुए चावल: 300 ग्राम
- घी: 100 ग्राम
- इलायची: 4 फली
- लौंग: 4
- चीनी: 200 ग्राम
- फेहल एसेंस: 1 छोटा चम्मच
- टूटी परस्ता: 2 छोटे चम्मच
- बादाम: 1 बड़ा चम्मच
- पिस्ता: 1 बड़ा चम्मच
- खोया: 2 बड़े चम्मच
- गुलाब जामुन: जरूरत अनुसार
- रसगुल्ल: जरूरत अनुसार

**विधि**

एक बर्तन में 300 ग्राम चावल धोएं और इन्हें 3 से 4 घंटे के लिए पर्याप्त पानी में भिगोकर रख दें। मध्यम आंच पर एक पाँट में 2 लीटर पानी गर्म करें और इसमें इसमें 1/2 छोटा चम्मच नमक भी डाल दें। इसके बाद एक कटोरी में 2 बड़े चम्मच पानी डालें और इसमें 2 छोटे चम्मच ऑर्गेनिक फूड फ्लवर (ऑरेंज रेड) डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। इस मिश्रण को आंच पर रखे पानी में मिलाकर दें। अब 300 ग्राम भिगोए हुए चावल को इसमें डालकर अच्छी तरह से मिला लें। इसे तब तक उबालें जब तक कि चावल अच्छे से पक न जाएं। फिर इसे आंच से उतार कर एक तरफ रख दें। एक अन्य कढ़ाही में 100 ग्राम घी डालकर मध्यम आंच पर गर्म करें। इसमें 4 इलायची, 4 लौंग डालकर मिलाएं। फिर इसमें उबले हुए चावल मिलाकर अच्छी तरह से मिलाएं। इसके बाद इसमें 200 ग्राम चीनी, 1 चम्मच फेहल एसेंस डालकर अच्छे से मिलाएं। इसे तब तक पकाएं, जब तक कि चीनी पूरी तरह से घुल न जाए। अब चावल में 2 छोटे चम्मच टूटी परस्ता, 1 बड़ा चम्मच बादाम, 1 बड़ा चम्मच पिस्ता, 2 बड़े चम्मच खोया डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। इसे दहन के साथ कर दें और 10 मिनट तक पकाएं। चावल को सर्व करने वाले बर्तन में डालकर टूटी परस्ता, खोया, रसगुल्ल, गुलाब जामुन, बादाम और पिस्ता के साथ गार्निश करें। आपके जरदा राइस (मीठे चावल) तैयार है, इन्हें सर्व करें।



**हिमाचल ने आंध्र प्रदेश पर दर्ज की बड़ी जीत, एक पारी और 38 रनों से हराया**

**एजेंसी**  
धर्मशाला। विशाखापत्तनम के डॉ वाईएस राजशेखर रेड्डी क्रिकेट स्टेडियम में हिमाचल और आंध्र प्रदेश के बीच खेले गए रणजी मैच में हिमाचल ने बड़ी जीत दर्ज की है। पहले बल्लेबाजी और फिर गेंदबाजी में भी शानदार प्रदर्शन के दम पर हिमाचल ने आंध्र प्रदेश को एक पारी और 38 रनों से मात दी है। इस जीत के बाद हिमाचल पाईंट टेबल पर चौथे से तीसरे स्थान पर पहुंच गया है। आंध्र प्रदेश की पहली पारी के 3.44 रनों के जवाब में हिमाचल ने कप्तान ऋषि धवन की 195 रनों की शानदार पारी के दम पर हिमाचल 500 का स्कोर कर पाया था। 156 रनों की बढ़त के साथ हिमाचल ने मैच में अपनी स्थिति मजबूत कर ली। वहीं दूसरी पारी में बल्लेबाजी के लिए उतरी आंध्र प्रदेश की टीम पूरी तरह लड़खड़ा गई और पूरी टीम महज 118 रनों पर आउट हो गई जिसके चलते हिमाचल ने एक पारी और 38 रनों से मैच जीत लिया। हिमाचल की ओर से दूसरी पारी में गेंदबाज विनय गलेटिया ने आंध्र प्रदेश के पांच बल्लेबाजों को पवेलियन का रास्ता दिखाया। इसके अलावा मयंक डंगर को चार जबकि एक विकेट दिवेश शर्मा को मिला। आंध्र प्रदेश पर बड़ी जीत दर्ज कर रणजी ट्रॉफी के रूप में हिमाचल व्हाइट टेबल पर तीसरे स्थान पर आ गया है। हिमाचल के अब 14 अंक ही गए हैं। इस रूप में विदर्भ की टीम 18 अंकों के साथ टॉप पर है जबकि गुजरात भी 15 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर है। वहीं 10 अंकों के साथ राजस्थान चौथे स्थान पर बना हुआ है। हिमाचल ने अभी तक तीन मैच खेले हैं जिनमें उसे दो में जीत जबकि एक में हार मिली है।

**भारत के खिलाफ अंतिम टेस्ट से बाहर हुए केन विलियमसन**

**नई दिल्ली।** न्यूजीलैंड के बल्लेबाज केन विलियमसन भारत के खिलाफ मुंबई में शुरू होने वाले तीसरे और अंतिम टेस्ट मैच में नहीं खेलेंगे। 34 वर्षीय विलियमसन, जो बेंगलूरु और पुणे में पहले दो टेस्ट में भी नहीं खेले पाए थे, तीसरे टेस्ट का भी हिस्सा नहीं होंगे, इसके बजाय वह इंग्लैंड के खिलाफ आगामी तीन टेस्ट मैचों की घरेलू श्रृंखला के लिए तैयार होने के लिए अपना कर्करा की चोट का पुनर्वास जारी रखेंगे। इंग्लैंड का पहला टेस्ट 28 नवंबर से क्राइस्टचर्च के हेले ओवल में शुरू होगा। न्यूजीलैंड ने बेंगलूरु में भारत को आठ विकेट से और पुणे में 113 रन से हराकर 2-0 की अजेय बढ़त बना ली और भारत में पहली बार ऐतिहासिक टेस्ट सीरीज जीत ली है। न्यूजीलैंड के मुख्य कोच गैरी स्टीव ने कहा, केन लगातार अच्छे संकेत दिखा रहे हैं, लेकिन वह विमान में चढ़ने और हमारे साथ जुड़ने के लिए बिस्कुल तैयार नहीं है। हालांकि चीजे आशाजनक दिख रही हैं, हमें लगता है कि उसके लिए सबसे अच्छा कदम न्यूजीलैंड में रहना और अपने पुनर्वास के अंतिम भाग पर ध्यान केंद्रित करना है, इसलिए उसके लिए इंग्लैंड जाना अच्छा रहेगा। इंग्लैंड सीरीज में अभी एक महीना बाकी है इसलिए अभी सतर्क रख अपनाने से यह सुनिश्चित हो जाएगा कि वह क्राइस्टचर्च में पहले टेस्ट के लिए तैयार है।

**बेंगलूरु बुल्स ने दबंग दिल्ली को एक अंक से हराकर दर्ज की सीजन की पहली जीत**

**हैदराबाद।** बेंगलूरु बुल्स ने शानदार वापसी करते हुए गांचीबोवली इंडोर स्टेडियम में खेले गए प्रो कबड्डी लीग के 11वें सीजन के 24वें मैच दबंग दिल्ली केसी को 34-33 से हरा दिया। दिल्ली की पांच मैचों में यह तीसरी हार है। बुल्स की जीत के नायक जयभंगवान (11 अंक) रहे, जिन्होंने सीजन का पहला सुपर-10 लगाया। परदीप नखवाल ने सात अंक लिए जबकि डिफेंस में नितिन रावल ने हार्ड-5 लगाया। इनके अछे प्रदर्शन के आगे आशु मलिक (13) का परफॉर्मस फीका रहा। दिल्ली के लिए विनय ने भी 6 अंक बनाए। नवीन के बौर मैट पर उतरी दिल्ली ने अच्छे शुरूआत के साथ 3-0 की लीड ले ली। बुल्स को बोनस के रूप में चौथे मिनेट में पहला अंक मिला। फिर डिफेंस ने डू और डर्ड रेंड पर विनय का शिकार कर स्कोर 2-3 कर दिया। दिल्ली ने जल्द ही फासला दोगुने से अधिक कर बुल्स को सुपर टैकल सिचुएशन में डाल दिया। आशु आए और जबर्दस्त क्रिक के साथ स्कोर 9-5 कर दिया। और फिर दिल्ली ने बुल्स को आलआउट कर 13-7 की लीड ले ली। फेरुड टैकल्स बुल्स को परेशान कर रहे थे। 10 मिनेट में उनके नाम 8 फेरुड टैकल्स थे। इसी बीच आशु ने सुपर-10 पूरा किया। ब्रेक के बाद दोनों टीमों को चार-चार अंक मिले। 15 मिनेट के बाद स्कोर 17-11 था।

**पुनेरी पल्टन और बंगाल वारियर्स ने खेला सीजन का तीसरा टाई**

**हैदराबाद।** पुनेरी पल्टन और बंगाल वारियर्स ने प्रो कबड्डी लीग के 11वें सीजन का तीसरा टाई खेला। आज यहां गांचीबोवली इंडोर स्टेडियम में फजल अलरावली ने जहां 500वां टेबल व्हाइट हासिल कर इसे यादगार बनाया वहीं दोनों टीमों ने 32-32 के स्कोर पर मामला सैटल करने का फैसला किया। इस मैच में सबसे यादगार क्षण बंगाल के आलराउंडर सुशील कांबेकर के लिए आया। उन्होंने फजल के साथ अपने करियर के पहले सुपर-10 का जयन मनाया। यह सुशील ही थे, जिन्होंने 14-22 के स्कोर पर बंगाल की वापसी कराई थी। पल्टन के लिए आकाश शिंदे और पंजु मोंहिने ने 8-8 अंक बटोरे। बंगाल के डिफेंस ने पहली रेंड पर अलसम को लपका तो पल्टन के डिफेंस ने मनिंदर का शिकार कर हिस्सा चुक्रा किया। नितिन ने हालांकि उन्हें रिवाइव कर लिया। मनिंदर दूसरी रेंड पर भी लपके गए। पांच मिनेट के बाद पल्टन ने 5-2 की लीड बनाकर बंगाल को सुपर टैकल सिचुएशन में डाल दिया।

**लंका टी10 सुपर लीग के लिए प्लेयर ड्राफ्ट 10 नवंबर को**

**एजेंसी कोलंबो।** लंका टी10 सुपर लीग के उद्घाटन संस्करण के लिए प्लेयर ड्राफ्ट 10 नवंबर, 2024 को कोलंबो में होगा। इस टूर्नामेंट का आयोजन 12 से 22 दिसंबर तक किया जाएगा, जिसमें छह फ्रेंचाइजी टीमों शामिल होंगी। क्रिकेट के सबसे तेज प्रारूप में स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। प्रत्येक फ्रेंचाइजी अपनी टीम के लिए अधिकतम 17 खिलाड़ियों और न्यूनतम 15 खिलाड़ियों का चयन करेगी।

और एक विदेशी खिलाड़ी, इसी तरह श्रेणी बी से, एक स्थानीय और एक विदेशी खिलाड़ी को अनुबंधित करने

की अनुमति है। ड्राफ्ट में 11 राउंड होंगे, पहले राउंड का निर्णय मेन्युअल ड्रा द्वारा किया जाएगा और शेष राउंड पिफ ऑर्डर के लिए रेडमाइजर ड्रा निर्धारित किए जाएंगे। पहले दो राउंड में, दो शीर्ष स्तरीय खिलाड़ियों - एक श्रीलंकाई और एक विदेशी - का चयन किया जाएगा, प्रत्येक की कीमत

**इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए शिमरोन हेटमायर वेस्टइंडीज टीम में शामिल**

**एजेंसी एंटीगुआ।** शिमरोन हेटमायर को इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की सीरीज के लिए वेस्टइंडीज की वनडे टीम में वापस बुलाया गया है, जो गुरुवार को एंटीगुआ में शुरू होगा। हेटमायर को एलिक अथानाजे की जगह टीम में शामिल किया गया है, जो श्रीलंका दौरे से वापस लौटे समूह से एकमात्र बदलाव है।

हेटमायर ने आखिरी बार दिसंबर 2023 में वनडे खेला था, जब वह इंग्लैंड को 2-1 से हराते वाली टीम का हिस्सा थे। वह व्यक्तिगत कारणों से श्रीलंका दौरे से रुक गए थे, खल ही में सीपीएल में रन बनाने वाली की सूची में वे पांचवें स्थान पर रहे थे। अथानाजे मौजूदा सलामी बल्लेबाजों में से एक थे, लेकिन फल्लेले में श्रीलंका के खिलाफ तीसरे वनडे के लिए एविन लुईस से अपनी जगह खो दी। लुईस ने तीन

साल से अधिक समय में अपना पहला वनडे मैच खेला, उन्होंने 61 गेंदों पर नाबाद 102 रन बनाए, जिससे वेस्टइंडीज ने श्रीलंका पर सांत्वना दी



के साथ श्रृंखला समाप्त की। शाई होप इस समूह की कप्तानी करेंगे, जिसमें 17 वर्षीय बल्लेबाज ज्वेल एंड्रयू भी शामिल हैं, जिन्होंने श्रीलंका श्रृंखला के अंत में अपनी शुरुआत की थी। इंग्लैंड

2022 के बाद से अपने तीसरे सीमित ओवरों के दौर के लिए पहले ही कैरिबियन पहुंच चुका है। वनडे चरण के दौरान उनका अगुआई लिया



लिंविंगस्टोन करेंगे, जबकि जोस बटलर कॉलर की चोट के बाद अपना पुनर्वास जारी रखेंगे, जिसके कारण वे जुलाई से बाहर हैं। वेस्टइंडीज के मुख्य कोच डेन सैमी ने कहा, इंग्लैंड के

खिलाफ खेला हमेशा एक नई चुनौती प्रदान करता है और एक प्रतिद्वंद्विता को फिर से जगाता है, जिसका खिलाड़ी और कैरिबियन के लोग बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। हम हमेशा इंग्लैंड का सामना करते समय अपने खेल को बेहतर बनाने का तरीका ढूँढ लेते हैं। यह प्रतिद्वंद्विता दशकों पुरानी है, और पिछले साल घर पर उन्हें लंबे समय के बाद पहली बार वनडे सीरीज में हराते के बाद, हम फिर से एक मजबूत इंग्लैंड टीम की चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हैं। घर पर खेला हमेशा खास होता है, जहां स्थानीय समर्थन हर मैच में ऊर्जा और जुनून लाता है। हमारी निगाहें 2027 में आईसीसी पुरुष विश्व कप के लिए कालीफोर्निया करने पर टिकी हुई हैं, हमने मुझे संतुलित टीम का चयन किया है जो निस्संदेह दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीमों में से एक के साथ प्रतिस्पर्धा करेगी।

**पेरिस मास्टर्स 2024 से हटे शीर्ष रैंकिंग वाले जननिक सिनर**

**एजेंसी पेरिस।** शीर्ष वरीयता प्राप्त जननिक सिनर ने वायस का हवाला देते हुए पेरिस मास्टर्स से अपना नाम वापस ले लिया है। इतालवी खिलाड़ी सिनर ने आयोजकों द्वारा भेजे गए संदेश में कहा कि वह इस सप्ताह खेलने में सक्षम नहीं है। सिनर ने कहा, मैं यहाँ बहुत जल्दी तैयारी करने के लिए आया था, फिर मैं बीमार पड़ गया, मुझे इस समय एक वायस है, जो अगले दो-तीन दिनों में ठीक हो जाएगा, इसलिए शारीरिक रूप से मैं प्रतिस्पर्धा करने के

लिए तैयार नहीं हूँ। सात बार के चैंपियन नोवक जॉकोविच के बाद सिनर वर्ष के अंतिम मास्टर्स 1000 इवेंट से बाहर होने वाले दूसरे हार्ड-प्रोफाइल खिलाड़ी हैं। सिनर ने इस महीने की शुरुआत में शंघाई मास्टर्स के फाइनल में जॉकोविच को सीधे सेटों में शिकस्त दी थी, जिससे इतालवी खिलाड़ी ने सीजन का अपना सातवाँ खिताब जीता। सिनर एक सीजन में छह से अधिक खिताब जीतने वाले पहले खिलाड़ी बने, इससे पहले एंड्री पारे ने 2016 में नौ खिताब जीते थे।

**एशिया के वर्ष के सर्वश्रेष्ठ अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी बने सोन ह्युंग-मिन**

**एजेंसी नई दिल्ली।** टोटेनहैम और दक्षिण कोरिया के फरवर्ड सोन ह्युंग-मिन को सियोल में एशियाई फुटबॉल परिषद के वार्षिक पुरस्कार समारोह में चौथी बार एशिया का वर्ष का सर्वश्रेष्ठ अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी चुना गया। सोन, जो टोटेनहैम और दक्षिण कोरिया दोनों की कप्तानी करते हैं, ने 2015, 2017 और 2019 में पुरस्कार जीता और बायन 'म्यूनिख के हवतन किम मिन-जे से ट्रॉफी ली। 32 वर्षीय खिलाड़ी प्रीमियर लीग में सबसे सफल एशियाई खिलाड़ी हैं, जिन्होंने नौ साल पहले टोटेनहैम में आने के बाद से 123 गोल किए हैं और 64 गोल में सहायता की है। उन्होंने 2021-22 सीजन के लिए गोल्डन बूट भी जीता, ऐसा करने वाले वे एशिया के पहले खिलाड़ी भी बने। हालांकि, सोन ने अभी तक दक्षिण कोरिया या स्पर्स की सीनियर टीम के साथ कोई बड़ा खिताब नहीं जीता है। वह ताएयुक् वारियर्स के साथ एएफसी

एशियन कप 2015 के फाइनल में पहुंचे और टोटेनहैम के साथ यूईएफए

चैंपियंस लीग (2018-19) और लीग कप (2020-21) के फाइनल में पहुंचे, लेकिन इन सभी में हार गए। हालांकि, 2018 एशियाई खेलों में अंडर-23 दक्षिण कोरियाई टीम के साथ स्वर्ण पदक जीतना उनकी सफलता का मुख्य कारण रहा, जिसमें वे भी शामिल थे। सोन ने अभी तक दक्षिण कोरिया या स्पर्स की सीनियर टीम के साथ कोई बड़ा खिताब नहीं जीता है। वह ताएयुक् वारियर्स के साथ एएफसी

हैं, महिला अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार की पहली विजेता बनीं। कारपेंटर ने तीन



ओलंपिक खेलों और फीफा महिला विश्व कप 2023 में ऑस्ट्रेलिया का प्रतिनिधित्व किया है, जिसमें टीम ने पहली बार सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई किया था। 2020 में ल्यों में स्थानांतरित होने के बाद, फुल-बैक ने फ्रांसीसी पक्ष के साथ छह प्रमुख ट्रॉफियां जीती हैं, जिसमें दो शीर्ष डिवीजन खिताब और कई यूईएफए महिला चैंपियंस लीग ट्रॉफियां शामिल हैं।

**गली कूचों से लेकर खो खो विश्व कप तक, सपने जैसा रहा है प्रतीक वाईकर का सफर**

**एजेंसी नई दिल्ली।** नई दिल्ली में 13 से 19 जनवरी 2025 को आयोजित होने वाले खो-खो विश्व कप के उद्घाटन संस्करण के साथ दुनिया भर के शीर्ष खिलाड़ी एक नई चुनौती के लिए कम्म कर रहे हैं। मेजबान भारत अपने कुछ बेहतरीन खिलाड़ियों पर भरोसा करेगा ताकि वह सुनिश्चित हो सके कि ट्रॉफी अपने पहले संस्करण में ही घर में रहे। ऐसे ही एक खिलाड़ी हैं, एकलव्य पुरस्कार विजेता प्रतीक वाईकर, जिन्होंने 2016 में भारत के लिए डेब्यू किया था और तब से लेकर आज तक टीम के लिए लगातार अच्छे प्रदर्शन करते आ रहे हैं। प्रतीक ने आठ साल की कम उम्र में खो-खो खेलना शुरू कर दिया था।

इसका श्रेय उनके परिवार की खेलों में प्रवृत्ति को जाता है। हालांकि उन्होंने भारत के एक अन्य खेल लंगड़ी से शुरुआत की थी लेकिन उस समय महाराष्ट्र में जन्मे इस खिलाड़ी को इस बात का अंदाजा नहीं था कि उनका भविष्य कैसा होगा और वे देश के सर्वश्रेष्ठ खो-खो खिलाड़ियों में से एक बनेंगे। अपने शुरुआती सफर के बारे में बात करते हुए प्रतीक ने अपने पड़ोसी के साथ हुई एक घटना को याद किया, जिसने उन्हें खो-खो खिलाड़ी बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा, मैं जिस इलाके में रहता था, वहाँ अच्छे खो-खो खिलाड़ी थे। घर के सामने एक बेहतरीन खिलाड़ी रहता था। जब मैं बहुत छोटा था, तो उसे एक प्रतिष्ठित महाराष्ट्रीयन पुरस्कार -

शिवाजी पुरस्कार - से सम्मानित किया गया था और मैंने देखा कि खेल और ताशा बजाते हुए उसका स्वागत किया गया था। इन दुस्तरों ने मुझे वास्तव में प्रेरित किया और मैंने खो-खो खेलना शुरू कर दिया। हालांकि, इस खेल सफर में उन्हें अपनी चुनौतियों का सामना करना पड़ा क्योंकि उस समय उनका परिवार आर्थिक रूप से संघर्ष कर रहा था, जिससे उनके लिए अन्य खेलों या करियर को तलाशने के अवसर सीमित हो गए थे। अंडर-18 श्रेणी में उनके शानदार प्रदर्शन की बदौलत, उन्हें उन्हें ही टैलेंट कोटा के तहत नौकरी की पेशकश की गई, जिससे उनके परिवार की परिस्थितियों में सुधार हुआ। प्रतीक ने बताया, अंडर-18 स्तर पर प्रतिस्पर्धा

करने के बाद, मुझे महाराष्ट्र इलेक्ट्रिसिटी कोर्ट में नौकरी की पेशकश की गई और उन्होंने मुझे अपनी टीम में शामिल करने की इच्छा जताई। यह सीधी भर्ती थी। मेरा परिवार बहुत खुश था कि 19 साल की उम्र में मुझे मेरी पहली नौकरी मिल गई। मुझे भीरु ने भी कुछ साल पहले सेंट्रल रेलवे द्वारा खो-खो खेलने के लिए चुने जाने के बाद काम करना शुरू किया था। वह भी एक बेहतरीन खिलाड़ी था और मेरी प्रेरणा था। मैं हमेशा से उसके जैसा खेलना चाहता था। उसकी सज्जता बहुत तेज थी और उसे अंडर-18 के बाद टैलेंट कोटा के तहत नौकरी भी मिल गई थी। इसलिए हमारी आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा।

**जिम्बाब्वे बॉक्सिंग डे और नए साल के टेस्ट के लिए करेगा अफगानिस्तान की मेजबानी**

**एजेंसी हारो।** जिम्बाब्वे और अफगानिस्तान बुलावायो में दो टेस्ट मैच खेलेंगे - पहला बॉक्सिंग डे (26 दिसंबर) से शुरू होगा और दूसरा नए साल की शुरुआत में (2 जनवरी), दोनों देशों के बोर्ड ने एक संयुक्त बयान में घोषणा की। यह 28 वर्षों में पहली बार होगा जब जिम्बाब्वे बॉक्सिंग डे टेस्ट की मेजबानी करेगा। अफगानिस्तान का दौरा हारो में तीन टी20आई और इतने ही वनडे मैचों के साथ शुरू होगा, जिसके बाद अफगानी टीम दो टेस्ट मैचों के लिए बुलावायो जाएगी। जिम्बाब्वे क्रिकेट के अध्यक्ष तवेवा मुकुह्लानी ने एक बयान में कहा, बॉक्सिंग डे और नए साल के टेस्ट मैच प्रतिष्ठित क्रिकेट मैच हैं जिन्हें हम इस त्यौहारी सीजन में अपने कैलेंडर में जोड़कर खुश हैं और हम खेल के लंबे इतिहास की सबसे बेहतरीन परंपराओं में से एक को शानदार तरीके से मनाने के लिए उत्सुक हैं।

बुलावायो में होने वाली टेस्ट सीरीज से पहले, हम पूरे दौरे को पूरा करने के लिए हारो में कुछ टी20आई और



वनडे मैचों के साथ शुरुआत करेंगे, जो सभी प्रारूपों में अपने खेल को बेहतर बनाने की हमारी प्रतिबद्धता का स्पष्ट प्रदर्शन है। सीरीज की घोषणा पर अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड के प्रमुख मोवाह्दस अशरफ ने कहा, जिम्बाब्वे का सभी प्रारूपों का दौरा हमारे लिए एक महत्वपूर्ण घटना है। जिम्बाब्वे के साथ हमारा समृद्ध इतिहास रहा है, और वहाँ खेलना

आत्मविश्वास के साथ कर सकता है। **दौरे का कार्यक्रम:** 9 दिसंबर - पहला टी20 मैच, हारो 11 दिसंबर - दूसरा टी20 मैच, हारो 12 दिसंबर - तीसरा टी20 मैच, हारो 15 दिसंबर - पहला वनडे, हारो 17 दिसंबर - दूसरा वनडे, हारो 19 दिसंबर - तीसरा वनडे, हारो 26-30 दिसंबर - पहला टेस्ट, बुलावायो 2-6 जनवरी - दूसरा टेस्ट, बुलावायो

**आईसीसी वनडे गेंदबाजों की रैंकिंग में करियर के सर्वश्रेष्ठ दूसरे स्थान पर पहुंची दीप्ति शर्मा**

**एजेंसी नई दिल्ली।** भारतीय ऑफ स्पिनर दीप्ति शर्मा गेंदबाजों की नवीनतम आईसीसी महिला वनडे रैंकिंग में दो पायदान ऊपर चढ़कर करियर के सर्वश्रेष्ठ दूसरे स्थान पर पहुंच गई हैं। टी दीप्ति घरेलू मैदान पर न्यूजीलैंड के खिलाफ अपनी टीम की चली रणभेद गेंद श्रृंखला के शुरुआती दो मैचों में भारत की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में से एक रही हैं। दीप्ति ने व्हाइट फर्नर्स के खिलाफ दो मैचों में 3.42 की इकॉनमी रेट से तीन विकेट लिए हैं। इससे दीप्ति को दो स्थान का फायदा हुआ है और वह तालिका में दूसरे स्थान पर पहुंच गई है, और भारत के वरिष्ठ स्पिनर ने

इंग्लैंड की ट्वीकर और सोफी एक्लेस्टोन को पीछे छोड़ दिया है। इसके अलावा न्यूजीलैंड की तिकड्डी ली ताहुरु (तीन पायदान ऊपर 12वें स्थान पर), एमिली केर (एक स्थान ऊपर 13वें स्थान पर) और सोफी डिविडन (नौ पायदान ऊपर 30वें स्थान पर) रैंकिंग में आगे बढ़ी हैं। डिविडन (तीन पायदान ऊपर आठवें स्थान पर) और केर (एक स्थान ऊपर 11वें स्थान पर) ने भी वनडे बल्लेबाजों की नवीनतम सूची में कुछ बहुत हासिल की है, रमवतन सुजी वेदरस (दो पायदान ऊपर 15वें स्थान पर) और मैडी ग्रीन (सात पायदान ऊपर 18वें स्थान पर) ने भारत के खिलाफ कुछ अच्छे स्कोर के बाद बहुत हासिल की है।

**सात साल बाद हांगकांग सिक्ससेस की वापसी: पहले दिन भारत-पाकिस्तान होंगे आमने-सामने**

**एजेंसी नई दिल्ली।** बहुप्रतीक्षित और खेल का सबसे तेज रूप, हांगकांग क्रिकेट सिक्ससेस सभी का मनोरंजन करने के लिए वापस आ गया है। टूर्नामेंट का आयोजन 1 से 3 नवंबर तक टिन क्रांग रोड क्रिकेट ग्राउंड में किया जाएगा, जिसमें 12 टीमों शामिल होंगी, जो सिक्स-ए-साइड मैचों में प्रतिस्पर्धा करेंगी। 12 टीमों को तीन-



एक विदेशी, प्रत्येक को 20,000 अमेरिकी डॉलर (श्रेणी 'बी') पर चुना जाएगा। राउंड 5 से 7 में, फ्रेंचाइजी दो श्रीलंकाई खिलाड़ियों और एक विदेशी खिलाड़ी को चुन सकती हैं, प्रत्येक की कीमत 10,000 अमेरिकी डॉलर (श्रेणी 'सी') तय की जाएगी। राउंड 8 में 2,500 अमेरिकी डॉलर के लिए

एक श्रीलंकाई उभरते खिलाड़ी का चयन करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा, जबकि राउंड 9 में जिम्बाब्वे या वेस्ट इंडीज से एक उभरते खिलाड़ी का चयन किया जाएगा (2,500 अमेरिकी डॉलर)। श्रीलंका क्रिकेट के अध्यक्ष शमी सिल्वे ने कहा, मुझे विश्वास है कि लंका टी10 सुपर लीग का पहला ड्राफ्ट एक रोमांचक और मनोरंजक टूर्नामेंट के लिए मंच तैयार करने जा रहा है, जो श्रीलंकाई क्रिकेट कैलेंडर में रंग जोड़ेगा और हमारे खिलाड़ियों और प्रशंसकों के लिए यह एक नया अनुभव लाएगा। आईपीजी के प्रबंध निदेशक, सीईओ और संस्थापक, अनिल मोहन ने कहा, मुझे यकीन है कि खिलाड़ियों का ड्राफ्ट सफल होगा और खेले जाने वाले क्रिकेट के प्रकार के अनुरूप खिलाड़ियों के एक ठोस समूह का चयन करने के लिए मंच तैयार करेगा।

**स्मृति मंधाना ने न्यूजीलैंड को 6 विकेट से हराया, स्मृति मंधाना ने लगाया शतक**

**एजेंसी अहमदाबाद।** सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना (100) के बेहतरीन शतक और कप्तान हरमनप्रीत कौर (नाबाद 59) के अर्धशतक की बदौलत भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने तीसरे और निर्णायक एकदिवसीय मैच में न्यूजीलैंड को 6 विकेट से हराकर तीन मैचों का एकदिवसीय श्रृंखला 2-1 से अपने नाम कर ली। भारत ने पहला एकदिवसी 59 रन से जीता था, जबकि न्यूजीलैंड ने वापसी करते हुए दूसरा एकदिवसी 76 रन से जीता था। इस मैच में न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 232 रन बनाए और भारत के सामने 233 रनों का लक्ष्य रखा। 233 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत खराब रही और शोफाली वर्मा 16 के कुल स्कोर पर केवल 12 रन बनाकर हराह रोव का शिकार बनीं। यहां से यास्तिका भाटिया और

स्मृति मंधाना ने 76 रनों की साझेदारी कर भारत का स्कोर 92



अपना शतक भी पूरा किया, हालांकि शतक पूरा करने के बाद ही हराह रोव

जोन्स ने जेमिमा को एलबीव्यू कर भारत को तीसरा झटका दिया। जेमिमा ने 18 गेंदों पर 4 चौकों की बदौलत 22 रन बनाई। इसके बाद 45वें ओवर की दूसरी गेंद पर हरमनप्रीत ने चौका लगाकर भारत को 6 विकेट से जीत दिला दी। हरमन 63 गेंदों में 6 चौकों की बदौलत 59 रन बनाकर नाबाद रहीं। उनके साथ तेजल हसाबनीस बिना खाता खोले नाबाद लौटीं। इससे पहले न्यूजीलैंड की टीम टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 49.5 ओवर में 232 रनों पर सिमट गईं। न्यूजीलैंड के लिए ब्रुक हॉलीडे ने शानदार अर्धशतकीय पारी खेली हुए 86 रन बनाए। हॉलीडे के अलावा जॉर्जिया प्लेम्बर ने 39, इसबेला गाजे ने 25 और ली ताहुरु ने नाबाद 24 रन बनाए। भारत को और से दोही शर्मा ने 3, प्रिया मिश्रा ने 2, रेणुका सिंह और साहमा ठाकुर ने 1-1 विकेट लिया।

**सात साल बाद हांगकांग सिक्ससेस की वापसी: पहले दिन भारत-पाकिस्तान होंगे आमने-सामने**

**एजेंसी नई दिल्ली।** बहुप्रतीक्षित और खेल का सबसे तेज रूप, हांगकांग क्रिकेट सिक्ससेस सभी का मनोरंजन करने के लिए वापस आ गया है। टूर्नामेंट का आयोजन 1 से 3 नवंबर तक टिन क्रांग रोड क्रिकेट ग्राउंड में किया जाएगा, जिसमें 12 टीमों शामिल होंगी, जो सिक्स-ए-साइड मैचों में प्रतिस्पर्धा करेंगी। 12 टीमों को तीन-

तीन के चार पूल में विभाजित किया गया है और वे राउंड-रॉबिन प्रारूप में प्रतिस्पर्धा करेंगी। रॉबिन उद्यम के नेतृत्व में भारत पूल सी का हिस्सा है और यूईए के साथ उसका चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान भी है। पूल ए में मेजबान हांगकांग का मुकाबला दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड से होगा जबकि पूल बी में ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और नेपाल शामिल हैं।

पूल डी में श्रीलंका, बांग्लादेश और ओमान के बीच मुकाबला होगा। टूर्नामेंट की शुरुआत दक्षिण अफ्रीका और हांगकांग के बीच मैच के साथ होगा, जबकि पहले दिन भारत और पाकिस्तान के बीच भी हाईबोल्टेज पिंडूट हांगकांग के बीच होगा। प्रत्येक पूल से शीर्ष दो टीमों क्वार्टर फाइनल खेलेंगी और क्वार्टर फाइनल राउंड के विजेता आगे सेमीफाइनल में पहुंचेंगे। जो

टीमों क्वार्टर में हारेगी वे प्लेट सेमीफाइनल खेलेंगी। प्रत्येक पूल में सबसे निचले स्थान पर रहने वाली टीम बाउल प्रतियोगिता खेलेंगी। प्रतियोगिता के तीन दिनों में कुल 29 मैच होंगे। पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की स्थाना की 75वें वर्षगांठ मनाने के लिए टूर्नामेंट के अंतिम दिन एक महिला प्रदर्शनी मैच भी निर्धारित किया गया है।

**मैनचेस्टर यूनाइटेड के टीम प्रबंधक एरिक टेन हैग को हटाया**

**एजेंसी लंदन।** प्रीमियर लीग की दिग्गज टीम मैनचेस्टर यूनाइटेड ने सीजन की निराशाजनक शुरुआत के बाद टीम प्रबंधक एरिक टेन हैग को पद से हटा दिया है। मई 2022 में क्लब में शामिल हुए टेन हैग रिव्वावर को वेस्ट हैम यूनाइटेड से 2-1 से हारने के बाद मैनचेस्टर यूनाइटेड क्लब छोड़ रहे हैं। यूनाइटेड लीग तालिका में 14वें स्थान पर है। यह 35 वर्षों में मैनचेस्टर यूनाइटेड का सबसे खराब प्रदर्शन है। उसने पहले नौ मैचों में से केवल तीन

**मैनचेस्टर यूनाइटेड के टीम प्रबंधक एरिक टेन हैग को हटाया**

में जीते हैं। टेन हैग को हटाने के कार्यकाल के दौरान 2022-23 में एएफएल कप जीता और 2023-24 सीजन में एएफएल कप खिताब अपने नाम किया। हालांकि, प्रीमियर लीग और यूरोपीय प्रतियोगिताओं में निराशाजनक प्रदर्शन के कारण डचमैन को आलोचनाओं का सामना करना पड़ा, खास तौर पर उन हाई-प्रोफाइल साईनिंग के कारण जिसमें वह अपना अंश छोड़ने में विफल रहे। पूर्व यूनाइटेड स्ट्राइकर और टेन हैग के सहायक कप्तान वैन निस्टरटेरियो को अंतरिम प्रबंधक नियुक्त किया गया है।

मैनचेस्टर यूनाइटेड के टीम प्रबंधक एरिक टेन हैग को हटाया



महालक्ष्मी सम्पूर्ण जगत का वैभव और ऐश्वर्य प्रदान करने वाली परम शक्ति हैं। इन्हीं की कृपा से जीव-जन्तु समृद्धि को प्राप्त करते हैं और अन्न, जल ग्रहण कर अपना जीवनयापन करते हैं। ऐसे ही महालक्ष्मी के अनेक रूप पुराण, तन्त्र इत्यादि ग्रंथों में प्रचलित हैं। प्रस्तुत लेख में महालक्ष्मी के ऐसे ही रूपों को स्पष्ट किया गया है।



## अद्भुत स्वरूप हैं महालक्ष्मी के

- 1. लक्ष्मी :** लक्ष्मी नाम से प्रसिद्ध ऐश्वर्य एवं कल्याण की कृति करने वाली यह देवी सर्वविदित है। इनका लक्ष्मी नाम से वर्णन पुराण एवं कई तन्त्र ग्रंथों में हुआ है। लक्ष्मीतंत्र नाम के तंत्र ग्रंथ में इनका मूल स्वरूप लक्ष्मी नाम से प्रकट किया गया है।
- 2. महिषमर्दिनी :** माँ लक्ष्मी का महिषमर्दिनी रूप मार्कण्डेय पुराण में उल्लिखित है। मार्कण्डेय पुराण के अध्याय दुर्गासप्तशती के नाम से भी जाने जाते हैं। दुर्गासप्तशती में मध्यचरित की देवी महालक्ष्मी हैं, जिन्होंने महिष नामक दैत्य का अन्त किया था और समस्त देवताओं तथा सामान्यजन को पीड़ा से छुटकारा दिलाया था। इनका प्रकटय त्रिशक्ति और सभी देवताओं के शरीर से हुआ था।
- 3. कमला :** कमला दशमहाविद्याओं में से अंतिम महाविद्या है। कमल पर आसिन होने के कारण इन्हें कमला कहा जाता है। यह महालक्ष्मी का ही एक रूप है। इन्हें विभिन्न प्रकार के सुख, द्रव्य, समृद्धि प्रदान करने वाली देवी के रूप में माना जाता है।
- 4. भृगुतनया :** विष्णु पुराण में माँ लक्ष्मी को भृगु ऋषि और ख्याति की पुत्री बताया गया है। इसलिए माँ लक्ष्मी को भृगुतनया कहा जाता है।
- 5. समुद्रतनया :** दुर्वास ऋषि के शाप से माँ लक्ष्मी समुद्र में विलीन हो गई थीं। पुनः इनका प्रकटय समुद्र

- से होने के कारण इन्हें समुद्रतनया कहा जाता है।
- 6. रमा :** माँ लक्ष्मी कामदेव की माँ हैं। उनकी सृष्टि के नियमों का पालन करवाने में कामदेव का प्रमुख योगदान था। वे अपनी माँ लक्ष्मी जी के आदेश के अनुसार दण्ड भी दिया करते थे। माँ लक्ष्मी को पुत्र कामदेव से अत्यधिक स्नेह था। माँ लक्ष्मी का यह रूप रमा नाम से जाना जाता है।
- 7. श्री :** श्री नाम माँ लक्ष्मी का भी है और ललिता बालत्रिपुर सुन्दरी का भी। एक बार लक्ष्मी जी ने कुल की अधिष्ठात्री देवी ललिता की कई वर्षों तक उपासना की थी। इस उपासना से प्रसन्न होकर ललिता ने अपना घर और नाम अर्थात् श्री और श्रीचंद्र दोनों माँ लक्ष्मी को प्रदान कर दिए तभी से माँ लक्ष्मी श्री के नाम से प्रसिद्ध हुईं।
- 8. कीर्ति :** लक्ष्मीतंत्र में माँ लक्ष्मी इन्द्र से अपने प्रमुख चार रूपों का वर्णन करते हुए कहती हैं कि चार रूपों में विभक्त हूँ। इनमें से कीर्ति नाम का द्वितीय रूप है, जो यश प्रदान करने वाला है।
- 9. जया :** लक्ष्मीतंत्र में उल्लिखित कीर्ति रूप के समान ही जया रूप भी है। मा लक्ष्मी जया रूप में विजय प्रदान करती हैं।
- 10. माया :** कीर्ति एवं जया के समान ही चतुर्थ रूप माया है। माया रूप में माँ लक्ष्मी सभी सुखों को प्रदान

- करती हैं।
- 11. वैष्णवी :** माँ लक्ष्मी भगवान विष्णु की अधीनि हैं। भगवान विष्णु उन्हीं की शक्ति से सभी लीलाओं को रचते हैं। समुद्र से प्रकट होने पर माँ लक्ष्मी ने उनके वक्षस्थल में अपना निवास बनाया था। भगवान विष्णु को धारण करने के कारण ही वे वैष्णवी कहलाईं।
- 12. सीता :** त्रेतायुग में जब भगवान विष्णु राम के रूप में प्रकट हुए, तो उनकी अधीनि के रूप में लक्ष्मी ने सीता के रूप में जन्म लिया था।
- 13. राधा एवं रुक्मिणी :** द्वापरयुग के अंत में जब भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण के रूप में जन्म लिया था, तब माँ लक्ष्मी ने उनकी शक्ति के रूप में राधा के रूप में जन्म लिया। रुक्मिणी को भी माँ लक्ष्मी का रूप और श्रीकृष्ण की शक्ति माना जाता है।
- 14. आदिलक्ष्मी :** आदिलक्ष्मी अष्टलक्ष्मी में से एक है, जिनके एक हाथ में कमल है तो दूसरे हाथ में सफेद झंडा है और अन्य दो हाथों में अभयमुद्रा एवं वरमुद्रा है।
- 15. ऐश्वर्य लक्ष्मी :** ऐश्वर्य लक्ष्मी अष्ट लक्ष्मी मूर्तियों में द्वितीय लक्ष्मी हैं। ये भी चार भुजाओं वाली हैं और सफेद वस्त्र धारण करती हैं।
- 16. धन लक्ष्मी :** धनलक्ष्मी छह हाथों वाली है और लाल वस्त्र धारण करती हैं। इनके हाथ में चक्र, दूसरे में

- शंख, तीसरे में अमृत कलश, चौथे में धनुष-बाण, पांचवें में कमल तथा छठा हाथ अभयमुद्रा रूप में है। ये निरंतर मुद्राओं की वर्णा करती हैं।
- 17. धान्यलक्ष्मी :** धान्यलक्ष्मी आठ भुजाओं वाली है। हरे वस्त्र धारण करती हैं। इनके हाथों में क्रमशः कमल, गदा, फसल, गन्ना, केला, अभय एवं वरमुद्रा है।
- 18. गज लक्ष्मी :** गजलक्ष्मी अष्टलक्ष्मी में से एक है। इनके चार भुजाएं हैं और ये लाल वस्त्र धारण करती हैं। इनके पीछे दो हाथों होते हैं, जो जल कलशों से इन पर वर्षा कर रहे हैं।
- 19. सन्तान लक्ष्मी :** सन्तान लक्ष्मी छह हाथों वाली हैं। इनके हाथ में क्रमशः कलश, तलवार, ढाल, वर मुद्रा और एक भुजा में बच्चा है। बच्चे के हाथ में एक कमल है। इनकी उपासना श्रेष्ठ सन्तति प्रदान करने वाली है।
- 20. वीर लक्ष्मी :** वीर लक्ष्मी आठ भुजाओं वाली हैं और लाल वस्त्र धारण करती हैं। इनके हाथों में क्रमशः शंख, चक्र, धनु-बाण त्रिशूल, पुस्तक, अभयमुद्रा और वरमुद्रा है।
- 21. विजयलक्ष्मी :** विजयलक्ष्मी अष्ट लक्ष्मीयों में से एक है। ये आठ भुजाओं वाली हैं, जो लाल वस्त्रों को धारण करती हैं। इनके हाथों में चक्र, शंख, तलवार, ढाल, कमल, पाश और अभयमुद्रा है।

## श्री महालक्ष्मी का पूजन क्यों?

लक्ष्मी जी के पूजन के साथ अन्य देवी-देवताओं का भी पूजन क्यों किया जाता है, यह प्रश्न एक बार कुछ महर्षियों और मुनियों ने सन्त कुमार से पूछा तो सन्त कुमार ने बताया कि लक्ष्मी जी जब समस्त देवी-देवताओं के साथ राजा बलि के यहां बंधक थीं, तब भगवान विष्णु ने उन्हें सभी देवताओं के साथ दीपावली के दिन ही बलि की कैद से मुक्त कराया था और बलि की कैद से मुक्ति पाकर लक्ष्मी तथा सभी देवता जाकर क्षीरसागर में सो गए।

श्री महालक्ष्मी के साथ अन्य देवी-देवताओं के भी पूजन का यही उद्देश्य है कि क्षीरसागर को छोड़कर हमारे घर समस्त देवी-देवताओं के साथ पधारें और लक्ष्मी के साथ-साथ अन्य देवी-देवताओं की कृपा दृष्टि भी हम पर सदैव बनी रहे।

## ऐसे करें लक्ष्मी पूजन

दीपावली के दिन जहां व्यापारी वर्ग अपनी दुकान या प्रतिष्ठान पर दिन में लक्ष्मी का पूजन करता है, वहीं दूसरी ओर गृहस्थ सांय प्रदोष काल में महालक्ष्मी का आह्वान करते हैं। गोधूलि लगन में पूजा आरंभ करके महानिशीथ काल तक अपने-अपने अस्तित्व के अनुसार महालक्ष्मी के पूजन को जारी रखा जाता है। इसका अभिप्रायः यह है कि जहां गृहस्थ और वाणिज्य वर्ग के लोग धन की देवी लक्ष्मी से समृद्धि और वित्तकोष की कामना करते हैं, वहीं साधु-संत और तंत्रिक कुछ विशेष सिद्धियां अर्जित करने के लिए रात्रिकाल में अपने तंत्रिक षट्कर्म करते हैं।

## पूजन की सामग्री

महालक्ष्मी पूजन में केशर, रोली, चावल, पान, सुपारी, फूल, दूध, खील, बताशे, सिंदूर, सूखे, मेवे, मिठई, दही, गंगाजल, धूप, अगरबत्ती, दीपक, रूई तथा कलावा नारियल और तबि का कलश चाहिए।

## सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक स्वास्तिक



सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करने के तरीकों में स्वास्तिक का महत्वपूर्ण स्थान है। इसीलिए स्वास्तिक ने मंगल चिन्हों में प्रतिष्ठा प्राप्त की है। मंगल प्रसंगों के अवसर पर पूजा स्थान तथा दरवाजे की चौखट और प्रमुख दरवाजे के आसपास स्वास्तिक चिन्ह बनाने की परंपरा है। वे स्वास्तिक कर्तई परिमाण नहीं देते, जिनका संबंध प्लास्टिक, लोहा, स्टील या लकड़ी से हो। सोना, चांदी, तांबा अथवा पंचधातु से बने स्वास्तिक प्राण प्रतिष्ठित करवाकर चौखट पर लगवाने से सुखद परिणाम देते हैं, जबकि रोली-हल्दी-सिन्दूर से बनाए गए स्वास्तिक आत्मसंतुष्टि ही देते हैं।

अशांति दूर करने तथा पारिवारिक प्रगति के लिए स्वास्तिक यंत्र रवि-पुष्य, गुरु-पुष्य तथैव दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी श्रीयंत्र के साथ लगाना लाभदायक है। अकेला स्वास्तिक यंत्र ही एक लाख चौबीस धनात्मक ऊर्जा उत्पन्न करने में सक्षम है। वास्तुदोष के निवारण में भी चीनी कण्डूआ 700 चौबीस भर देने की क्षमता रखता है, जबकि गणेश की प्रतिमा और उसका वैकल्पिक स्वास्तिक आकार एप्लाख चौबीस की समानता रहने से प्रत्येक घर में स्थापना वास्तु के कई दोषों का निवारण करने की शक्ति प्रदान करता है।



गाय के दूध, गाय के दूध से बने हृण्णदही और घी, गोनीत, गोबल जिसे पंचगव्य कहा जाता है, को समानुपात से गंगाजल के साथ मिलाकर आम अथवा अशोक के पत्ते से घर तथा व्यावसायिक केंद्रों पर प्रतिदिन छिड़काव करने से ऋणात्मक ऊर्जा का संहार होता है। तुलसी के पौधे के समीप शुद्ध घी का दीपक प्रतिदिन लगाने से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।

